❀ श्रीश्रीमहाप्रभुगौरांगदेवो जयति ❀

卐 अष्टयाम 卐

श्रीश्रीबृन्दावनचन्द्रदासजिविरचित

सम्वत् २०१७
शीर्ष कृष्णा चतुर्दशी
न्योछावर—१।)

प्रकाशक—
कृष्णदास बाबाजी
(कुसुमसरोवर वाले)
मथुरा।

समर्पणपत्रम्

महामहिम, प्रेमविगलितहृदय, संकीर्तनप्रचारक,
गौरगतप्राण, गुरुदेव बाबाजी महाराज
(१०८ श्रीश्रीरामदासबाबाजी) के
नित्यधामगमनकी शुभतिथि में यह
व्रजभाषा के अष्टयाम ग्रन्थ
प्रस्तुत होकर उन्हीं के
पुनीतस्मरण में
समर्पित हैं।

—कृष्णदास

Shri KE... MATH
Mathura (U.P.)

भूमिका

महाप्रभु श्रीचैतन्यदेव प्रवर्तित गौड़ीय-सम्प्रदाय के अन्तर्गत अनेक वैष्णवों ने समय समय पर अनेक सुन्दर ग्रन्थों का प्रणयन किया है। विद्वानों की अब तक धारणा थी कि इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित ब्रजभाषा-काव्य निधि अत्यल्प या नगण्य है। क्योंकि उनके मत से इस सम्प्रदाय का अधिकांश साहित्य संस्कृत या बंगला भाषाओं तक ही सीमित रहा आया, उन्होंने ब्रजभाषा साहित्य को प्रभावित भी नहीं किया। परिणामत: हिन्दी साहित्य के मूर्द्धन्य लेखकों से भक्तिकाल का विवरण-विवेचन प्रस्तुत करते समय उक्त सम्प्रदाय की उपेक्षा ही होती रही है। किन्तु इधर चैतन्य सम्प्रदाय के हिन्दी कवियों का अनुसंधान करते समय मुझे शताधिक कवियों की रचनांए मिली हैं। कुसुमसरोवर निवासी विरक्त बंगाली महात्मा बाबा कृष्णदासजी के अथक परिश्रम से अनेक भाषा-काव्य प्रकाश में भी आए हैं। प्रस्तुत ग्रंथ उनको स्वर्गीय गोस्वामी राधाचरणजी के पुस्तकालय से गो. अद्वैतचरण (बच्चाजी) के द्वारा उपलब्ध हुआ था। नीचे संक्षेप में इस ग्रंथ के रचियता और ग्रंथ का परिचय प्रस्तुत किया जाता है।

इस ग्रंथ के रचियता श्री वृन्दावनचंद्रदास है। ये श्रीराधादामोदर के शिष्य एवं गोविंदभाष्यकार श्रीबलदेव विद्याभूषणजी के गुरु भ्राता थे। ग्रंथ में आए अनेक दोहों सवैयों और कवित्तों में 'वृन्दावनचंद्र' की छाप भी मिलती है। संस्कृत में ब्रह्माण्ड पुराणोक्त 'श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनाम' तथा गोतमीय तंत्र के "गोपालस्तवराज" के ऊपर श्रीवृन्दावनदासजी के नाम भाष्य मिलता है। सम्प्रति इन दोनों भाष्यों को बाबा कृष्णदासजी ने 'ग्रंथरत्नत्रयम्' नाम से प्रकाशित कराया है। मेरा अनुमान है कि उक्त संस्कृत ग्रंथ-भाष्यों के रचियता श्री वृन्दावनदास तथा प्रस्तुत 'अष्टयाम' (ब्रजभाषा-काव्य) के रचियता श्री वृन्दावनचंद एक ही व्यक्ति हैं। संस्कृत निष्ठ भाषा शैली-सुष्ठु और प्राञ्जल शब्दों की नियोजना— से यह बात और पुष्ट होती है। गोपालस्तवराज का एक ब्रजभाषानुवाद बाबाजी ने पहले प्रकाशित भी कराया था, जो इन्ही वृन्दावनदासजी कृत है।

गौडीय वैष्णव समाज राधाकृष्ण की दैनंदिनो लीला का मानसिक स्मरण

करते हैं। इस स्मरण का आधार पद्मपुराण पाताल खण्ड के वृन्दावन माहात्म्य का एक अध्याय है। चैतन्य-सम्प्रदाय के प्रकाण्ड पण्डित, रागमार्ग के 'यूप' श्री रूप गोस्वामि पाद के "स्मरण मंगल" नामक स्तोत्र ग्रंथ के आधार पर 'चैतन्यचरितामृत' के प्रणेता कविराज कृष्णदास गोस्वामी ने 'गोविंदलीलामृत', आनन्दवृन्दावनचम्पूकार कविकर्णपूर ने 'कृष्णाह्निककौमुदी' और श्री विश्वनाथ चक्रवर्तीजी ने 'कृष्णभावनामृत' का सृजन किया है। इस 'अष्टयाम' का प्रधान आधार श्रीगोविंदलीलामृत ही है—

सिरी रूप रसकूप राग मार्ग के है यूप,
सुमरन मंगल नाम सौं रचि ग्रंथ हैं।
जुगल विलास केलि नित्य महा रस बेली,
रसिक जनन सुमरन महा पंथ है।
कृष्णदास करुना वरुनालय रस वस भये,
कविराज ख्याति अरु महा रसवंत हैं।
श्री गोविंद लीलामृत मधि रस के वारिधि,
लीला "अष्टजाम" वर्नी जानें भाग्यवंत हैं॥

ग्रंथ के नाम तथा उसकी विषय वस्तु का उल्लेख उक्त छंद में किया है। राधामोहन की घड़ी घड़ी रसभीनी लीला -नित्य महारसकेलि- का रसिक समाज के आस्वादन के निमित्त ही इस ग्रंथ में आख्यान किया गया है। इसमें दोहा, छप्पय, सवैया और कवित्त आदि छंदों का प्रयोग किया गया है। इन छन्दों की कुल संख्या ६२० है।

ग्रंथ के आदि में गौरांगमहाप्रभु का इस प्रकार मंगल स्तवन किया गया है—

गौर चंद्र नव द्वीप चंद्र लोक चंद्र अरु,
राधा भाव चंद्र धारि कृष्ण चंद्र राजे हैं।
प्रेम सुधा वर्षण करिबे को चंद्र महा,
पारषद तारा माझ दिव्य चंद्र गाजे हैं।
जग तम नासिवे को अदभुत चंद सदा,
सुरधुनी तट भूमि नृत्यन में भ्राजे हैं।

कोटि कोटि अजामिल तारिबे को व्रत जाको,
धारि के सुन्यासि वेश श्री क्षेत्र विराजे हैं।।

आपने गुरू सम्प्रदाय का स्मरण प्रथम प्रकाश में किया है। संतों को कवि ने श्रद्धा संयुक्त प्रणाम निवेदन किया है। चैतन्य सम्प्रदायानुयायी मनोहरदास (मनहरण) जी के प्रियशिष्य, भक्तिरसबोधिनी (भक्तमाल टिप्पणी) के प्रणेता श्री प्रियादास जी के बारे में कवि का निम्नलिखित कवित्त भाषा और भाव दोनों ही दृष्टि से अत्यन्त सरस है–

घर ते भये उदास बाहर भये उदास,
भयौ है उदास मन कुटुम्ब समाज तैं।
देह हू न भावै देह स्वाद न सुहावै,
कुल देव विसरावै परलोक हूँ से बाज तैं।
याही लोक वृंदावन याही समै याही वेर,
याहीं छवि पीवै नैन जीवै दुति साज तैं।
प्रियादास जु के मिलें भावत न आन कछु,
भई पहिंचान हरि रूप रस राज तैं।।

इससे ज्ञात होता है कि ये प्रियादासजी के समकालीन थे। प्रियादास जी का समय लगभग अठारवी शताब्दी माना जाता है।

इस 'अष्टयाम' के अन्तर्गत ब्रजवर्णन में कवि ने नंदगाँव के 'पशु, पंछी जन्तु' के 'चारु चोप' का विवर्धन करने वाली 'चाहना' और उनकी नित नवीनता का उल्लेख किया है—

'नयो लग्यो फिरे रूप जैसे जैसें आँखें फिरैं,
घिरे आवैं कृष्ण छवि नेह झर लायौ है।'

कृष्ण के सच्चिकण रूप लावण्य से 'पुतरीन में रंग भरता' है, और कृष्ण रूप और भाव के अतिरिक्त रसिक को कुछ और नहीं सूझता। "फिर लाइन ललित उन आंखिन सों लगी रहे जगी रहे नेह की दीवारी" नेह की दीवारी का जगना कैसा सुन्दर मुहावरा है। 'नेह झर लाना' पुतरीन में रंग भरना, 'ह्वास लास मुख फूल से झरना', 'उघारी मुसिक्यान की लहर उठाना', 'आनन की चांदनी वरसना', 'सुधा सौं स्रवत जात बड़ी बड़ी

आंखिन सौं' कपोलन से चिलकि चिलकि फुही झरना जैसे अनेक कला रंग प्रयोग मिलते हैं।

नंदगांव के चारों ओर स्थिति रूप सरोवरों का उल्लेख है। वे सरोवर हैं यशोदा कुंड, ललिता कुंड, मधुसूदन कुंड और कृष्ण कुंड। इन शोभा रूप कुंडों के बाद जावकवट, कदमखंडी, गोवरधन, विपिनस्थलियों आदि का भी उल्लेख है। तत्पश्चात् कवि ने सहस्रदल कमल रूप से ब्रज की संरचना तथा योगपीठ और यमुनाजी का चित्रण किया है। वृंदाविपिन की स्वच्छ सुभगता अति सुरम्य और मनः प्रसादक है—

कुंदन मृदुल सु फैंन जटित नभ धरन परस्पर।
प्रतिविंवै सुत माल लता प्रतिकुंज सघन वर।
फूलन संकुल ललित जहां भरी रहत एक रस।
खग कुहकत कल बोल केलि के मंत्र वेस वस।
त्रिविध समीर वहै जहाँ वृंदाविपिन सुछंद।
विहरत लाडिली लाल जहाँ बँधें प्रेम रसकंद॥

श्रीराधाकृष्ण के रूप माधुर्य्य का पान करने वाले विपिनस्थली में स्थित खग-द्रुमों की दशा का चित्रण निम्मलिखित सवैया में बड़ा ही मनमोहक है—

केंसे तमाल सु स्याम ही स्याम हैं देखें वनैं घनस्याम सू आऐ।
मानौं घटा अवनी उतरी व फूल मनौं चपला चमकाऐं
गंध उड़ै मानौं पौन चलैं भए बावरे भौंर फिरे भरमाऐं।
दंपति दौरि धसैं वन में मानौं राधिका के मुख चंद सुहाऐं॥

चारदिव्य सरोवरों— रूप सरोवर, दान सरोवर, प्रेम सरोवर और मान सरोवर— का वर्णन कवि ने किया है, वह उसकी मौलिक सूझ और प्रतिमा का नमूना है। रूप सरोवर के चित्र भाव और कलागत सौन्दर्य से पूर्ण काव्यात्मकता की सृष्टि करते हैं। देखिए—

रूप के सरोवर में रूप ही मिलत न्हायैं,
जाकैं आगे दामिनी यों जामिनी में छिपियैं।
खंजन कमल मीन मृगराज जानी आज,

याकी छवि आगैं उपमान ह्वै कै जि पियै।
हंसकुल मानसर मोती यौं चुगन लाये,
ह्वै कै पुष्ट स्वछ चलैं करी मति लिपियै।
कहत प्रिया सों पिय सखी या क्षुसुछंद आइ,
जाके सुर कोकिलान वोलै दुति दिपियै॥

× × ×

बड़ी हांत आखैं औ ढरारी अनियारी स्वेत,
बीच बीच कारी जाकी अनी चूभि जात है।
कानन लौं दोरे झांई झलकै कपोलन में,
चीकनी सचौ ही वरसौ ही खुभि जात है॥

उक्त चार सरोवरों में स्नान करने के लिए सखी रूप होकर अनुसरण करना आवश्यक है। ये चारों ही सरोवर 'रति रस की खानि' हैं इनमें 'सात जराव की पैरी' हैं जिनमें—

लै चुभकी जब तोय में भोइ जुगल रति रूप।
आनंद कला विलास जे परै न ते भव कूप॥

इन चारों सरोवरों पर पारिजात, मन्दार, अशोक और हरिचंदन के वृक्ष स्थित हैं। इन सरोवरों का मानसी-स्नान (भावना) करने पर ही पिय प्यारी के निकट जा सकने वाला रूप प्राप्त होता है। इसके उपरान्त सखी रूप गुरु विग्रह का बड़ा ही विशद वर्णन कवि ने किया है। प्रस्तुत काव्य में कवि की दृष्टि रूप-शोभा के चित्रण की ओर विशेषतः रही है और उसमें उसे पूरी सफलता भी मिली है। अष्ट सखियों और उनकी आठ आठ सखियों का चित्रण इनकी भाषा प्रौढ़ता का प्रमाण है। इन सभी सखियों का वर्णन वृहत् गौतमीतंत्र' पर समाधारित है, जैसा स्वयं कवि ने उल्लेख किया है—

श्री गौतम अवरीष कौ ललित संवाद वखान।
वृहद् गौतमी तंत्र जिहि वर्णन सखी सुजान॥

इसके बाद अष्टकाल लीला का व्याख्यान किया गया है। जगावन, मंजन, शृंगार, बिहार, भोजन, शयन, आदि दैनंदिनी लीला के अन्तर्गत आते हैं। राधा कृष्ण की छवि माधुरी के चित्र और रूपसिंहासन पर विराजमान सखियों द्वारा सेवित उनकी कांति का पान कवि ने बड़ी ही कलात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। राधा के रूप-चित्र बड़े ही सटीक हैं। इन चित्रों में प्राय गत्यात्मक सौन्दर्य्य का (Dyramic Beauty) उत्कर्ष मिलेगा। इनकी समर्थ शब्द संघटना सौन्दर्यबोध करानेमें पूर्ण सक्षम है। संस्कृत गर्भित पदावली की प्रथुलता होते हुए भी इन्होंने भाव गत सौन्दर्य की प्रायःरक्षा की है। जहां कवि ने देशज शब्दों का आश्रय लिया है वहां इसकी कविता का लालित्य और मार्दव बढ़ाहै। उससे भाव प्रेषणीयता बढ़ी है और शैली में चारुता आई है। रसिकों के आस्वाद के निमित्त ऐसे ही कुछ चित्र नीचे दिए जाते हैं—

पग के धरत ही धरनि छबि भर जाय,
भरजाय आनन की चांदनी बरसती।
जाही कुंज जाय सोई कुंज यों प्रदीपत ह्वै,
ससि के महल धस्यौ चंद ज्यौ दरसती।
रूप की किरन ज्यौं किरन रंध्रननि फैली,
मैली जा सौंदामिनी लगत हैं परसती।
वृंदावन चंद श्री गोविंद जाहि पायहि दै,
पावडे बिछावै छावै हसतों सरसती॥

× × ×

चिलकि चिलकि फुहीं परत कपोलन तैं,
किलकि किलकि लटैं धुरवा घुमड़ि कैं।
चमकि चमकि रवि मान तै मरीचैं बूँद,
रमकि रमकि कोप पौन तैं रमंडि कैं,
दमकि दमकि अनखत विजुरी ज्यौ घोर,
जोरि जोरि भौंहै मौरी बादर घुमडि कैं।

लहरि लहरि तेरौ रूप बरसै हैं आली
बनमाली भाजौ चलि भेवैं क्यों न मडि कैं ॥

राधा के मान भंग के लिए साम, दाम, दण्ड और भेद रुप उपायों का आश्रय लिया गया है। हरि राधा का रास करते हुए प्रसार, नृत्य मध्य उल्लास रूपी धुनि का विकीर्ण होना और गौर श्याम के प्रेम सिंधु में पड़ने वाले आवर्त्त बड़े ही अगम्य हैं। महा तेज स्वरूप उनका रूप हैं, जिससे द्रष्टा की दृष्टि प्रवेश नहीं कर सकती। यदि कदाचित् प्रवेश कर भी जाय, तो गात गल जाता है। रूप की उष्णता असह्य है। श्याम और गौर, गौर और श्याम एकमएक हो जाते हैं, और फिर "जानै न परै भाव वृत्ति जानैं सोर हैं।"

इस प्रकार प्रस्तुत ग्रंथ ब्रजभाषा काव्य ग्रंथों में भाषा और भाव प्रकाशन दोनों ही दृष्टियों से अपना विशिष्ट स्थान रखता है। कहीं कहीं तो भाषा रीतिकाल के प्रेमोन्मत्त गायक घनानन्द के अधिक समकक्ष व आजाती है। आशा है, हिन्दी काव्य जगत में इसका उपयुक्त आदर होगा और विद्वत् समाज गौडीय सम्प्रदाय के ग्रन्थों के प्रकाशन और अनुशीलन की ओर अग्रसर होगा।

अन्त में मैं पुनः कुसुमसरोवर निवासी बाबा कृष्णदासजी को श्रद्धा से नमन करता हूँ कि उन्होंने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि प्राप्त करने के लिए लगभग एक माह तक देहातीत कठोर परिश्रम किया था। प्राचीन हस्तलिखित पोथियों को वृन्दावन के ग्रंथागारों से उबारना बड़ा ही दुस्तर कार्य है, इसकी पीड़ा अनुसंधाता ही जानता है। किन्तु श्रीअद्वैत चरण गोस्वामी (बच्चाजी) की कृपा और सहयोग से अपूर्व उपकार हुआ है, उन्हें भी मैं अपना प्रणाम निवेदन करता हूँ।

निवेदक—

नरेश बंसल

श्री रजनी पारेख आर्ट्स कॉलिज
खंभात (गुजरात)

❋ अष्टयाम (ब्रजवर्णन) ❋

दोहा—जयति जयति गुरुदेव है अज्ञान तिमिर करि नाश।
हृद् गुहा में विराज करि प्रेमचंद्र परकास ॥१

गोपीनाथ ब्रजनाथ सकल जग के नाथ, हृदय के नाथ अरु राधानाथ गाइये,
लोकपति रमापति अनंत वैकुंठ पति, गोप पति गोपी पति कृष्णचंद ध्याइये।
ब्रजमणि चिंतामणि यशोदा वात्सल्य मणि, गोपी हृदय के महा नीलमणि पाइये,
बृंदावन धन अरु भक्त जनन के धन, निरंतर भज स्वच्छ प्रेम धन पाइये॥
गौर चंद्र नवद्वीपचंद्र लोक चंद्र अरु, राधा भाव चंद्र धारि कृष्णचंद्र राजे हैं,
प्रेम सुधा वरषण करिवे को चंद्र महा, पारषद तारा माझ दिव्य चंद्र गाजे हैं।
जग तम नाशिबे को अदभूत चंद्र सदा, सुरधुनी तट भूमि नृत्यन में भ्राजे हैं,
कोटि कोटि अजामिल तारिवे को व्रत जाको, धारि के सुन्यासि वेश श्रीक्षेत्र विराजे हैं॥
नित्यानंद चंद्र रूपचंद्र रसचंद्र उदे रतिचंद्र प्रेमचंद्र हासचंद्र छाये हो,
मति चंद्र गति चंद्र हाव भाव चारि चंद्र रागचंद्र रंगचंद्र सुधाचंद्र भाये हो।
छेम चंद्र छिमा चद्र यमुना आकर्ष चंद्र बनिता आनंद चंद्र देत हेत आये हो,
बंदन करत हौं दयालता के निधि चंद्र सुमरन मंगल के मंगल मिलाये हो॥
करुना उदधि तें उदै भये प्रकास रूप सब जन पावै हरि भावे जूप माने हो,
न्यासी रूपकों धरै प्रकासो कछु औरे वात छविहि में वासी मंद हासी दिष्ट आने हो।
मन तद रूपता दिखावो अनभावो भाव छावो मोद के प्रमोद सुख रूख ताने हो,
श्रीअद्वैतचन्द्र किधों कृपाचंद्र रतिचंद्र रसचंद्र अद्भुत हो प्रेमचंद्र जाने हो॥

छप्पै—श्री रूप सनातन रूप के उभै सुचंद उदे भये।
बरषत हरिरस सुधा बदन तें रसिक जनन पर।
मन वली ह्वै पोष लहलहत अंग अंगतर।
कुंज कुंज अनुराग प्रकास्यो ज्यौ महाभाव धर।
देखत हीं चरन फसत रसत हैं प्रेम नेम कर।
कल कलोल रस अमित वर्ध रपरवरषत हित तये।
श्री रूप सनातन रूप के डभै सुचंद उदे भये॥६

सेवा के करत सिंधु प्रेम पढ्यौ चढ्यौ सीस, सालग्राम रूप भयो राधिका रवन है,
अद्भुत उजास वास माधुरी मिलास हास, भावना में आय रस उपज्यौ कवन है।
ह्वै गये सरूप छबि धर मनहर हित, बोले हैं जनाय आप मनको भवन है,
श्री गोपाल भट्ट जू के प्रणत जनन पर, कृपा अनुसार सिंचें नेह की पवन है॥
महाप्रभु आज्ञा ही को रूप सु बैराग्य रूप, रूप अनुरागहि को अनु भौ प्रकास है,
भावना में तत्पर कलपद्रुम के सो रूप, नेह रूप दंपति वसत रूप वास है।

सिद्ध रूप साधिक सजल घन दाम रूप, रस भीजे रहै मुख माधुरि को हास है,
रघुनाथदास भट्ट राधाकुंड वास आस, रासस्थली ज्यौं चकोर भये चंद्रास है ॥
साधन अगाध सिंधु सब्दसिंधु में निपुन, जपैं भाव माला दिव्य पानिप मोतिन हास,
भक्ति के प्रकार चारि सदाई अलाप जाप, बढ़ैं रसके प्रवाह चहैं छवि रास वास।
जहां राधाकृष्ण छिन छिन में प्रकास रास, ललित विलास गाँस बढ़ैं नेह पास आस,
प्रेम को उदधि सी गुसांई जीव हैं प्रसिद्ध, जहां हरि रिद्ध सिद्ध रूप चन्द्रको प्रकास॥
दामोदरदास रस रूप को सरूप रूप, श्री निवास सोभा हरि भक्ति को विलास है,
राय रामानंद महाप्रभु की कृपा के घर, श्री गुसांई दास रास-रस में निवास है।
श्री गोसांई लोकनाथ श्री राधाविनोद साथ, कर्णपूर पूर प्रेम भूगर्भ सुवास है,
ठाकुर आचार्य्य आचार्य्य रसिक रूप, कृष्ण करुणांजन में मंजन उजास है ॥
श्री निवासाचार्य्य है निवास जग जनन कौ, श्री गुसांई कविराज कविराज-राज हैं,
ख्याती कृष्णदास जाकी ख्याति कृष्ण सेवा ही की रागभोग लाड़चाव प्रेम बरसाज हैं।
ठाकुर महासय की आसै महा भाव वर आँखिन में दंपति वसाये नित आज हैं,
कविराज ठाकुर हैं कविन के ईस मानो कविताई गाजै जैसें मेघनके गाज हैं ॥
दंपति की छबि देखि इकटक रहि जात पुहि जात रोम रोम सुंदर अनूप हैं,
त्रिपित न होत चाह की कठिनताई महा रुचि की जुन्हाई परैं नेंन पन जूप हैं।
आँसू वरषत कबे हंसी ह्वै उठत जबे आनंद हुलास तबें वे उजास रूप हैं,
प्रेमो जु के नैंन प्रेम सुर्य्य वैं संग रहै, भाव सरही में फूले कमल सरूप है ॥
नील घनस्याम कामवंत छवि जोति होत पीत उपरेंना गूंजमाल सों बनाव है,
तुलसी रचित माल छापै नाम जाल अंग अंग में उमंग सब झलकत भाव है।
प्रतिविंव वसन सु लसत हैं रोंम रोंम सोम सुधा श्रवै नेक बोलें रूप चाव है,
राधाकांत वसें नेंन फूलेई रहत चेंन देखें जहां जहां तहां तहां प्रेमराव है ॥
रसिक इकोंनें जाकी बोलन में रस-दोंने जामे प्रीया प्रीतम की वातें कौ कहन है,
ढ़रें ह्वै कृपाल हसि हसि उपदेस हित हासी सो जुगल प्रतिविंवत चहन है।
रंगे मन बुद्धि चित अहंकार हरि रंग, वेंनी चढ़ि रहै नेंह पानिय लहनि है,
एसे रतिवंत संत वृन्दावन रस भूमि तहां निपजैहै रंगरूप सौं रहनि है ॥

छप्पै—श्रीगुरु कृपा कटाछ तें अछ खुलत जब चारु।
अछ खुलत जब चारु रूप हरि को सब देखे।
उदो होत रवि प्रात तिमर तजि वस्तु विसेखे।
ओत प्रोत अनुराग परसपर झलकत एसें।
छे चक उपमा एक देखतें देखत जैसें।
ज्यौं विस्वास हरि में सदा त्यों गुर मयै ह्वै धार।
श्री गुरु कृपा कटाछ तें अछ खुलत जब चारु ॥ १५

संतन कों मैं करौं प्रणाम न जानु कछु कर बुद्धि विशेखो ।
वे तो दयाल हृदें हें रसाल वसे नंदलाल सब सुख देखो ।
रंचक ही जो करेंगे चितों न तो पावंगो गौर औ स्याम सुरेखो ।
देह औ गेह औ मोह उछोह सु कर्म अकर्म्म को जायगो लेखो ॥१६

भयो है प्रकाश देश-देशन-विदेशन में सूरज सुजस रूप गुन वात वात हैं,
आवें वृन्दावन कोऊ देखें रसवंत होत हेत सों मिले तैं जोतिवंत होत गात हैं ।
कहैं कवै वात ले झुलावें सरसात रूप भावें जूप प्रेम के कलोलनि अमात हैं,
जहाँ प्रियादास जु की नेक हूँ चितौ न होत पण्डित ह्वै केई कवि रसिक ह्वै जात हैं॥
घर तें भये उदास वाहर भये उदास भयो है उदास मन कुटंव समाज तें,
देह हु न भावे देह-स्वाद न सुहावे कुल देव विसरावे परलोक हू से वाज तें ।
याही लोक वृन्दावन याहो समें याही वेर याही छवि पीवें नैंन जीवें दुति साजतें,
प्रियादास जु कें मिलें भावत न आन कछू भई पहिंचानि हरि रूप रस राजतें ॥

दोहा—वानी के वरनन विषें उदो होत सब आय ।
ज्यौं दिनकर हिं प्रकासतें वस्तु सवे दरसाय ॥१९

कृष्ण केलि लीला में चलत वाक वानी जब तव हास लस मुख फूल से झरत हैं,
ऐसे सद्यफवे जामे रूप फूलवादि छावै देखिकैं लुभांवे खेल दंपति करत हैं ।
बोलन की माधुरी मिठास में झुलावे कान दृग ढ़रकोहें चारों सों ह्वै ढ़रत हैं,
नथ बर मोती हाल परस कपोल वाल हसें नाचि उठै सांचै छविके भरत हैं ॥
सिव पुत्र सिवा सुत सिव शब्द गुन गन लियें पन वन धन भये जू गणेस हो,
हरि अवतार सब सिद्ध उर हार कियें भक्ति रूप कविन सों मिलत सुदेस हो ।
विव रूप आप उन्हें करो प्रति विंव जब वर्णन करें वे उन वर्णन न नरेस हो,
रूप झल मले झलमले रूप छविन कौ राधा कृष्ण रस पान रहत अवेस हो ॥

इति मंगलाचरण गुरु संप्रदाय सुमरन मंगल प्रथम प्रकास ।

—००—

दोहा—ब्रज चौरासी कोस की वीरां देवी देव ।
जो चाहे ब्रज पाइवो वीरां देवी सेव ॥

ब्रज नाम व्यापक सुव्यापि प्रेय ब्रह्म जैसे सत् चित आनन्द माया त्रिगुन सों न्यारो है,
जाके बन उपवन ग्राम नदी पर्वत सु हरि रूप रचै हरि खेलें खेल प्यारो है ।
रत्न मय भूमि कहैं अमृत मै जल जाको मारुत सुगंधन सों भरयौ हरियारो है,
ब्रह्मा सिव नारद मुनिन्द्र कहें वेद चारयौं खेद मिटि जाइ जाकै सुमरें उजियारो है ॥

दोहा—अब वर्नन न्यारो करों ब्रज वर भूमि अस्थान ।
उदे अस्त जाको सुजस चौदह लोक प्रमान ॥२३

बरसानों वर भूमि है कीरति कंचन मांनि।
नरनरेन्द्र वृषभांन नग राधा कांति वखान ॥२४
बरसांनो महावर राज श्री जहां राधिका सो प्रगटी सुख दानी।
जा की विलोकनि कै रस डोरे बंध्यौ फिरे गोविंद रूप गुमानी।
पाय धरे जित प्रीतम के लपटे फिरैं नैंन लियें पटु वानी।
नेह सुजन्त्र न मन्त्र कि रोप न रूप लडेंति को प्रेम निसानी ॥२५

उज्वल महल स्वछ रुचिर विधाता रच्यौ सच्यौ है फटिक मै कि दर्पन सदन तें,
सखिन सहित ता में लाडिली प्रकासत हैं वाहिर तें भासैं रुरि भीजें हैं मदन तें।
खोलत ही खिरकी कि चन्द्रमा किरोर मान्यों फैली उजराई झांई वाला के वदन तें,
सनमुखु रुखु सुखु झुके छवि अमृत ह्वै नेह नियरायें हसे कूंद से दसन तें ॥

दोहा—खोर सांकरी आकरी मुहर रूप की पैंठ।
पारष नेह सरूप को परष यहे दग ऐंठ ॥२७

राधिका सो रस वाग सखीन लै सांकरी खोरि मैं आवत जानी।
लै लकुटी मिस दान कै मित्र लै घेरि लई भृकुटी सतरानी।
यों रिस सों झगरो रस वाढ़त आवें तिरीछि चितों न नितानी।
सो उरझ्यो न अबें सुरझे उरझ्योइ रहै दग रूप को पानी ॥२८

रूप को पियासो मिस गोरस कै दान मागै खोर सांकरी मे भोर रूप चोंप हेरेसों,
राधा अति रूप भरी छवि को मरोर आगें संभर सक्यो न उठ्यौ चाह के उजेरे सों।
प्यारी पग धरे जिते तिते लकुटी ले अरे भोंहन सों भोहें भिरें नेह तेह घेरे सों,
तिरछे चिते कै नैंन तीर सै चलाय गई दान यों चुकाय हसि प्रेम पन फेरे सों॥
रूप को जगाती आनि वैठ्यौ खोर सांकरी में राधा अति रूप भूप आई भोर हेरी हैं,
मागत जगात कहा लोंग हम लादी यामें लोंग की कहा है वडी आंखैं वस तेरी हैं।
तेसेई कपोलन की सोहन हसन तापैं मोती की हलन सों अधर रस सेरी हैं,
कौंन कौंन अंग कौ चुकेगौ दान देखत ही एक ही कटाछ लेकै मन होत चेरी हैं॥
ये विलासगढ़ दानगढ़ दोऊ पर्वत हैं तीजें मानगढ़ सब सुखन के रासि हैं,
जहाँ आवें राधिका जू झूंमि कै सु सखिन कै इत नंद नंदन परस परहास हैं।
चटकी कसुंभो सारी सव ही के यों दिपत सांवन की रितु उदै चपला उजास हैं,
हरयौ वन हरी भूमि हरे वेंली वृछ सव रूप झमकै ज्यौं ये मुकर दीप वास हैं॥

दोहा—गिरि गहवर वन अति सुखद सोभा सदन विलास।
द्रुम वर साखा फूल फल सबै कृष्ण रस रास ॥३२

वन गहवर के तमाल वेस जोवन हैं पाले प्रिया प्रीतम के रूप सों रहत हैं,
खेलन खिलन दोऊ की जहां छाई रहत लै लै मित वीने फूले फूल जो चहत हैं।

कुलकि कुलकि ऊंची साखाये नवावत हैं चितै चितैवदें वात उपजै लहत हैं, चौंपन सों चपल मिलत उर सेंत मेंत हिये मिले जात ऊँचे उल में गहत हैं ॥

दोहा—इत राधा इत कृष्ण के मन के मिलन संहेत ।
नवल नेह विवि रूप मिलि विलसत वट संकेत ॥

नंदीश्वर आई प्यारी न्यौती काहू गोप कै सु तहां कृष्ण आंखैं लखि आँखें अरझांई हैं, बढ़ी है सहेट वाही छिन उन आँखिन में वटहि संकेत नित्त आंवन जनाई हैं । प्रेम भयो जामिनि लपेटि लेत रूपन सों चाह रस डोरो जाय मिलें अधिकाई हैं, खेलन हसन रास वर संग जोग भोग विलसें सु आवें जांहि महा छवि पाई हैं ॥ द्रुमन के मंडल में महामृदु मंडल हैं सुनें मै सुमणि मै सुदर्पन लजात हैं, सखिन के मंडल में मंडल आलात दृग भूषण अलातन में हासें झमकात हैं । मधि प्रिया प्रीतम की नृत्तत आलात छवि दृग दृग जोरें भुज जोरों क्यों अघात हैं, चितै चितै चित हरें हितै हितै रूप भरें परस कपोलैं श्रम भीजैं वरसात हैं ॥ खेल रास कुंज सज्या हास्य को चषक पीय पीयो चाहै अधर सों अधर लगाय कैं, अलकें हलत छवि झलकें कपोलनि में नथ उरझी है महा आनंद अदाय कैं । भृकुटी चपल इत अनख अनख मोरें प्रीतम झकोरें आँखें रंगनि रंगाय कैं, खूली हैं चटक सब अंग दुहुँ घाँते स्वादी परस जु गादो हरि अधिकें छवाइ कैं ॥

दोहा—नंदगांव जब नेह को मेरु सदा कर लाय ।
कृष्ण रूप घन यो रहैं स्याम स्याम छवि छाय ॥२८

वेई नित नये ग्वाल वेई नित नये मित्र नयेई लगत कृष्ण नयो प्रेम पायो है, गोधन नयेई नित्त नई ही चरावन है जु स्याम मुख चंद ह्वै चकोरनि छकायो है । नयो लग्यो फिरे रूप जैसें जेसें आंखे फिरें घिरे आवें कृष्ण छवि नेह झर लायो है, पसु पंछी जंतु नंद गांव के सु चारु चोप चावन सचो हैं हरि चाहन लगायो है ॥

नंद जसोदा के प्रेमा को पूरति मूरति होय कें रूप धर्‌यो है,
स्याम सचीक्कन आंखिन ह्वै प्रगट्यो पुतरीन नें रंग भर्‌यो है ।
एक ही वैश रु रूप करोरन कोर कटाछ जिये रर्‌यो है,
कोउ न न्यारो लगे नंद गाँव कौ एकहि भाव सुरंग धर्‌यो है ॥

पावन सरोवर में पाइवाइ जल भर्‌यो पानिय कौ चिंतामनि चाहै चार्‌यो पाइये, और चाह उपजे न जाके न्हायें पीयें सूझें कृष्ण रूप कृष्ण भाव ये ही छवि छाइये । लावन ललित उन आंखिन सों लगो रहे जगो रहे नेह की दिवारी प्रेम आइये, ढिग मोती कुण्ड मोती बोये लाल जवे उगे देखै सोई अवे भाव मंजन कराइये ॥

नंद गांव के चारों ही ओर विराजत चारि सरोवर रूप भरे,
श्री जसोधा ही कुंड की सोभा बड़ी ललिता कुंड प्रेम सरोज हरे ।

सो विराजत यों मधुसूदन कुंड सु झूँडन गोपी विनोद करे,
वर कृष्ण सु कुंड सुधाकर सागर सो क्रम सौं रस काम सरे ॥४२

दोहा—जावकवट अनुराग को जामिन परम सुजान।
चरन लाडिली के दियो जावक रूप निधान ॥४३

बैठी छवि बल सौं सुरूप के अदल सौं सु सोभा लखि कलसौं चरन गहि लीयो है,
मृदुल सु कर सौं सुमृदु पट धर तापै धरैं निरखै सु ऐसे जैसे निजु हियौ है।
जावक सुदेत कौंन कवि सु कहै गौ हेत आंखिन सु लेत चित्र कियैं रस पोयौ है,
याही तैं अरन डोरे सदा दृग देखियत प्यारी जु के पायन कौ गहनौ सु कियो है ॥

जावक दै ललना कै लला उन चाय नचाय नचाव रसीलै,
लै कर मैं छवि के भर मै मानौ कंज मै कंज से होत हसीलै।
चित्रत यो तरवाइडिया दृग जात भरे रंग को कब सीलै,
आंखिन की कहि आवै कहा उन पाय न हाथ किये बस पीलै ॥

कोकिला सु वन के वे कोकिल मधुर बोलैं सोइ सब बोलैं खग सब्द वे बनाव मै,
कोयल ह्वै बोले सु कृष्ण सोइ लियो पढ़ि वाही को उचार होत छके कंठ चाब मैं।
जावक सुवट तहा अटा ऊचौ देखियत तापर चढ़ी हैं राधे रूप के तनाव मै,
मिलैं दृग चारौ दौरि दौरि मन एक करि चाह छवि राह प्रेम माधुरी उगाव मै ॥

दोहा—जाय कदम खंडी मिले दोऊ रूप निधान।
भुज मै भुज दृग दृग जुरे पिये मुरनि भौवान ॥४७

दोऊ नृतत हैं भुज मै भुज दोनै सुनै न निकी गरवांही कियै,
भृकुटी मटकैं लटकैं अलकैं जु कपोलन झूलैं झुलायै हियै।
बलकैं ललकैं जु सिंहासन लियै वे कटाछनि भीजभिजान पियै,
थेइ थेइ करैं मुसिक्यान भरैं नथ मोती बुलाक निहाल लियै ॥

दोहा—सो छवि राधाकुंड की को कहि सकै बखान।
दास सुरास जहां प्रगट हौ कीनो दंपत पान ॥४९

बत्सासुर बछरा कै रूप दैत मार यौ जब तब कृष्ण राधा जू पै खेलत ही गये हैं,
तीजन को खेल रीझि अंखिया जोवन भीजी प्यारी हसि कह्यो जिनि छिओ हत्या लये हैं।
बोले हसि रीझ हरि भीजे वा कहन ही सौ कैसे करि देखैं ऐसे खेल रूप छये हैं,
साढ़े तीन कोट या तिलोकी कै सुतीरथ हैं सब न्हाय आओ देखौ सुधि अंग भये हैं ॥
जब हसि बोले कृष्ण तीरथ वे ह्याही आवैं तब हसि कह्यो प्यारी आवन जनाइये,
आवन लगे वे यों कहन लगे मै हू गंगा मै हू कुरछेत्र ऐसैं कह न गनाइये।
सखीन सहित राधे मंजन करन लागी मित्रन सहित स्याम सोभा लै बनाइये,
जितै प्रिये न्हाइ तितै राधाकुंड बनि गयो जितै कृष्ण न्हाये कृष्णकुंड जो कहाइये॥

विच बाही संगम मै आयो विसकर्मा सखी मणिन जराऊ पैरी रूप की लहकती,
रचि दीनी सबै प्रिया प्रीतम प्रसन भये वृछ वेली सबै छवि फूलन महकती।
जल भरि रह्यो मानो रूप रस पानिय है सोभा ढरि बही प्रेम चाँदनी चहकती,
गौर श्याम अंगन के अंग के अरगजे कौ तीरथ भयौ है न्हाइ भारथी गहकती ॥

दोहा—श्री राधाकुंड की कही उतपति सोभा पाइ।
अष्टिकाल मै होइगौ बरनन होत बनाइ ॥५३

कहैं कंदर्प सर कुसमो खर कुंड नाम कुसम सु फूलैं काम कल वे कवल हैं,
देखत लजात काम कोट वाकी सोभा पर दंपत लुभाये रहैं रूप के नवल हैं।
रास रसथली वा मै व्यापि रही भली विधि राधा हरि प्रतिविंव रूप के धवल हैं,
चितै हस देत जब जल औ कवलन पैं फैल मुसिक्यान रहे छवि के छलवल है ॥
मानसी सुगंग कृष्ण मन सौं प्रगट भइ मानसी सुभाव ताकौ जाही मै सनान है,
चांदनी सौ जल चन्द्रमा सौ चक्राकार कुंड अमृत सी सोभा कहे उपमा न आन है।
चुभकी लै उठै हरि रूप मै तै भरी आखैं सम कैसै होहि लाखै तीरथ वै मान है,
सुंदरता चारु हारु डरतै न टरै धरै भरि भरि आवै कवि पानिपकौ पान है ॥

दोहा—सी गोवरधन गोप धर सब विध परम सुजान।
निग्रह सब विधि दूरि कर करै अनुग्रह दान ॥५६

कहते तौ कंचन कौ दिव्य रवि कीसी आभा सोरो चंद्रमा सौ कोटि चंद्र को प्रकास है,
प्रेम कौउ भारो लागै देखत ही प्यारो जाको वारा पार सारौ लागै प्रानज्यो उजास है।
छवि कौ सौ द्वार जगमग कौ सौ भर जामै राधाकृष्ण रूपन को प्रतिविंव वास है,
सात कोस ऊचौ कहिवै कौं गोरधन गिर यौ हो ऊचौ गोलोक भी ऊचौ उचिरास है ॥
भयो है प्रसन्न ब्रजवासिन कौं गिर इम भोजन करत निजु मुख सौं सहाय कौं,
कोप्यो इन्द्र सोख्यो जल कृष्ण कर पर उठ्यो ऊपर किरोरन सुदर्सन ह्वै छाय कौं।
परैं बुंदै भस्म होहि अगिन लुहागि रजौ धधंक धुवे की इन्द्र तपो क्रम काय कौं,
नीचै ब्रजवासी मानौं सुख पुरवासो किये कृष्ण मुख देखि रूप पियो दृग चाय कौं ॥
चंद्रमा असंख्यन कौ जथ वंध चाक चक होइ चक्राकृति महा चंद्र यो प्रमायिये,
झमकैं किरन सब चन्द्रन की लहरैसी जैसो चंद सर सो है ब्रजवसि जानिये।
चांदनी सौ जल कैसो धोइ जात आखैं जासौं भोइ जात रूप मैं सु आंजी छवि आनिये,
निकसैं न यैरैं वे तौ सुधा को समुद्र पाय दंपति विलास हासि चितै रस पानिये ॥
चंद सर चंद्रमा सौ उजल विराज रह्यो राज रह्यो होरी रास ता पर विलास हैं,
जोरै भुज चारौ चारौं आखैं दोऊ हासि लेसौ करत अवीर मार विंव छवि रास हैं।
सुछिन गुलाल चितवनि को निहाल करैं थेइ थेइ हरैं मनरंगन उजास हैं,
नृतत उठत प्रतिविंव रगे जलन में लपटैं कटाछैं पिय रूप रस चास हैं ॥

श्री जुत गोविन्द कुंड की सोभा सु श्रीयुत कंचन जाहि लग्यो है,
श्रीजुत ही मनि जाको जराव भराव सु चायन ही कौ जग्यो है।
श्रीयुत राधागोविन्द विराजत श्रीजुत रूप को रूप पग्यो है,
श्रीजुत ही मुसिक्यान दोऊ दिस यानी एपो गयो रंग रग्यो है॥

दोहा—सोभा कुंड गुलाल की लाल हि लाल लखाय।
द्रुम पंछी अनुराग मै छकि छकि लाल कहाय॥६१

द्रुम मण्डित है वह कुंड गुलाल सुलाल कला दृग ले लपटायै,
छवि आवत होरी कौ खेल लियैं जल जंत्र गुलाल हसी रस छायै।
रति रीति कटाछन ही झर फै झर लागि रही है अजौ अरझायै,
किये मंजन अंजन नाहि छुटै जल नेह सौ धोयै रगे रग चायै॥६२

मधुबन मधुनाम दैत कौ मधुर कियो तालवन धैनुक कौ जस विसतारयौ है,
जैसे ही कुमुद वन फूलेइ कुमुद रहैं कृष्ण मुख चंद देखै औरन विचार्यो है।
वोहौलावन वोहौत समुद्र वंत प्रेम देत कृष्ण मुख चंद देखि उमगै निहार्यो है,
कामवन कामना कलोल दैस कामिन कौ भक्ति निसकामिन कौ कृष्णचन्द्र धार्यो है॥
खिद्रवन खेद मेट देत प्रेम खेल देत श्रीकृष्ण विहार मानौ अजौस वहोत हैं,
वछवन वछविध हरे विध हर्यो गयो सेस साही रामघाट छविन उदोत हैं।
चीरघाट चीर हरे वेइ जो कदंव सोहैं वेइ कृष्ण वेइ गोपी ओंपी प्रेम जात हैं,
विंदावन बन राज रास औ विलास कियैं बन रहे वेइ अब श्रवै प्रेम सोत हैं॥
वेलवन वेलन तमालन सकुल सोहैं मोहे जात मन जहा नैन विवि लास है,
वन है भांडीर जहां राधा कृष्ण मिलिवे कौ निलय नवीन सब नवीन उछास है।
भद्रवन भद्र जहां जीत है अभंद्र भजि सजि सजि आवै कृष्ण लीला कौ उजास है,
लोहवन लोह मोह कर देत प्रेम हेम कृष्ण ही कसौटी सौ लगायो कियो रास है॥
खवल सुपुर वृषभान कौ निलय भर रूप कौ प्रकास कौंध कौंध उठै देख्यो है,
कीरत कहत वृषभान सौं सुहस आजु क्यों न निधि आइ ग्रह कौतिक विसेख्यो है।
कोटि सति रमा तेज जान्यो तुव दृग ह्वै कै उदधि स्यौ हैके प्रेम सिंधु बढ्यो लेख्यो है,
दौरि दौरि अखैं नंद भवन परसि आवै स्याम चिकनौं ही छवि लागी आवै पेख्यो है॥

व्रज में वलदेव विराजत हैं सब देवन की देवताइ लियै,
कौऊ कैसै हू सेवो ऐ देत हैं जैसे ही और हू दे निसकाम कियै।
वर भक्ति सुधारस पान ह्वै मत्त अनंत हीय कविता न दियै,
अनंत जू हैं आप फनंत फनीवर पृथी धरी फन येक लियै॥
कहिवे कौ महावन की वनिता जहां प्रेमवती रति रूप की हेरी,
जहाँ कृष्ण फिरैं जिन के घर में खाइ माखन रूप दै लेत मे हेरी।

लह भूल रहैं छवि झूलत हैं कहैं सांवरी मूरत है सुख सेरी,
वड भाग जसोधा के को वरनै घर सुंदरता छिन ही छिन घेरी।।

गोकुल नगर की वडाइ कहा कहौं ऊचें मंदर अमर ब्रह्म पद तैं सरस हैं,
ससि तैं प्रकासमान सवे जन देखियत नृमल अकास काम प्रेम के दरस हैं।
जो कोऊ सरन गहै तुंछि ह्वै सरस सुंछि हरि उर रंछि अंछि रूप के वरस हैं,
देव मुनि ब्रह्मा सिव नारद प्रसंसित हैं देह तैं अदेह भये देह मै परस हैं ।।
विष्णु तेज चक्र तापैं मथुरा सुमंडल है नित्य न नैमित्य महाप्रलै कौ न लेस है,
सेस मुख अनल छुवै रवि तपि वाकौ वोरि कै त्रिलोकी जल परसै न पेस है ।
जैसे वड़ी झलकी वै फुंहीकन कहा करैं आप नास होहि यो प्रपंच उपदेस है,
ब्रह्मा आदि जीव सवै मरैं उपजैं ब्रह्मांड केसौ जू प्रताप चिदानंद ही आधेस है।।

स्वर्ण वरन प्रभू मन महता पर पदम सु देस ।
सहंश्र दलन कर दिव्य है तापर व्रज वर वेस ।।
सो ब्रज वर्नन करि चुके निरनै कमल विसेखि ।
सहस्र दलन कैसे रच्यो सव विध पूरन पेखि ।।

प्रथम सुदल अष्ट चक्राकृति क्रिनिका सौं सोइ जोग पीठ सी गोविंद पद जानियैं,
सो इहै सिंघासन सु अष्ट न कौन जोगमय जोगमय कुंदननि मननि प्रधानियै ।
तापर गोविन्द राधा सखिन सहत सोहैं मोहैं कोटि काम छवि ही के वनि आनियै,
सोइ सुप्रकास षट सेवत वैकुंठन सौं चत्रव्यूह द्वार चारो दिसा सुख गालियै ।।

स्वेत वरन बैकुंठ है निजु पाताल हि जान ।
ऊरध छठौ सुमानियै कहत वराह बखान ।।
रक्त वरन पछिम दिसा पूरव स्वेत प्रमान ।
कृष्ण वरन दछन हि कहि उतर पीत हि जान ।।
चार चार भुज दिठय वर आवध जोग प्रकास ।
कोटि कोटि ससि सूरज गिरा चारो दिसा उजास ।।
मधि श्री वृंदावन विषै अद्भुत रास विलासि ।
विसमै सहस श्री निजविधि विव परस पर हासि ।।
पात पात मै चत्र भुज ब्रह्मा सतन विसेष ।
सहत ब्रहमांड वैकुंठ हू उस्तुत करत असेष ।।
कोटि कोटि ब्रहमांड हैं वैकुण्ठ कोटिन कोटि ।
तिन को ऐकै कृष्ण है सु प्रकास बन ओट ।।
सो सब विंदावन विषै वछ हरन कै जोग ।
ब्रह्मा सव देखै जबै कियो भावना भोग ।।८१

अखिल ब्रहमांड जाके रोम के विवर भ्रमै ऐसो महाविष्णु विंदावन रूप गायो है,
जाकै ऐक देस ऐक वृछवे विरंचन कौ स्वामी न सहत ये समूह लै दिखायो है।
पात पात चंत्र भुज ऐक विधि चार मुख कहू आठ सौ असंखि कौतिक सौ छायो है,
धामन कौ सिर मौर लीला कौ निचय जोर राधा कृष्ण मन चोर रास रस भायो है॥

प्रथम सु आठौं दल कहे आठौं दिसा वखान।
क्रम करि लीला वरन सौ लीला नाम सुजान॥
प्रथम सुदल दखिन दिसा ता पर मंडल स्वछि।
रतन प्रभा रवि ससिन सौं निरमल सीतल स्वछि॥

कुंज सौं चलन वनिठननि सिंगार चारु छवि के उदार आये मंडल झमकते,
मनि सब कौंध उठी कौंध उठे अंग दोऊ सखिन उछंग रंग दौरित दमकते।
दृग दृग जोरैं हँस हँस रस वोरैं प्रभा सुधा में झकोरैं रूप वरषैं खमकते,
लटक चलन मटकत भौं विलासन की लासि लपटत आवै आखैं सौ रमकते॥
दर्पन उजास रास मंडल मणिन रास नाचत जुगल उरझायैं भुज चायै है,
भौंहै मटकायैं औ नचायैं दृग चायैं हँसैं उर परिझायैं तान भिजयैं भिजाये है।
पायन की ठुमक झुमकि अंग अंग आयैं नूपुर वजायै सुर मिलैं गति गाये हैं,
ऊँची टीपैं ऊँचे चितै हस्तग वतायैं जितै वैं वितैं मटकैं कटाछै मोती झूलैं जरलायै हैं॥

झमकैं महारूप दोऊ दिसतैं दमकैं तव नाचत आवै अगौं है।
छके आँखिन आँखिन सौं उरझे गरवाही कियै हँस आवत सौं है॥
छविके वरसें महामेघ जवै जगैं जीलगरें सुर होत मजौं है।
वर व्याप रह्यो वन रागमइ छिरक्यौ मनौ राग कै रंग रगौं है॥
मंडल सुंदर मनि मइ कौट कलप तरु ईस।
दंपत जैसी रुचि लखै छवि भर विश्वै वीस॥

हीरन कौ मंडल वसन दुति हीरन सी हीरन के भूषन मुकट हीरा भरयो है,
हीरन की चन्द्रिका रूपै हरी सारी हीरन सी हीन कौ हार औ हमेल हीरा धरयो है।
हीरन पै नृप झमक रूप हीरन मै हीरा वर लाखन जराव हीरा करयौ है,
हीरन की प्रभा औ हँसन मिल फूल झरैं वींने में रे नैन ह्वै भँवर मन अर्‌यौ है॥

अग्नि दिला दल दुतिय कहि जहाँ निकुंज विलास।
वहै सुधीर समीर वन द्रुमन सघन घन वास॥१०

द्रुमन के वृंदन मैं वृंद हैं तँमाल मधि ललित लतानि करि मंडत लगत हैं,
स्याम घन घनीभूत लागत सघन मूल मानौं दिन ही मैं चिन्ह राति के जगत हैं।
स्वेत पीत फूल तूल राजत नछत्र राधा कृष्ण मुखचंद के चकोर ह्वै खगत हैं,
सदा अभिसार जहा वृहत विहार वन्यौ धीरजु समीर पौन त्रिविध पगत हैं॥

पुष्प मय मंदर सु रचो ललितादि सखी निवध सुगंध छंद जहाँ वे कहत हैं,
जोग मैं सुभोग मैं संजोग राग रंग मय कुंदन मैं चिंतामनि झमकैं लहत हैं।
ता मधि पर्यंक चंद मय काम रतितय प्रेम कौ उदय निस वासर चहत हैं,
रूप रस पान रूप ही कौ उनमाद स्वाद कौतिक अवाध सदाँ विलसैं रहत हैं॥

दोहा—पूरव दिसा दल तीस रैं कैसी मर्दन घाट।
गंगा शत सब तीर्थ रस न्हाय लहत चल वाट॥
केसी के घाट करैं सनान वै पुनि सवै आय पाछै लगैं हैं।
देत दिखाइ रूप गोविन्द कौ गंगादि तीरथ····· रगै हैं॥
अष्ट ऊ सिद्धि नवौं निधि त्यागि कैं रूप कलोलन नैन पगे हैं।
कृष्ण मिलैं जब और भगै सब प्रेम पगैं रति रंग जगै हैं॥

दोहा—ईसान दिसा मै जानियै चौथौ दल निरधार।
कात्यायनी पूजा करी करन कृष्ण उर हार॥

गोपन की कन्या रूप गुण प्रपन्ना प्रेम चातुरी अनन्या कृष्ण देखत लुभाई हैं,
सवन विचारी एक बुधि में प्रबुधि धन्या सम कौंन अन्या देवी पूजा अधिकाइ हैं।
नंद पुत्र पति करि दीजै अन्य रीति भिन्ना नेह नैपुन्या जानै हम ही अन्य काइ हैं,
यही अधिकाइ तेरी अंबिका मनाइ उर हार हरि होहि देखि अखिया छकाइ हैं॥
सब ही कै ऐक बार देखि अभिलाष हरि वसन समेट ले कदंम चढ़ छाऐ हैं,
हाँसि हित चास सव नगन विलोकैं खरी लाज कर साज हसैं वांकी चितै भाऐ हैं।
वोले पिय रीझ इह व्रत कौं न भंग होइ दोऊ कर जोर अर्घ सूरज कौं गाऐ हैं,
ऐसे ओट पाव सुनि भीजी लाज चायन सौं कुटिल कटाछन सौं खीजैं रीझ पाऐ हैं॥

सव ही नै कियो है बिचार डरी व्रत भंग न होइ कहै पिय कीजै।
लाज जो जायगी रूप मिलैगौ जो रूप गयें मुल्होइगी लीजै॥
आखन ही मै ऐकंत भइ न लगै पिय दोस सो ऐसी भनीजै।
इष्ट न वाध लई पिय द्रष्टिन नीचै चली है दीयो अर्घ रीझै॥

सोरठा—हरि रीझै इह वार गोपिन सौं हँसि कैंह्यौ।
यहैं जु रूप निहार तुम विन और न को लखै॥९९
उतर दिसा दल पांचवौ सूरज घाट सुजान।
द्वादस रवि जहा प्रगट ह्वै खो मो सीत प्रमान॥१००

द्वादस सुरवि जहाँ प्रगट बुलाये हरि सित मिस हित कौ सरूप लै दिखायो है,
कालीदह कूदे उहा रहे बड़ी वेर जल सीत रितु जानौ सब ही कै प्रेम छायो है।
वाला जे विलासवती तिनकौं विलास दियौ पराक्रम दिखायो जिन्हें कहतो हँसिभायोहै,
गोपी वै जसोधा रोहनी कूं आदि और सव जिन कह्यो गयो सीत सुत सुख पायो है॥

दोहा—वहै जू सूरज घाट है जहा किरन जल परी।
तहाँ सनान जो कोऊ करैं होइ पुनि देह दरी॥
वायव्या ससिष्टी दिसा ससिष्टौ दल परधान।
कालीदह काली उरग नाथ्यो कृष्ण सु जान॥

वछरा चरावन कौं तीन दिसा जाते ऐक दिन मन आइ चौथी दिसा चलि देखिये, पीवत ही जल वाल वंछ सिजा मुरछा की सोवत ही देखे कृष्ण क्रोध भयो लेखिये। वृछ सब जर गये विष की अगिन लागे ऐक ही कदम्ब वच्यो कौतिग सो पेखियै, अमर प्रंताया ल्याऐ गरड नारद अमृत घटत हासो गयो हौ तातैं रह्यो सुविसेखियै॥ लीनी है कवर कसि पीतांवर वाधि नीकैं ऊपर चढ़े हैं नीकी चढ़न विसेखियै, मुकट झलक मनि कुंडल हलति जात साखा प्रति साखा स्याम सूरज असेखियै। सात ताड़ ऊचै ऐक फुनगीयैं ऐसे लगे ऐरापति चढ्यो इन्द्र सोभि तन देखियै, कूदे हैं उहा सौं मानौ कोटि रवि चंद कूदे धनक जल फेल्यौ सिंध लेखियै॥ सुधा कौ सो घर महा रूप कौ सुभर जाके अधर हसन पर कोटि काम वारियै, देखत ही नैंन जाकी छवि में चिपक बैठैं उठैं न उठाये पीवैं माधुरी सुधारियै। जल छकि गयौ उहां गहरौ न भयौ फेर लहरैं लै रह्यौ चारों दिसा लै सवारियै, देवगन देखैं चढ़े ऊपर विमाननि में सुन्दर कुसुन्दर कौ जुद्ध परयौ भारियै॥ वेई सौ फननि करि ऐसै लपट्यौ है जैसैं स्याम मन्दिराचल सौं वासुक उचारियै, उहाँ सिंधु मथ्यौ इहाँ मथे ब्रजवासी ब्रज नंद औ जसोधा गोपी आइ दौरि सारियै। दौर दौर परैं दह आँसू ही प्रवाह लियैं वही पहुचैंगी पुत्र ढिग इम धारियै, गहि गहि राखैं वलदेव वे प्रताप जानैं देखि माता दुखी कृष्ण सँभरे विचारियै॥ भए विख रूप वाके लगे अंग टूटवे कौ ऐसें छोड़ि दियौ जैसे काल गहि लियौ है, तऊ वानि तामस की दौरि सनमुख आवै लाघवता कृष्ण गहि फन पग दियौ है। जोई फन उठै ताही पर हरि नृत करैं निसार कियौ नथ्यौ उघरयौ जब हियौ है, चार हौं मुकति ब्रह्मा नारद मुनीन्द्र चंद्र पद पाछैं फिरैं पद फन पाछैं कियौ है॥ काली कौं निकास्यौ जल अमृत मै कियौ दिष्ट जीवनी जिवाये मित्र वछरा हू प्यारे हैं, माता हू सौं मिले जैसें प्रान उर आइ खिले पिता उर लाये वलदेव हँस धारे हैं। रूप कौ न भोग भयौ कै वारी वसे छयौ दावानल लागी सब सुंदरी उचारे हैं, बड़े बड़े दृगनिल जौहैं कहै मेटौ दाह दाह मिटि गयौ निजु घर आए सारे हैं॥

दोहा—पछिम दिस दल सातवों जग्य पतनी तहाँ आइ।
दधि ओदन श्रीकृष्ण कौं भोजन दियौ बनाइ॥११०

सुनि जो रख्यौ हौ कृष्ण गुन रूप मन हर्यौ मन वस्यौ रहै उहाँ देह धर लीन हैं, कोउ न उपाय प्रेम ही नें यो उपाय कियौ कृष्ण भूखे भए मित्र कहन नवीन हैं।

भूखे हैं गुपाल दधि ओदन जो दीजैं लीजै भीजे हिये उठी लिये पात्र वे प्रवीन हैं,
मत्त गज राज ज्यौं सनेह गजराज भईं काहू की न रोकी रँही रूप के अधीन हैं ॥
पहुँची हैं जहाँ तहाँ ठाढे हैं गुपाल जहाँ इनै प्रेम बढ्यौ उतै रूप बढ़ि आयौ है,
रीझ दैन ठाढ़े सखा अंस पर भुज दीनें लीनें कर कमल फिरावै नेह छायौ है।
आखिनि सौं सिमटि न माधुरी विलोकत हूँ निवटी न देखन हूँ दोऊ दिस भायौ है,
हृदै ही मैं ध्यान करि त्याइ रूप मिली जब विदा करी गई इम छाया मात्र गायौ है ॥

दोहा—नैरिति दिस दल आठवौं जहाँ होरी रितु रास।
खेलत सत वनिता सहित संख चूड वध हास ॥

शत यूथ बनिता सहित होरी खेलैं कृष्ण रंगनि रंगीन मन वसन नवीन हैं,
केसरि मैं वोरैं औ गुलाल के झकोरैं अंग रूप के हिलोरनि मैं विवस अधीन हैं।
ताही समैं आयौ शंखचूड महा क्रूर दृष्टि देखि उर उठीं गोपी गोविन्द प्रवीन हैं,
आव न तौ दियौ एक मूठी रगैं च मूड मारी परी है निकसि मनि कौतुक नवीन हैं॥

दोहा—सो मनि लै भूषन कियौ डार्‌यो दुष्ट सुमार।
गोपिनि में ऐसें लगै तारति ससि उनहार ॥

सोभित हरित वृंदावन द्रुमलता कुंज फूल लाल पीत स्याम ऊदे सेत जात हैं,
किधौं पच रंग नग खचे हरे सौने ही में मन्दिर जराऊ किधौं धाम बाग भाँत हैं।
ओर पास जमुना सु इन्द्रनील मणि माला पहिरैं विराजै वन झलक अलात हैं,
लहरैं उठत रवि किरननि सौं जगि जगि रंगि रंगि रूप प्रेम पलटे विकात हैं ॥

दोहा—राधा कृष्ण सु अंग के लियैं रूप कौं होय।
जमुना जल सौं श्रुति कहैं मिल्यौ अरगजा जोइ ॥

खेलत हैं रास दोउ ललित लडैंती लाल श्रम कौ प्रवाह ताहि जमुना कहत हैं,
प्रेम ही के तेज रूप नये हैं परस्पर हिलि मिलि जाकौं एक वनिता चहत हैं।
उभौ है सुभाव जाके द्राव एक वपु रूप सेवा ही मैं चाव भाव सुंदर लहत हैं,
रास रस थली स्वच्छ सखै जो तरंगनि सौं गावै मिहीं सुरैं औ रिझावै ही रहत हैं॥
खेलत हैं रास जब ललित लड़ैंती तब श्रम कौ प्रवाह होत जमुना वहत हैं,
सोई वृन्दावन भूमि ही मैं झूमि घूमि रहै आगैं नही जात बात वेद यों कहत हैं।
जाही कौ प्रकास रूप फिरै सातौं दीपनि मैं सेवौ कोऊ कहूँ मोक्ष आदि सो लहत हैं,
वृन्दावन चंद श्रीगोविन्द चन्द्र दंपति है केलि चालनी प्रकास झुलिमिलि रहत हैं ॥
जमुना की पैरी पचरंग हैरी तट ऊपर जराऊ जगमग के निवास हैं,
पहली तौ लाल ही मनिनि दूजी हरी मनि तीजी पीत मनि चौथी मर्कत उजास हैं।
पांचवी फटक मनि जल सौं झलक रहै झांई सौं लहर रंग रगैं वे अकास हैं,
क्रम सौं उतर आवैं दंपति सुमज्जन कौ पांच रंग नमुना होत पंद्रह प्रकास हैं ॥

दोहा—स्याम सजल घन अँग छवि वसन सुरंग सुदेत।
जल सुत भूषन रुचि घनी यमुना वरन सुहेत॥

मर्कत से रंग की सिखा सी एक देह वर द्वादस वरस वैस वडे जाके नैंन हैं,
पहरैं कसूभी सारी मोतिन सों मांग भरी मोती हू किनारी चल जल ओभा ऐन हैं।
कंचुकी कसूभो सोभन उरोज भर जोवन के वोलनि में ऐंन मैंन चैन हैं,
जमुना रसोली सखी प्यारी सौ रसोली भात वात यों कहत प्रभा मानौं हसि मैंन हैं॥
तपन को तप महा जपन को जप जहाँ भान हू कौ भान है न दहै ताप जक्त कौ,
सुख के परम जमुन को दरस राजत है लाजत है काम कोट जोट प्रेम सक्ति कौ॥
भजन कौ सार है परम सार भावना कौ रूप भरि आवै छवि घन अनुदक्ति कौ,
जम दुख दमन को मानो वज्र रूप महा हरि भक्तन को देत महा अनुरक्ति कौ॥

दोहा—जमुना जमुना कहत हीं रमैं जु हियैं सनेह।
बृन्दावन रस रास के झलकैं अंकुर देह॥१२४

दूर है प्रवाह भूनि झूमत लहर आइ मनि प्रतिविंव छाइ छवि सौं रहत हैं,
जल जंत आवत उलट जात साथ मानौं फिर देखि सरसात वात यौं कहत हैं।
जमुना सलिल स्वछ सवै दिस देखियत रूप निजु वन मानौं दर्पन चहत हैं,
वृन्दावन चंद सी लडेती की हँसनि साथ प्रीतम की आँखै खेल कौतिक लहत हैं॥

दोहा—बृन्दाबन अनुराग कौ गोपेश्वर जु उदार।
कृपा उदधि उमडै अधिक वोरैं सुख निधि धार॥१२६

परम उदार रास रस कौ रसिक चारु यहै है अहार रूप निस दिन भायौ है,
मंडल विमल पै निर्रात यों जुगल मिलि झमकि झमकि नैंन चलैं चैंन छायौ है।
गोपिका कुवरि गोपीनाथ जू के पायवे कौं गोपेसुर गोपोरूप होइ कै दिखायो है,
कसक अपार कोऊ पावै कैसे कै विचार यहै उरधार मति रति छवि छायौ है॥
प्रेम की चाह भई सिव कैं तब आइ बृंदावन गोपी भई है।
रास मै लेत मसाल दिखावत उज्जल जोतन चंद मई है॥
रूप की काँति असंखि पराक्रम न्यारी न्यारी कै दिखाव दई है।
पीवत जीवत नैंन भये मति जंत्र बजावत कोक कई है॥

दोहा—वेष्टित कालिंदी कही मालावलि सु प्रवाह।
अधिष्ठा शिव या धाम कौ गोपी रूप सुवाह॥
कमल सहस दल जो कह्यौ जाकी सात आवृत्ति।
प्रथम आठ सोलह वसीत चौसठ क्रम सौं कृत्ति॥१३०
पहली आवृत्ति आठ की सो सव वर्नन कीन।
दूजी पर सव वन कहे मधुवन आदि प्रवीन॥१३१

तीजो व्रज मरुजाद लौं चौथी सक्ति अचिंत ।
चौथी ही जौं पाँचई छठी सातई मिंत ॥१३२

है चौरासी कोस मैं सहस्र दलनि कौ फेर ।
जिन पर व्रज अस्थल सबै लीला ललित सुहेर ॥
व्यापक अव्यापक सु व्रज अम्रजात सम्रजादि ।
है चौरासी कोस ही अखिल ब्रह्मांड मइ आदि ॥
ज्यौं जसुधा खिजि कृष्ण कौं लई दासरी हाथ ।
बाँधन लगी गुपाल कौं घटो अँगुरी द्वै साथ ॥
सब ब्रज पुर घर घरन सौं दाँवरि लई मगाइ ।
बंधत बंधत घटती रही द्वै ही आँगुरि भाइ ॥
माता कौ श्रम देखि कै भए प्रसन्न गोविंद ।
पहिली ही सौं बंधि गये उदधि रूप नेह चंद ॥
सूछम हू असथूल हू दियौ दिखाइ निज रूप ।
सो न बंधे विश्व रूप ह्वै बंधे अँगुरि द्वै जूप ॥
जैसें ब्रज व्यापक सबै है चौरासी कोस ।
पदम पत्र पर यौं लसै बृन्दावन रस तोस ॥
आवृति सातौं एक ही कमल जोग में जान ।
आकृति सौनै की लगै सहस्र दलनि पहिचान ॥
वन वन खेलत कृष्ण जू बीच बडौ विसतार ।
कोमल चरननि कमल लखि खुलनि मुदनि उनिहार ॥
जा वन सौं श्रीकृष्ण जू गयौ चहै वन और ।
उठै जु दल वे मिलत हैं ए आवैं जिहि ठौर ॥

जो या वन की भावना करत रहत है नित्त ।
जिन के हिय मैं कृष्ण जू देखत प्रेम सुचित्त ॥
एक रूप बहु रूप है इहि विधि व्रज बर जान ।
ज्यों अनेक जोगी लखैं एकै कृष्ण सु जान ॥१४४

प्रथम आठ सोलह कही वन उपवन जा माहि ।
आवृत्ति सातौं पर लसैं आवर्न सात उछाह ॥
जितेक तीरथ अवनि पर जाकै अंतर भूत ।
फैलत है त्रैलोक मैं सिमटत याही सूत ॥
नदी सरोवर कूप सब गंगा सत सत धुनि ।
पग पग पर तीरथ अधिक यह व्रज दिव्यता चुनि ॥

पूरव आठौं दल कहे आवृत्ति सात बखान।
मद्धि करनिका मूल है ताहि सिंघासन जान ॥१४८
वहै केसरि गिरदहै कुँजै पांच हजार।
दिव्य विहारनि सौं रंगी छिन छिन उपजत चार ॥
ते सब आगैं कहैंगे अष्टकाल में जान।
अब सातौं आवर्न कौं नीकैं वरन बखान ॥१५०
कारन ब्रह्म सरूप कौं औ राधा गोविंद।
जिनके नख चंदननि तै उपजत जोति सुछंद ॥
कहै वराह जु संहिता देइ दमामौं आदि।
श्रुति सुधा ज्यौं श्रवत हैं वरनन यहै जुगादि ॥
जिनकौ महल विलास जुत तेजौ मय निरधार।
कोटि रविन ससि सौ सरस झलकत वार हजार ॥१५३

कोटि रवि कोटि चंद कोटि दामिनी कौ कौंध मिलि सम ह्वै प्रकास स्वर्नकौ महल है, कौस्तुभ करोर पचिरंग के सुखचे नग कोटि दीप मालिका के कौंध वे सहल्ल हैं। जा मैं राधा गोविंद विराजैं ऐसे लागैं जैसे सीसे में ह्वै दीप नेह पूरन गहल हैं, चितै चितै हसैं जो महल सुधा ह्वै कै हँसै छूटत फुहारे जैसें रूप के चहल हैं ॥

दोहा—ललितादिक सब सखिन की पहुच नही तिहि ठौर।
भाव रूप कीन रम प्रिय ह्वै करि पहुचैं और ॥१५५
पाँच वरस की बैस वे तदपि भुराई जोइ।
दंपति सुख हि विलास हित हँसि बूझत सुख होइ ॥

दरवाजे हैं चार सुचार ही गोंपी वें द्वारैं खरी रहै रूप भरी।
जाके रूप की भासैं हजारैं जहाँ मनि दीपति ह्वै छवि साचै ढ़री ॥
मुसिक्याइ उठैं जो समुद्र प्रभा के न पावैं कहूँ रस सोभा करी।
गोविंद चंद सुराधिका की वे तौ केलि लखै सब ह्यांही अंरी ॥

चौखट हीरनि की बनी है किवार नग लाल।
बीच सेत स्याम नग द्वै मानौ नैंन विसाल ॥१५८
देहरी पीत सु मनिनि की पैरी मर्कत साज।
फटिक मनिनि की कोर है कोटि काम जै आज ॥
ताके माझ सुजोग मै स्वर्न सिंहासन जान।
कलप द्रुमनि कौं कलप द्रुम बरषत फूल बखान ॥१६०

करनि का सु अग्र योगपीठ जो सिंहासन है स्वर्ण मय जराऊ अष्ट कौंन यौं प्रधानियैं, जेते नग लगे पर दीप मालिके मे बापर बिछौंना ताकी उपमा न आनियैं।

चितै चितै हसैं लसैं सब बन चढ़ै रस ढिग आठौं सखी छकी सखी ह्वै सु जानियैं,
ता पर गोविन्द राधा किये गरवाँही सोहैं पियैं रूप रस प्रेम कौतिक बखानियै ॥

सनमुख राजत है ललिता इम वाँय ही कौंन कौं स्यामला सोहै ।
छवि उत्तर यौं श्रीमती जु विराजे इसान दिसा हरि प्रिया जु जों है ॥
श्री विसाखा जू पूरव और लसै श्री सेव्या जू अग्नि हो कौंन कौं मोहै ।
जै श्री पद्मा जू दछिन ओर भलैं वह भद्रा जू नैरितु ओर दो है ॥

दोहा—ता ढिग आठ जु ओर हैं चन्द्रा श्री कौ आदि ।
झमकत रूप जु परस्पर सोलह किरन अनादि ॥
चंद्रा श्री चित्र रेखा जहाँ सोभ चंद्रा मदन सुंदरी जू विराजै ।
श्रीया च मधुमति जू लसै हैं वसैं हैं भलै ससि रेखा जू आजै ॥
श्री हरि प्रिया जू हु आठवी सोल्हौ किरननि राधिका चन्द्रमा गाजै ।
एकै चकोर सु कृष्ण करोरन देखन देख रहैं रस साजै ॥

आठौं बीजुरी सी नाना सखी कौंधति हैं मध्य महा घन बीजुरी के कौंध छाये हैं,
चन्द्रमा से सूर से नछत्रनि करोरनि से रूप सौं चलै प्रकाश त्यों सिमट आए हैं ।
कैस्तुभ सु मनि नख चन्द्रन की आवलीनि ग्रथी है जराऊ दीप मालिका सी लाए हैं,
ललितादि आली कर देत ऐसी आखैं जासौ देखी जात ऐसी छवि दंपति छकाए हैं ॥
अष्ट सखी अष्ट वर्न अष्टरंग अष्ट तेज अष्ट भाँति नगनि जराऊ भीत जानियैं,
ओर पास माल वलि मणि ए प्रदीपत है दर्पन से प्रतिविंव रूप आखैं सानियैं ।
जा के दरवाजे चार महा महामणि खचै आवैं जामैं जोई जो झमक उठै मानियै,
द्वार पर ओपी गोपी ओप ओप उठै अंग मणिन मैं झमकैं ज्यों झमकै मनि आनियै ॥

दोहा—चौखठ लाल सुमनिन की पट हीरन के जान ।
देहरि पीत जु मनिन की पैरी हैं शुभमान ॥
उतरत चढ़त जु पैरियनि ऐसी सोभा होइ ।
पाँव रंग की एक वे मनों हजारनि जोइ ॥
ताके बाहर जानियें जोग पीठ चौफेर ।
चार प्रकार सुलोचना रूप लपट हँसि हेरि ॥
गोपी सनमुख है कही पीछैं मुनि चाहैं जु ।
दाहिन श्रुति देवी कही देव देवि वायैं जु ॥ १७०

सनमुख गोपी विराजत हैं एक लक्ष्य सुलक्ष्यन रूप भरी है ।
सुढार वड़ी वड़ी आखैं ढरारी करारी चितों न अन्यारी करी हैं ॥
सु एक ही वेर हसैं जु कपोलनि फूलैं कटाछिन झूलैं धरी है ।
षरे हैं अरे हैं गोविंद चकोर ह्वै चंद घनें न को जोन्ह अरी हैं ॥

दोहा—अपनें अपनें रूप सौं करैं प्रसन्न गोविन्द।
लोचन कमल चढ़ावहीं औ उरोज फल कंद॥
द्वै लछि हैं श्रुति देवी सवै जिनि नूतन हैं अभिलाख नवीनी।
कृष्ण विलोकत पूजा करैं दृग कंजनि भीर परैं रस भीनी॥
अर्पन होत उरोज जवै फल सूचिम हैं कटि चाल अधीनी।
गावति हैं सुर जी लली यैं मुसिक्यायें नचै नथ मोती प्रवीनी॥१६३

दोहा—देव कन्यका हैं घनी जोवन रूप निधान।
विजुरी सी कौंधैं खरी निरमल घन छवि दान॥

वीजुरी सी छवि कौंध्यौं करैं नित ही नित गोविंद से घन पायैं।
चारु सु सोभा की धारा ढरैं वग पंकति मोती की मालनि छायैं॥
गाजत हैं विछिया किंकनी कल जोवन के मद सौं चलि आयैं।
रूप बढ़ै जो चढ़ै रस खेत कटाछै हँसी दृग सौं दृग लायैं॥

दोहा—नीची दिष्टनि सौं लखैं मुनि कन्या गोबिंद।
एक दिष्ट इक चित भई वरन सुधा मुख चंद॥

चन्द्रमा से विराजत है जिनके मुख दर्पन सी मनि भूमि पै राजैं।
जब चाँदिनी सी प्रति विवै प्रभा हैं कला हैं घनै घन रूप की छाजैं॥
रुष एक ही वेर वे होत हजारैं करोरनि की छवि साजैं।
जे वै माजै कटाछि वे आंजें हैं नैंन गोविंद की आखि लगी आवै आजैं॥ ७७

करनिकाके चारौं ओर वाग महा रूप ही कौ चारौं तपंते में गोपी चार भाँति कही हैं, जिनके हजारैं रंग कौंन कवि कहि सकै कछु कह्यौ जात द्रुम साखा इम लही हैं। कोऊ लाल मनि की सी आभा कोऊ नीलमणि कोऊ ऊदी मर्कत सु स्वछि लछि चहीहैं, कोऊ हैं हरित स्वेत ताराकांति चंद्रकाति रविकान्ति कोऊ सोभा ठौर ठौर गही हैं॥ कोऊ वीजुरी सी कोऊ सोभा ही सरीर धरैं कोऊ है जराव जैसी चातुरी के रूप हैं, कोऊ है सिंगार सखी कोऊ स्वछ लंछा कोऊ रूपवान अंछा कोऊ कोटि काम भूप है। कोऊ रस सिछा कोऊ छवि की कलप पंछा कोऊ सो इंद्रानी लंछा सुन्दर अनूप हैं, कोऊ रति प्रभा कोऊ सावित्रीजाकी आभा कोऊ है उमासी कोऊ रमा कल जूप हैं॥ कोऊ हसि ही कै रंग कोऊ है विलास रंग कोऊ संझा फूलै रंग कोऊ हैं आनंद सी, कोऊ जग मग रंग कोऊ हैं जलज रंग कोऊ है कमल रंग कोऊ चंपा चंद सी। कोऊ महा मोहै रंग कोऊ देखे जोहै रंग कोऊ वातैं कहै रंग देखि रूप कंद सी, केतिक सरूपन के रंग एह-जारैं कहूँ दामिनी ये कौंधैं सीखी जिन तैं सु छंद सी॥

दोहा—मुनि देवी श्रुति देवि का देव देविका जान।
चौथी गोपी जानियैं सवै गोपि पहिचान॥

आवर्न तीसरी जानियैं स्वर्न कोट चहुँ फेर।
रवि ससि कोटिनि झल मलैं चार दरवाजे हेर॥
हीरन की चौषठ वनी दर्पण वनै कपाट।
फटक मनिन देहर वनी वढ़त रूप की चाट॥
सो यह मन्दिर रूप कौ वरन कीयौ उच्चार।
ताके माँऊ सु द्वार पर चारि पारषद चार॥

पश्चिम सु द्वार है सी दामा सो विराजमान उत्तर सुदामा द्वार सेवै अनुरक्ति है, तैसें व सुदामा द्वार पूरव कैं सोभित हैं किंकिनी सु चौथे द्वार पछिम सु उक्ति हैं। तैसेई समान वैस तैसे अलंकार वेस पौरष हू कृष्ण कैसैं सवै गुण जुक्ति हैं, चारौं पारषद चारौ द्वार चारौ दिसा सोहैं सुंदर स्निग्ध सोभा प्रभा रूप भुक्ति हैं॥

दोहा—आवर्न सु चौथे जानियैं सोभा प्रभा निकेत।
सुरता निरता ऐ सखी चारि परिषद हेत॥
ता के फेर सुकोट है महा प्रकास उदार।
चार दरवाजे पदममनि जटित महा झमकार॥
ताके माँझ सुपीठ है सोइ सिंहासन रूप।
स्वर्न कोट मन्दिर सुविधि जाके गिर्द अनूप॥१८८

ता मधि विराजैं कृष्ण लियैं मित्र मंडली सु तारन मैं चंद्र ज्यों कमल रवि हैत है, नगनि में जैसें मद्धि नायक विराजत हैं नैननि में पुतरी ज्यों मूरत समेत है। रूपनि में जैसें महा रूप यों विरज्यों करैं देवन में विष्णु जैसें उपमा निकेत हैं, सवनि के नैननि कौं दोऊ नेंन सीचत हैं वहुतै चकोर जैसें सुधा चंद देत है॥ कौंन कौंन मित्र स्तोक हैं सुभद्र आदि शृंग वेत वीना वैन कृष्ण से सुवेस हैं, रूप ध्यान जुक्ति गान प्रेम उनमत्त रहैं देह में अभिन्न हरि जीवन सुदेस हैं। अष्ट साति व्यापे रहैं भीजे रहैं रीझ रहैं स्यामै स्याम छवि मै कलोलै रति येस हैं, चितै चितै पीवैं रूप हितै हितै रस रूप प्यासेई रहत ज्यौं ज्यों भरैं वे अवेस हैं॥

दोहा—नंद जसोधा पिता पितामह जहाँ वसत परजनि।
रवि चंदनितैं कोटि विधि मन्दिर महा प्रसंनि॥

कैसे है जसोधा नन्द कृष्ण ही में मन पन चंद सौ सुमुख देखि सिंधु ज्यौ वढ़त हैं, उमगि उमगि आखैं अंगनि लिपट रहैं छौउँ नही माधुरी ए प्रेम यौं पढ़त हैं। देख तहाँ देखत वढ़त रुचि रचना सी चाह मीठी ह्वै ह्वै जानु कौतुक गढ़त है, सुंदर सिंगार करि देखि कै दिठौना देत रूप कुरु खेत जैसें छव वे चढ़त हैं॥

सुधे हैं नद जसोधा हू सूधी हैं काहे तैं कृष्ण हरे मन देखत।
जानी यैं वात जसोधा हू कारी हैं कारे हैं नंद सनेह विशेषत॥

कोटि गुन मनि मर्कत ते कारे हैं पूतरी मेंनमें रूप परेषत ।
कोऊ न मानौ परषौ छुटै घर कान्ह कै साथ भयो घर लेखत ॥

दोहा—तहां सु मर्कत मनिन कौ कोट भयौ चौ फेर ।
कोटि चंद ज्यों ऊजरी झाँई झलकत हेर ॥
ताके माँझ प्रसिद्ध है वहै सु सुरभी वृंद ।
तिन्हैं चरावत प्रेम सौं रूप भरे गोविंद ॥
एक दिष्ट गोविंद दिस एक दिष्ट तिन ओर ।
मन अटक्यौ हरि रूप सौं चरत फिरत जिहि ठौर ॥
कैसी है धेनु सु नेंननि में हरि झूल्यौ करै वह रूप की सोभा ।
लै त्रन भूमि ये दिष्ट गोविंद में सुरति लगी रहै प्रेम की गोभा॥
जो न लखैं द्रुम ओट गुपाल कौं सर्प डसी सी ज्यों वावरी ओभा ।
भूलैं वैं वंछ चरैं न कहू त्रन साँवरी मूरति में दृग लोभा ॥

कारी कारी तेतौ वेतौ झुंड वाँध न्यारी चरैं लाल न्यारी सेत न्यारी पीरी हरी जातहैं,
कोऊ न मिलत काहू झुंड पचरंग रूप कंचनी सी भूमि रज कंचन लजात हैं ।
उडत खुरुन खुद कृष्ण अलकनि पर वीजुरी से कौंध वे प्रमानु जव जात हैं,
गोपीन सहत रास मंडली की कहा कहौं सुरभी न मध्य काम रति हू लजात हैं ॥

दोहा—चारौ दिस आवर्न में पारजात वन जान ।
कोटि कल्प की सक्ति है एक कलप में मान ॥१९९
सब ही जु गंधन कौ समुचै फल फूलन ऊपर भूषन को हैं ।
पल्लव जाके सु सौंन जुही से सुझाई वे मोती की पानिप सोहैं ॥
छोटे ह्वै जाँहि बड़े छिन में मही छ्वै कै अकास सौं वात नजोहैं ।
पीरे ह्वै जाँहि हरे हू हैं सेत वे स्याम हूँ लाल हूँ ऊदे हू मोहैं ॥

दोहा—जा वन में वे धेन हैं हरे चरैं त्रिन जाय ।
संग गुपाल चरावहीं निरखत परसत आय ॥२०१
सुरभी जु चरैं जहाँ जाय भलैं त्रन पावैं महा रस के सरसैं ।
जल पीवैं सरोवरी सोभ महा मधु हैं जु भरी छवि के वरसैं ॥
उमगैं जल वृछन के फल फूल सु आवैंगे कृष्ण कहैं दरसैं ।
करैं पछी कुलाहल दूर ही तें घनघोर सौं भौंर ज्यौ ह्वै परसैं ॥

हरे भरे सौने कौ सु कोट ही भरत प्रेम आठौं दिसा दिये चार द्वार द्वार रूप के,
वार पार स्वच्छ द्रुम भूमि लता हरे सव भरे आवैं सोभा के समुद्र है अनूप के ।
जो कोऊ निकट आवै सोऊ हरयौ ह्वै ह्वै जात हरि झाँई दौरत अकास ही लों जूपके,
हरे ही लगत कृष्ण मित्र मण्डली सहत आवत निकट वढ़ै झमकैं सरूप के ॥

दोहा—हरित जु या वर्न के चारिद्वार हैं जान।
चतुर व्यूह भगवान हैं तिनके आलै मान॥
तिहतर बरन सुपीठ मैं ललित चौंतरौ जोइ।
स्वरन ही मंदिर जोग मैं जग मग जग मग होइ॥
तापर परा आनंद मय वासुदेव भगवंत।
कारण आदि अनंत है सोभित सरस लसंत॥२०६

इन्द्र नील मणि घन स्याम से सजल नील कुंतल ललित मनि कुंडल कपोल हैं,
पद्मदल से विसाल अच्छ लछ सोभा भरे नैह सौं ढ़रारे अनियारे रस लोल हैं।
चारि है भुजा सुचारि आयुध सु भक्ति हित संख चक्र गदा पद्म लध्व तेज डोल हैं,
स्वरन सौ सिनिग्ध जग मग ही पीतांवर है भूषन की कहै कौंन उपमा न मोल हैं॥
सुजस प्रधान रुकमनी सत्यभामा स्यामा नागनजिती सुलच्छ मना महा रूप है,
जैसें मित्र विंदा है सुनंदा जंववान सुता आठ इ सुसीला हरि प्रिया प्रे अनूप है।
उद्धवादि पारिषद ऊधौ एक नेत्र उभै तिन करि देखै कृष्ण भक्ति कौ सरूप है,
चन्द्रमा ज्यों हरि यों प्रभा ज्यों आठौं रानी सोहैं भक्त ए चकोर ज्यों वढ़त प्रेम जूप है॥

दोहा—उत्तर द्वार उद्यान दिव्य हरिचंदन जहाँ वृच्छ।
चन्दन सुजस सुगंध के कलप जानियौ लच्छ॥२०६
ता आगैं दछिन दिसा स्वर्ण पीठ़ है थान।
ता में रतन प्रभा षिच्यौ ल सुमंड मान॥२१०
रतन सिघासन जोग में ता मधि सोभा देत।
रेवती देवी संग यौ है संकर्षण हेत॥

उज्वल फटिक हू तैं है असंख्य गुनैं स्वेत अरुण कमल दल नैंननि विलास है,
नील पट धरें हैं स्निग्ध नभ चंद जैसें मुख झल मलै ज्यौं सुगंध स्वास हास है।
कुंडल सु गंडनि चलत महा वीजुरी से सेत घन मैं ज्यौं कौंध रूप को उजास है,
आयुध सुहल वाँही मूसल कै वल कलक पतत्रिलोकी एक भक्ति प्रिये वास है॥

दोहा—संतान वृच्छ कोमल जहाँ मणि मन्दिर तहाँ जोइ।
ता मधि मणि माणिक कौ जु सिंघासन उज्जल होइ॥
ता पर श्री पद्युम्न जू रति देवी ता संग।
सुन्दरता जग मोहनो रस संग्रह कौ रंग॥२१४

दिव्य अलंकृत भूषन हैं अंग माल नुलेप सुगंधन के।
जगमोहनता जु छटा वरखैं हरषैं जु ईस्वर्ज सु छंदन के॥
ब्रह्मादि मुनीन्द्र सुचंद्र नवें वांध राखे प्रताप सु वंदन के।
मधुराइ सुधाइ सुहास विलास कटाच्छन मैं रस फंदन के॥

दोहा—पूरव द्वार सुरम्य है देव द्रुमनि करि स्वच्छि ।
दिव्य पीठ मै चौतरो मंडप स्वर्न सु अच्छि ॥
ता मधि दिव्य सु रतन मय ललित सिंहासन जान ।
श्रीमति ऊषा सहत ही श्री अनुरुद्ध समान ॥
सुंदरता घन स्याम सु आनन है जु स्निग्ध कुंतल सोहै :
नील सु उत्पल से दृग चंचल सुभ्र सु उन्नत नासिका मोहै ॥
बाकी हैं भोहैं कपोल सु उन्नत कुंडल हैं मनि दीपत जोहै ।
मंद हँसी प्रिये संग लसी अनुरुद्ध सु ऊषा की सोभाकौं कोहै ॥

दोहा—वृन्दावन आवर्न के चारि दरवाजे जान ।
चतुर व्यूह तहां पौरिया कहे वाराह वखान ॥
हरित कोट मनि लाल के दिपै दरवाजे देखि ।
फटिक मनिन के पट लगे चौखट कंचन लेखि ॥
चारि सु द्वार वैकुंठ है चारि ही ईश्वर मान ।
ऊरध नीचै द्वै वनैं ऐसैं निहचै जान ॥२२०
सो ऊरध सव तैं रहैं अंतरिच्छ भगवान ।
विष्णु सुरेस अनादि हैं चिद सरूप सुखवान ॥२२१

आदि हैं अव्यक्त नित्य अक्षर अव्यय तो सयुर्ज है माधुर्य्य नील कुंतल लसत है, चीकनें सुकेस अरविंद दल नैंन वड़े क्रीट कुंडलनि में न रंग से वसत है । चार ही भुजान चार आयुध सुभक्ति हित लक्ष्मी सुरस्ती सोभाशक्ति ए प्रसत हैं, मंद मंद हसत कपोल स्वच्छ आरसी से भक्त के अनुग्रह कृपाद्र दरसत हैं ॥

दोहा—ता नीचैं पाताल मैं आधार सक्त हैं ईस ।
मणि मंडप कै वीच जू सिंहासन उज्जल दीस ॥
ता मधि यों जु विराज ही अनंत रूप भगवान ।
अनंत ही चेष्टित को गनें पार न पावै आन ॥
आवर्न सु ताकैं कोट है भटिक मणिन कौ जान ।
दर्पन द्वार सु चार ईं चार पारषद मान ॥

उज्जल कोटिक चंद्र हूँ सौं महा ऊँचौ आकास सौं वातैं करै ।
स्वच्छ महा जहाँ भीतर के विभू वाहर भासत हेत धरै ॥
सातौं आवर्न कौ दर्पन ज्यौ वढ़ै भाव उछाह सु रूप भरै ।
चारौं ही द्वार महामणि कै कहे वातैं ज्यों प्रेम की पैठ ढ़रै ॥

दोहा—ताकैं वाह्य सुफटिक में विस्तार मनोहर भूमि ।
प्रतिविंवत चारौं दिसा महा उज्जल भूमि ॥

उद्यान सुवर्न पुष्पन भरयौ सौरभ महा प्रकास ।
मोहनता महा जग मगै मोहनता कौ वास ॥२२८
ता आगैं सुरगण सवै इंद्र सुविधि महादेव ।
दिव्य अंग सौंदर्ज सौं भूषन वाहन भेव ॥
प्रार्थना पद अंग भज करत भावना नित्य ।
दछिन दिस मुनि वृंद हैं सुद्ध सत्य वर मित्य ॥२२९

पूरव दिस योगीन्द्र हैं सुक सनकादिक आदि ।
आतमाराम चिद मुक्ति हैं तत्फुर रूप युगादि ॥
हेतु भक्ति सब करत हैं काम भाव ह्वै नित्त ।
स्याम भुजा उर पर वसैं कृष्ण लालसा मित्त ॥
ता आगैं वैस नव सवै जिन जिन छक भगवान ।
प्रल्दाद सु नारद आदि दै जनक सु राजा जान ॥
मंत्र सु चूडामणि भजै कारन मंत्र सुराज ।
सब मंत्रनि में जोव है कृष्ण मंत्र सुख साज ॥

सो धन है मन कौं जब तैं तब तैं गुरु काननि माँझ सुनायौ ।
नैंन हूँ सोधे हैं सोधे हैं कान सु देख्यौ सुन्यौं इक कृष्ण ही भायौ ॥
दैन मनोहरता दस आठ है अछर है छरता लै वहायौ ।
कृष्ण न छोड़ै कदाचि वा दासकौं मंत्र सुन्यौं जिन कान लगायौ ॥

दोहा—ताके माँझ फटिक मनि ताकौ कहियै कोट ।
आवर्न सातवें कौ जु वह चार चतुर भुज ओट ॥
चारु वरन उनके जु हैं रक्त पीत अरु स्वेत ।
कृष्ण सु चौथौ जानियैं सु ए दरवाजे हेत ॥२३७

रक्त वरन पश्चिम दिसा पूरव विष्णु सु गौर ।
दछिन कृष्ण सु जानियैं उत्तर पीत सु और ॥
चार चार भुज सवनि कैं आयुध चार प्रकास ।
संख चक्र गदा पद्म हूँ चारौ दिसा उजास ॥
ऐश्वर्य्य भाव सौ मंत्र कौं जपै लगायें चित्त ।
रहै जु छटैं आवर्न में चतुर व्यूह ढिग मित्त ॥
दास भाव करि मंत्र कौं भजै जु चित कै चाय ।
आवर्न पाँचवें में रहै रक्तक पत्रक भाय ॥
मित्र भाव करि मंत्र कौं जपै सु निहचै भाय ।
आवर्न सु चौथे में रहै स्तोक कृष्ण ढिग आय ॥

वात्सल्य भाव करि मंत्र कौं जपै सु ऐसी रीति ।
चौथे ही आवर्न में नंद जसोधा प्रीति ॥
कृष्ण आप पति मानि करि जपै मंत्र जो कोइ ।
श्रुति देवी देव देविका तिन में सोभित होइ ॥
सखी भाव ह्वै मंत्र कौं जपै सुरस परवीन ।
आवर्न दूसरे में रहै ललितादिक नवीन ॥
हसै हसावैं परस्पर श्री राधा गोविन्द ।
नैननि की झर माधुरी पीवै रस आनंद ॥

पान खवावत में लड़कै लड़कै हैं वे रूप सु लाड पना मैं ।
क्यौं उझकैं अखियाँ वे उहाँ लगी चारि चितौन नचैं रचना मैं ॥
पानि पवे नथ के मुकतनि की दौरैं कपोलनि के हँसना मैं ।
पीवैं सखी रसके चसके रस आरसी प्रेम कटाच्छै हैं जामैं ॥

दोहा—परा अवधि रस माधुरी कृष्ण रूप आनंद ।
ललितादिक सरनै अधिक पीवै कृपा सु चंद ॥
कहे सु सातै आवर्न न्यारे न्यारे ठाँउ ।
न्यारे न्यारे रूप के न्यारे न्यारे चाउ ॥
आवर्न कोट ए राजे कहे ते ऐस्वर्ज सुभाय ।
अचिंत शक्ति रस माधुरी ताकौं चित्र सुनाय ॥२२०

ज्यों परगट लीलानि में नंद यसोधा भाव ।
तैसै ही आवर्ण में सुद्ध प्रेम कौ चाव ॥
अपने ही घर सौं कृष्ण जात चराव धेनु ।
चारिजाम वन में रहैं फिर आवत हँस दैन ॥
जैसैं सीदामादि सब मित्रनि सौं आसक्त ।
समैं समैं छवि में पगे लियें कृष्ण अनुरक्त ॥
जैसें श्रुतिदेवीनि सौं मुनिदेवीनि सौं जान ।
अभिलाष गोपिकाहून सौं देव देवी पहिचान ॥
तैसें सिधि गोपीनि सौं चन्द्रावलि हू आदि ।
पदमादिक सब सहचरी प्रेम जु परम जुगादि ॥२२५

ललितादिक सब सखिनिकौं को करि सकै वखान ।
राधा जिनकी मुकुटमणि रूप गुननि की खान ॥
जाकी वंक विलोकतैं कृष्ण न पावै जान ।
रोम रोम में रमि रही मुरि मुख की मुसिक्यान ॥

जाकैं जैसी भावना करत भावना सिद्धि ।
जेतेई धर रूप वे जाइ देत सुख रिद्धि ॥२५८

मूल रूप राधा निकट ज्यौं व चंद्रमा एक ।
राधा जैसें चाँदनी औ उजरई अनेक ॥

यहै कहै सब वेइ राधा है रासेश्वरी ।
और सुनी ही कोय राधा विन रस ही नहीं ॥२६०

रूप सक्ति श्रीकृष्ण की सबकौं दरसन हेत ।
जैसो जाकैं नेह रति तैसी आखै देत ॥
राधा कृष्ण सरूप के सितादिक हैं नैंन ।
नैननि कौं नैना लखैं वढैं रूप के चैंन ॥
सो यह वर्न सखीनि कौ आगैं बहुत विशेष ।
अब श्री वृंदा विपिन के द्रुम पछी अवरेष ॥
सो सातौ आवर्न में फूल रहै विस्तार ।
वहैं कमल की केसरा जेती कुंज उदार ॥
चिंतामनि सब भूमि है देखत कंचन रूप ।
वृक्षनि प्रति प्रति विव सौं भयौ जराव अनूप ॥
अब श्री वृंदाविपिन के चारौ अद्भुत रूप ।
एक ऐश्वर्य्य माधुर्य्य इक इक द्रुम खगनि सरूप॥
ईश्वर्य्य उपासिक जिनहीकौ ऐश्वर्य्यनिकौ वन जान ।
माधुर्य्यनि कौ माधुर्य्य है इह अद्भुतता मान ॥
पात पात पाछे कहै ब्रह्मांड चतुरभुज जान ।
श्री भागौत पुरान में श्री शुकदेव वखान ॥
सब अवतार जु वसत है वैस पलट वन माहि ।
कहैं जु आदि पुरान यौं सब सोभा अब गाहि ॥
माधुर्य्य सु जाकौ मूल है लता द्रुमन खग बोल ।
गऊ गोप गोपीन संग कृष्ण सु करैं कलोल ॥२७०

सरव नहीं ऐश्वर्य्य की छके प्रेम के संग ।
ईश्वरता सब करत है अद्भुत नाना रंग ॥२७१

वृन्दाबन की माधुरी वृंदादेवी रूप ।
जो वृंदा कृपा करैं वन दीखै परम अनूप ॥२७२

छंद—नमो वृंदे वृंदाविपिन तोषनीयो खनी कृष्ण राधा अनंदे ।
रास विधि मंडित करो सखिनि सिख नृत्य लावण्य मुख उदित चंदे ॥

हास लास नभौं विलास दृग चास हित हित भरे जुगल खेलत सुछंदे ।
कौंन परवेस तुव कृपा कृति विना ह्वै रूप के बाग में प्रेम फंदे ॥२७३

प्यारी जू की मनसा कि रसना जनम लीनौं किधौ प्रीत मुरति को सूरति सुधारी है, प्रेम महा मादिक की स्वादिक बनाइ बिधि रूप तोय सींच कीनी रूप ही की बारी है। छबि है सुभाव जाकौ रस ही की आगार कि लेत उपजाय वृंदावन सोभा सारी है, वृंदावन देवी सुदेवी प्रिया प्रीतम की नैननि रचावै रस की अनंद कारी है ॥

दोहा—अब श्री बृंदा विपिन की स्वछि सुभगता देखि ।
कित हूँ देख्यौ रूप वह दीखै दर्पन लेखि ॥

छप्पै—कुंदन मृदुल सु फैंन जटित नग धरन परस्पर ।
प्रतिबिंबै जुत माल लता प्रतिकुंज सघन वर ।
फूलन संकुल लब्बित जहाँ भरी रहत एक रस ।
खग कुहकत कल बोल केलि के मंत्र वेस वस ।
त्रिविध समीर वहै जहाँ वृंदाविपिन सुछंद ।
विहरत लाडिली लाल जहाँ बँधे प्रेम रस कंद ॥

कुंजन अनंत स्वच्छ रँग नाना भाँतिन के सखी हू अनंत ऐपै एक से दरस हैं, मंजुल सरीर भीर मंडली सघन धीर मध्या प्रिया प्रीतम जु रूप के वरस हैं । दरसत है ऐसें जैसें सुख सब ही कौं एक लच्छन में एक एक एक से परस हैं, कहाँ लौं प्रकास कहूँ विंदावन चंद छवि प्रीति जुत वैकुंठ उतपात न सरस हैं ॥

दोहा—ऐश्वर्य्य माधुर्य्य पीछैं कहै अब द्रुम खग मुनि लेहु ।
सुमिरत वन की भाँवना प्रगटत दिविता देह ॥

सवैया—कैसे तमाल सु स्याम ही स्याम हैं देखैं वनैं घनस्याम जू आऐं ।
मानौं घटा अवनी उतरी है व फूले मनौं चपला चमकाऐं ॥
गंध उड़ै मानौं पौंन चलैं भए वावरे भौंर फिरै भरमाऐं ।
दंपति दौरि धसैं बन मैं मानौं राधिका के मुख चंद सुहाऐं ॥२६६
वोलत पक्षी सु जोराव के जोरा वे राधिका कृष्ण कौ रूप लियैं ।
सारिका ओ सुक की चतुराई विहार की बातैं सिहान पियैं ॥
लेत बुलाइ गोविंद वे आवत राधिका कै हँसि हाथ दियैं ।
रूप के कौधैं उद्धयौ चाहैं हाथ सौं यौं न उडै छवि बैठी हियैं ॥

राधे श्री गोविंद एक दिन वन ओर देखैं चंद से आनंद सेवे वृछ है असेखे हैं, प्यारी जू के पाइन सौं छियो गयौ नैकु पेड फूल उठ्यौ सौनैं कैसे फूल झरैं लेखे हैं । जैसें दूसरे सौं पाय लग्यौ पीक डारि वापै फूल्यौ मानों हस्यौ हँसे दंपति विसेखे हैं, निकसैं न दोऊ ह्वांते भाये हैं अशोक द्रुम फूले तें न रहैं राधे सींचे दिष्ट देखे हैं ॥

दोहा—अशोक वृक्ष के मूल सौं लगै पश्चिमी पाइ।
फूल उठै नख सिख सु वह राधा रूप अन्हाइ॥

लाल औ सुनैया महा चुनी कैसे रंग जामैं हरे पछी मिले बैठे साखा प्रति साखा है,
पीत पत्र द्रुम तापै कोकिल नवीन बोलैं रचमा कलोलैं काम कोटि अभिलाष हैं।
रतन खचित भूमि प्रभा ह्वै चिलक रहै ता मैं चिलकै हैं द्रुम पछी छबि लाषा हैं,
देखत गोविंद राधा छोडत न कुंज वह पुंज बढ़ि जात सोभा रूप रस दाषा है॥

दोहा—हरिचंदन जहां वृक्ष हैं ऐसी कुंज उजासि।
लखि चंदननि सुगंध है भरत प्रभा ज्यौं हासि॥

लच्छ गुनें चंदन ते महाही सुगंधित हैं ऊचे महा स्वच्छ हरी चाँदनी से सोहें हैं,
सीतल अत्यंत ताकैं देखत तपत जात परम सुहात देखि दंपति सु मोहे हैं।
देखत गोविंद जाके फूल देखैं फूलै मन झूलो होत रूप कौ लडैती हसि जोहे हैं,
फूल फूल पर आखैं फिरैं मानौं लाखैं होत लाखन पत वन की छविनि में मोहे हैं॥

दोहा—एक कुंज दिस जात हीं पार जात सब वृक्ष।
मोतिन पानिप ऊजरे देखत होत प्रतिच्छ॥

मन को समझि उन दंपति को पार जात रंग पलटैं दिखावै रचना सौं बने हैं,
छोटे से ह्वै जाहि बड़े चाहैं जैसे रस देत हसि दै लडैती देखै चेटक से घनें हैं।
देखत हरित ह्वै गए है लालमनि जैसै बीजुरी से गोरे नील मनिन से तनें हैं,
तान ताल राग रंग नृत्य नृत्यवती सब सोभा में बनावैं खग बोलनि में गने हैं॥

दोहा—एक कुंज कौं जात ही द्रुम देखे मंदार।
दंपति रीझ परे रहे सोभा द्रग उरहार॥२८८

सवैया-वृछनि में वृछराज बडो है चढ्यौ है मंदार सुजोति धरैं यौं।
तारन से झलकें पलवे लाल फूल सु लाल अकास करैं यौं॥
सौंन मई सेकइ सै लगे फल लागे फिरै सुक चौंचैं भरै यौं।
राधा गोविंद हसै छवि देखि सुहासी सौ पत्रनि लाइ सी रैयौं॥

कदम सुवृत्त जापै चीर हर चढ़े कृष्ण सब ही में जाकी छबि साखा प्रति लगे हैं,
दिष्टनि सौं सीच्यौ गयौ नेह विष्ट दुहू ओर हासि परिहासन सौं भीग्यौ हियौ पगे हैं।
जिते है कलप द्रुम तिन तैं सरस क्रम रूप के सुघर जामैं धरे प्रेम रंग हैं,
सावन में फूल्यौ मानौं श्रावन सु छवि फूलै रूप के से गुछ फूल रूप रंग जगे हैं॥

आँव नीव जामन सु आँवलौ लिसौरा आदि औरै द्रुम सबै वे कलप इम जानियैं,
जाही कैं निकट कृष्ण जाहि सोई फूल उठै फूल उठै नख सिख रूप पहिचानियैं।
रूपे सौह्वै जानैं सौह्वै किधौं नीलमणिलाल हीरन सौ मोतिन सौ पानिप कौ खानियैं,
हरि देखि रीझैं वाहि वह हरि ही सौं भीजै हरि रूप चढ़ै छबि यह छबि सानियैं॥

दोहा—वृंदावन आनँद कौ कलप तरोवर चारु।
ज्यौं ज्यौं प्रिया प्रिय रुचि वहैं प्रगटै कला विहारु ॥
वहै भूमि जहां जोग में पोठ कहावै सिद्ध।
श्री राधा गोविंद जहाँ वरषैं फूल प्रसिद्ध ॥२९३

सुंदर है भूमि भूमि रह्यौ है कलप तापै एक ही अनेकनि में झलक्यौ करत है, रंग हैं हजार जाहि देखै ताही मे ह्वै आखै वन सब दीखै ताहि एक सौ परत है। रसिक रसीली हँसि हँसि करै वातैं चितै पात पात पर फैल सोभा ज्यौं धरत है, किधौं ता फता कै पत्र चित्र ज्यौं करै हैं आखैं आवैं जाहि छावै प्रेम रूप सौ भरत है॥

कोकिला कुहक न्यारी मोरन गहक भारी वीच वीच सुक बोलैं सारौ मृदु वानी हैं, भौंरन के गुंज पुंज रागन के मानौं होत पगि रहे फूलन सौं मत्तता निसानी हैं। मारुत त्रिविध सौं द्रुमनि सौं उरझि आंवैं पत्र वेष एक मिही वीना तान तानी है, दंपति सु रीझि भीजि नैंन कान एक किये दियें गरवाही चितै रहैं राग रानी है॥

त्रिविध समीर दरी झरत सुनीर गिर गोवरधन तीर वे सरोवरी सरस हैं, फूल रहे कमोल कमोदनी आमोद भरे रति ससि राधा जू के मुख के दरस हैं। दिन राति होत जहाँ दिन राति होत नाहि जित जाहि दंपति सुभाके वारि वरस हैं, चंद्रमा न सूर न द्रुमनि घनाई वीच किरनैं न धसैं जुग रूप के परस हैं॥

सिंघ मृग अहि मोर घर में ज्यौं भाइ रहै देह की न आइ सुधि प्रेम की गहल में, नैंननि में व्यापि रह्यौ रूप श्रीगोविंद जू कौ ता में रंग्यौ गयौ वैर छवि सौ पहल में। जैसें विष हो कौ होत अमृत सुरस पायैं अमृत कै सिंधु वूंद विष की सहल में, वैर हू तैं भाव होत जैसैं लोहहू कौ सौनौं वृन्दावन पारस कै परसे पहल में॥

दोहा—रूप सु वृंदाविपिन कौ जामें प्रेम विलास।
पसु पछी आसक्त कौ सब में झलकत वास॥

कैसे हैं सु द्रुम जान राय जानैं मन मै की द्विधा भक्ति पोष जामें निपुन वखाने हैं, कृष्ण विषैं भक्ति आप करैं जा मैं सावधान सोभा रचि त्यावैं और रिझावैं रस आने हैं। इनि कौं जो सेवै कोऊ वृन्दावन द्रुम जान देत है अनंत फल उनहू कौं जानैं हैं, चिदानंद रूप वाकौ करै जैसौ चाहैं लहैं रास में हुलास में विलास रूप माने हैं॥

दोहा—औरन कौं दिवि रूप करि निजु क्यौ थावर रूप।
कृष्ण विलासन कै जु हित ह्वै हैं रूप अनूप॥३००

वाहुल समीर जहाँ कैसें हू न हों न पावै तातैं द्रुम सघन सुगंधित करत हैं, चंद्र के उदै तैं स्वच्छ पत्र वे दर्पन जैसैं लै लै प्रतिविंव वन चाँदनी झरत हैं। रास हित सीतल विलास हित अमृतता वढैं अल्हाद स्वाद दंपति भरत हैं, थावरता तरु ही परोक्षि रस पीवत हैं हासि अवलोकन सौं हिरदै हरत हैं॥

सूधे मिलै न मिलै जगि जोग सौं साधन सिद्धिन कौ जु अभाव है।
कृष्ण विलास वृन्दाबन वास है रास प्रकासत होत प्रभाव है॥
जा के प्रकासक चार सरोवर दुर्लभ सौं करि सुलभ भाव है।
न्हात ही भाव और ह्वै जात हैं रूप ही रूप कौ होत सुभाव है॥

दोहा—वृन्दावन कै चारि दिस चारि सरोवर दिव्य।
जिनके दरस न परस तैं मंजन तैं ह्वै भव्य॥३०३

रूप सरोवर का वर्णन—

दोहा—रूप ज्ञान प्रेम हि कहत मान सरोवर देखि।
रूप सिलै ज्ञानै मिलै प्रेम मान लै पेखि॥
रूप सरोवर रूप सौं रूपै ही कर देत।
चाल हसन चितवन भरी अवलोकनि सर हेत॥

रूप के सरोवर में रूप न्हायें होत महा जहाँ जोति सत दामिनी नवीन भाषियै, चलन छवीली खरी रहन छवीली फिर जान फिरि आवन रसीली रति चाखियै। वतरान ह्वै छवीली सतरान ह्वै छवीली हसन छवीली सौं ललित चाखै दाखियै, देखन दृगन की विसेषैं असषैं छवि रेखैं रूप रस की जुगल देखि राखियै॥

वडी होत आखैं औ ढरारी अनियारी स्वेत वीच वीच कारी जाकी अनी चुभि जाति हैं, कानन लौं दौरैं झाँई कलकै कपोलनि में चीकनी सचौं ही वरसौ ही खुभि जाति हैं। वडी दिष्टि कुटिल कटाछिन जवाहर सी दिसा यौं सिंगारैं रूप देखैं सुभिजि जाति हैं, रूप सर मंजन करत सखी रूप करैं रति तै अनूप रूप गुच्छ गुभि जाति हैं॥

रूप के सरोवर में रूप ही मिलत न्हायैं जाकैं आगैं दामिनी यौं जामिनी में छिपियै, खंजन कमल मीन मृगराज जानी आज याकी छवि आगैं उपमान ह्वै कै जिपियै। हंस कुल मान सर मोती यौं चुगन लागे ह्वै कै पुष्ट स्वच्छ चलैं करी मति लिपियै, कहत प्रिया सौं पिय सखी या सु छंद आइ जाकै सुर कोकिलान वोलैं दुति दिपियै॥

रूप के सरोवर में रूप महा मंद रहै चित्रित विचित्र रंग तोय की गहर है, मननि की वैठ कहैं चौक छत रीति वारी न्यारी न्यारी संग छवि धारी ह्वै थहर है। दंपति विलास सुख संतत विलोकैं संग सखी अवलोकै रंग वसन पहर है, वृन्दावन चंद श्री गोविंद गरवाही प्यारी उठत उजारी मुसिक्यान की लहर है॥

चहूँ ओर पैरी ऐरी कहा लौं कहौंगी सोभा मणिन की गोभा ही मैं प्रतिविंव होत हैं, उज्वल पियूष जल मानौं रूप रैनी भरयौ रूप रँग्यो जात जामैं महा रूप सोत हैं। और एक अद्भुत चढ़त जात सुंदरता देखत ही देखत वढ़त जात जोत हैं, रूप सर रूप ही भरत भरै अंगनि मैं चंद्र किरनावली के झमक उदोत हैं॥

ज्ञानसरोवर का वर्णन—

दोहा—ज्ञान सरोवर ज्ञान रूप कौ अन भौ होत विलासि।
दरस तहाँ परसत जुगल बरसत सुंदर हासि॥

ऐसैं ही विचारै जैसै रति ह्वै प्रवेसैं तैसैं तनि तनि जैसैं भाव सुखद प्रकासी है, कैसैं रहैं कैसैं चहैं चाहन में पाइयत हिये में उमाहियत दर्पन उजासी है। जुक्ति पहिचानैं अनुरुक्ति पहिचानैं अन मानैं सन मानैं आनैं वात रूप वासी है, ग्यानसर मंजन करत आखैं मंजु भई मंजु देखैं दंपति गोबिन्द मंद हासी है॥

छप्पै—ज्ञान सरोवर लसत वसत जहां ज्ञान रूप को प्रेम भर।
देह वहै कर देत प्रिये प्रति चाहियै जैसी।
उज्जल सुंदर ज्योति ललित भर कहियै तैसी।
हरि चंदन जहां वृच्छ भक्ति वर अन भौ ज्ञाता।
सेवा लछन भाव विगत के तद गति दाता।
गोविंद चंद श्री राधिका उच्च सरस आनंद धर।
ज्ञान सरोवर लसत वसत जहाँ ज्ञान रूप कौ प्रेम भर॥

पैरी हैं अरध वाझि मीडे नग जात जा मैं भाति न्यारी न्यारी की झलक ललकत हैं, फूले जल जात कांति पांखुरी सहस्र जात उठे मकरन्द तापै अलि कुलकत हैं। जुगल रसीले तीर मंजन करे तैं चीर झरत भरत मानौं मोती झलकत हैं, ऐसी सोभा देखि देखि सखी रूप छकि महा रूप वढ़ि गयौ भयौ मोद वलकत हैं॥

ज्ञान कौ सरोवर है स्वच्छ महा तोय जामैं ता मै हैं महल स्वछ पीत मनि कौं हियै, अद्भुत ललित मानौं चंद्र मनि अवनीपैं रवि मनि ही कौ रच्यौ प्रति छवि कौं दियैं। जुगल रसीले लालमनि द्वार ही में खरे भरे हैं लहर प्रतिविंव रस यौं पियैं, वृन्दावन चन्द श्री गोविन्द गरवाही कियैं रति रस पियैं हसि हेरत प्रिये लियैं॥

प्रेमसरोवर का वर्णन—

दोहा—प्रेम सरोवर प्रेम कौ परम मनोहर रूप।
जा लखि अद्भुत जग मगैं दंपति रूप अनूप॥

प्रेम ही सरोवर में न्हायै प्रेम होत ऐसौ जैसी वडी आखन को रमकैं उजारी हैं, काजर करारी अनियारी ज्यौं ज्यौं देखियत त्यौं त्यौं जग्यौ आवैं रूप देखन निहारी हैं। फूले छबि ही के नख सिख सिख नख मद छंद अंग अंग रंग भूषन विहारी हैं, लाख अंग प्रेम के प्रगट होत जाकै देखैं लखै करैं दंपति विलासौ सु धारी हैं॥

प्रेम सरोवर प्रेम की परी है प्रेम महा जिह देख छकावै।
पैरीनि ही प्रति विंवत रूप सु एक ही रूप अनेक ह्वै भावै॥

मंजन वा जल में की कहा कहौं प्रेम कौ सिंधु सुरूप कहावै ।
लै चुभकी रूप राधा गोविंद कौ आखिनि सौं उरझ्यौ जहाँ आवै ॥

प्रेम ही सरोवर में लाल मनि मन्दिर है मनि गन जाली तापै जंगालो वितान हैं, मोतिन की झालर झलक लह लही होत रंगन की ज्योति मानौं काम के विमान हैं । छालन में दंपति विलोकत हैं प्रतिविंव आप हू समेत हेत दसौं दिसा दान हैं, दूर हू तैं देखिये पै होत हैं निकट आन आपुनि जु मुखानि को माधुरी सुपान हैं ॥

पारिजात वर्णन--

उज्जल वरन स्वछ मुकर मलिन जातैं मूल फूल फल पात एक रस जानियैं, जहाँ लौ विलोकें प्रिया प्रीतम जहाँ लौं छाया उच्चि महा जैसौ होइ छोटौ हरि मानियैं। अरुन पीत हरित स्याम चाहैं पचरंग होत सुंदरता फुहँनि श्रवत रस दानियैं, खान पान भोग देत राग रंग जोग जुक्ति प्रेम सर पारजात दंपति रिझानियैं ॥

मानसरोवर का वर्णन--

मान हीं सरोवर कौं चलै कोऊ ताही काल जाही काल राधा प्यारी ताकौं देखि कहै यौं करै दरसन या सरोवर कौ नर वह मोकौं प्रेम गहै यह सखी रूप लहै यौं । ललिता सखी सौं कह्यौ जब ही सनान करै तव ही सखी को रूप करि राखौ रहै यौं, भाव सौं वढ़ैगौ हित चाव सौं चढ़ैगौ चित जब मो निकट आय प्रेम रस चहै यौं ॥

देखत ही जो रंगे द्रग भाव में मानौं महा मति प्रेम पली है ।
न्हात ही भावत संग अनूपम राधा गोविंद सौं रंग रली है ॥
कंचन वेलिन स्याम तमाल ज्यौं हासि बिलासनि रूप रली है ।
मान सरोवर मान वढ़ावत लेत विहार में जान अली है ॥

दोहा—मान सरोवर मान हित कीयौ लडैती मान ।
जमुना में प्रतिविंव लखि रमत और सौं जान ॥३२३

खेलत है रास रस झेलत कटाछैं हसि कियैं गरवाँही गसि प्रेम की गहल में, नैननि सौं नैंन लसि नृतत उघट वसि चित बृत्ति फँसि कसे रूप के पहल में । जमुना सलिल में ललित प्रतिविंव देखि रमत विसेखि काहू और सौं सहल में, वृन्दावन चंद श्री गोविंद जकि रकि रहै मान कर मान सर वैठी जा महल में ॥ मोती हू तैं उज्जल सुमंजुल भरयौ है तोय ता में चन्द्रकांत मनि मंदिर उजारी कैं, हीरन की चौकी तापै वैठी सेत पट ओढ़ मुख झलमलै नैंन खंजन ह्वै जारी कै । जोति झांई मिलि छवि पावै पै न पावै एह प्रीति ही लै नातो राह कीनी रूपधारीकैं, वृन्दावन चंद आए चंद्रिका मनावन कौं दया उपजावन विंव रूप प्यारी कैं ॥

दोहा—मुरि वैठी हरि देखि कै छवि वैठी उर माहि ।
मान करे की लाज सौ मन्यौ गयौ है नाह ॥

सखी मनावति चरन गहि भरे रूप द्रग जात ।
सत राह टकी माधुरी रूखे दृग चिकनात ॥

कृष्ण नाम सुने तैं पुलक अंग अंग होते अचल उरोज चल मिल तैं विचारियै,
विन ही हसे तैं मंद हासि जहाँ फैलत ही खेलत ही जब जब मन मन धारियै ।
जाके रूप विवस विलास सरकी उत ही व्रीडत ही नेह जब श्रवन उचारियै,
बृन्दाबन चंद मानौ चातिग चकोर भए चंद ह्वै कि घन ह्वै कि नैंसुक निहारियै ॥

लीनैं पीय जोर कर भोंहैं तै मरोर धर सोहन करी है वर विनै नेह नीत पै,
दृगनि विछावनें करे हैं तरै द्रग आगै तूं न दृग ल्यावै वे उमाहे प्रेम प्रीत पै ।
ऐसी अतुराइ पै धरत चतुराई जात मैंन कछु जानौं वात ऐती रिस मीत पै,
बृन्दावन चंद किधौं रीझे तेरे मान ही पै किधौं तू तौ रीझी है मनाइ वे की रीत पै॥

बैठी हौ जु मुरि उर की मुरनि मौरन की मुरी जात उतै जितै हितै रति धारे कौ,
मानौं कर्न फूलन की झूलनि कपोलनि पै जय सतरात मानौं हँसन उजारे कौं ।
तेरी तौ रुषाई ऊष सरस सहाइ होत आखिन के ओट विपि मन वस हारे कौं,
मो सौं करै नाही वामैं हाँ करत प्रीतम कौं मौही कौं भुरावत रिझावत है प्यारे कौं ॥

दियौ मुसिक्याइ प्यारी सखी के वचन सुनि हियौं हुलसाय चाहैं मिलौं मैं गोविंद सौं,
रही खु जराइ आँषैं नीची वहु वेर रही गही नही जाहि एतौ छुटी मान फंद सौं ।
बेग उठि चल्यौ चाहैं भुज लपटयोई चाहै अंतर कै हैं खरे उर प्रेम कंद सौं,
मन वे कियौ हो मन अंग दौरि जाइ मिले वात हू न पूछी मुख मिल्यौ मुखचंद सौं॥

नृतत जुगल जुग जुग दृग फेरन की हेरन छवीलो छबि फैल झमकानियैं,
पग की धरन वजैं नूपुर झनक झम झम कै सु अंग रंग चैन मन मानियैं ।
मानौं चंद मंडल सु हीरनि कौ मंडल है रूप जामैं कौंधे चौंधे ह्वै अनेक आनियैं,
रुचि सुचि जागी दिष्टि दिष्टि गरवाहीं पागी लागी है कटाछन की झरी हँसि जानियैं ॥

दोहा—फाग मास अनुराग धर कियौ राधिका मान ।
वदी सुतिथि एकादसी छुट्यौ मान इम जान ॥

फागुन वदी सुद्वादसी कै दिन मान सर होरी खेलैं राधा गोविंद चंद जानियैं,
सुकर अवीर प्यारी पिय के गुलाल कर चौंपनि उडावै छावै बूका हरयौ आनियैं ।
उडकै अकास चढ्यौ मानौं या त्रिवैनी वीच दीसत ए न्हात गौर स्याम पहिचांनियैं,
अद्भुत कटाछै गैंद रूप फुल गुछ जैसैं दिष्टि चटकीली हँस हँस मिलै तानियै ॥

दोहा—चार सरोवर जे कहे ते रति रस की खान ।
ललित विहार सुहार करि पहिरैं रसिक सु जान ॥

छप्पै—योगिन कौं अति दुर्गम तपन वृथा तन खोये ।
ब्रह्मादिक इन्द्रादि भ्रमैं विन अनभौ भोये ॥

कमलादिक अभिलाष शिवादिक गोपि रूप ह्वै ।
देखे रास विलास जुगल कल केलि भूप ह्वै ।
चार सरोवर जे कहे जिन मैं करै सिनान ।
सखी रूप ह्वै अनुसरै तब पावै सनमान ॥३३६
गुरु की कृपा विचार सार धर ध्यान बतावैं ।
मंत्र सार अभिराम जहाँ इक साखि जतावैं ।
वही वरन दै फेर हेर मंजन करवावैं ।
पैरी सात जराव वाह्य ज्यौ भीतर भावै ॥
लै चुभकी जब तोय में भोइ जुगल रति रूप ।
आनंद कला विलास जे परै न ते भव कूप ॥३३७

दोहा—रूप सरोवर में जावै पावै रूप अनूप ।
जल में चुभकी लेत ही सत दामिनि कौ रूप ॥

बड़े बड़े दृग वंक भृकुटी धनुष सर तीछन कटाछैं लाग्यौ अनी सौ अनँग है, कृष्ण अवलोकन सुलायक सखी ह्वै गई अमृत श्रवासी हासि छई भूमि रंग है । झिझक झिझक उठै अलकै हलत ज्यों ज्यों आरसी कपोल नाग छौना भ्रम संग है, उर की उचाइ कटि सूक्ष्मि निकाई रोम रोम सुठि ताई छवि उमगै उमंग है ॥

दोहा—प्रेम सरोवर में जवै मंजन होत विलासि ।
लायक रूप सुप्रेम कौ उद भौ मंगल हासि ॥३४०

रूप समुद्र उठैं लहरैं अंग अंग मरोरत जोवन जोरैं ।
बाम भुजा फरकैं हरषैं कटि सूछम पैड भरैं डग डोरैं ।
विंबत होत उरोजन में कंचुकी मुक्ता मणिमाल झकोरैं ।
जाइ मिलैं दृग प्रीतम सौं रस रीति ही रीति ही प्रेम में वोरैं ॥

दोहा—मान सरोवर में जवै वढै मान इह रीति ।
नई नई छिन छिन वढै आनँद मइ सुप्रीति ॥

मान सरोवर ही कैं सनान तैं मान रखै दोऊ प्रीतम प्यारे ।
प्यारी को मान मनै न ज्यौ काहू सौं यासौं मनैं हँसि रूप उजारे ।
दोऊ अधीन रहैं नित जाकै सखी सब तासौं कहैं हित भारे ।
रूप औ वेस औ वैस समान ह्वै मानसौं प्रेम वढै सुख सारे ॥

दोहा—ज्ञान सरोवर के सनान ते ग्यान वढ़ै वहु सोत ।
रूप प्रेम अरु मान कौ जामै अन भौ होत ॥
वाहर भीतर की जहाँ जामें सक्ति निवास ।
श्री राधा गोविंद के जानत मन की वास ॥

चार सरोवर पर जहाँ चारै वृछ प्रमान।
पारजात मन्दार है हरि चंदन जहाँ जान॥
ब्रह्म संतान असोक है ग्यान सरोवर जान।
मान जु सर मंदार है हरिचंदन प्रेम प्रमान॥
पारजात जहाँ रूप सर जगमग ताकौ धाम।
ते सब पीछें कहे हैं नाना अद्भुत काम॥
चार सरोवर न्हाइ कै सखी भइ छबि रूप।
पिय प्यारी के निकट ही लायक भयौ सरूप॥
पदम सहस्र दल वन अवनि जा कै चारौ कौंन।
चार सरोवर तेज मै भाव कृपा के भौंन॥
ऐसी छवि की भावना करत लहै वा रूप।
भाव बढ़ेतें प्रेम सौं अनमौ होत सरूप॥
ता आगें पहिलै करै जमुनाजी कौ ध्यान।
रतन प्रभा छवि दिव्य हैं वार पार ज्यों आन॥
अमृत जल जहां वहत है झलकत वारा पार।
याकौ वह राह देत है दर्पन रूप उदार॥
जगमग जगमग है रह्यौ श्री वृंदावन धाम।
जित देखौं जित देखिये श्री राधा घन स्याम॥
रूप न सिमटै दृष्टि सौं चलत भावना पाय।
सखी रूप गुरु ध्यान तैं मिलै जुगल हँसि चाय॥
ऊपर साधिक रूप है भीतर सिद्ध सरूप।
ऐसौइ जो गुरु मिलैं तउ पावै रस रूप॥३५६

वेद विधि पंडित है अनभौ अखंडित हैं सब्द ब्रह्म पर ब्रह्म सदा ही प्रकास हैं, थिर मन जुक्ति हैं अजुक्तिता न ढिग आवै सभा छवि छावै गुन गन विनैवास हैं। दया के निधान करुना के रत्नाकर हैं भजन उजागर आनन रस रास हैं, सदाचार सिद्ध नाम अंकित प्रसिद्ध हरि रोम रोम रिद्ध ऐसे गुरु रूप रास हैं॥

दोहा—ऐसे गुरु जो पाइयै लहियै जुगल सरूप।
सखी रूप याकौ करैं दरसै रास अनूप॥३५८

सखी रूप गुरु विग्रह वर्णन—

सखी के सरूप अनूप है सुंदर श्री गुरु वे मन के मन मैं है।
गौर औ स्याम मिलै घन दांमिनि वरषत रूप खिलें तन मैं हैं।
केकी के कंठ विभाकर किर्नत होत लहालह ज्यों जल मैं हैं।
ऐसौ सरूप धरै उर मैं छिन पावत प्रेम भलैं पल मै हैं॥

दोहा—ऐसे गुरु को कृपा तै करैं सखी हित सार।
दंपति छवि की माधुरी देइ दिखाइ उदार ॥३६०
दंपति रस सुख रास की अष्ट सखी आधार।
वरषत प्रनत जु जनन पर प्रेम रूप रस चार ॥

छप्पै—वृंदा विपिन सु वन विषैं राधा चंद उदै रहै।
अष्ट सखी हैं किरन आठ अठचौसठ सोहैं।
रूप जोन्ह है जीति कोटिकंदर्प मन मोहैं।
वोलन हसन विलास सुधावर विष्टि निरंतर ॥
आश्रै वल्ली सींच वढ़ावत फूल फलन भर।
प्रेम कलाकर उनै कैं रस प्रवाह निरवर वहै ॥
वृंदाविपिन सुवन विषैं राधा चंद उदै रहै ॥२६२

दोहा—गोरोचन कौं ललित कर ललिता वरन विसेषि।
मोर पिछ के वसन रुचि सुचि वीरी कर देखि ॥

ललिता वरन स्वछि गोरोचन लछि सुचि केकी पिछ से बसन तन कहियत हैं, भूषन जराव में जरावा हाँसि मिलिखिलि जुगल विलास की सुगास गहियत हैं। सुखद निकुंज वैठे रस पुंज दंपति वे संपति फैलाय रूप छवि तहियत हैं, वीरी कौं वनाय मुख देत आधी आधी जब प्रेम के खिलौंना रस दौंना लहियत हैं ॥ वरन गोरोचन कहैं ताहू कौं हरत चहै कंचन मै जोति रवि कौंध रस चहियै, दामिनी सिंगारी ससि किरनि ह्वै हरित झाँई वसन कलापी पिछ ओपे ओप लहियै। जुगल रसीले भाव चाव मैं प्रमत्त रहैं चहै प्रेम मै ही प्रति विंव मिलि गहियै, वृन्दावन चंद श्री गोविंद चंद दंपति हैं ललिता जू चाँदनी सरूप रूप कहियै ॥ मंजुल निकुंज वैठे राधिका गोविंद चंद कर मै लिये हैं डवा अंग झलकत हैं, ता में पाँन उजल हैं मीठे महा अमृत मय सुंदर सुगंध भरे धरे ललकत हैं। ललिता ललित वीरी कर लै निकट गई भई मतवारी आखैं छकि छलकत हैं, हँस मुख लेत छवि देत मानौं पलटै ही रूप ही मैं रूप के झमक झलकत हैं ॥

दोहा—चपला सौ उदोत अति वसनन छत्र प्रमान।
सखी विसाखा सेव रुचि सुचि सिंगार मन जान ॥३६६

सखी श्रीविसाखा जू कौ रूप वर्नन होत प्यारी जू की प्रति छाया जैसें ज्यौं आनंद में, ता की कांति झाँई विधि लौ लौ दामिनी बनाई ऐसी उजराई जाके अंग सुख कंद में। तारन के सार सेत ऐसे तव अंवर हैं भूषन उजोर होत जाकी दुति छंद में, करत सिंगार प्यारी जू कौ प्यारी जू कै ढिग जात हैं सिंगारी दसौं दिसा मुख चंद मैं॥ सुक रस सुरूप ही की लायक वसन लेत रूप ही की लायक सुभूषन झमकते, रूप भरी सखी श्री विसाखा ही सिंगार करैं रूप भरी सारी कंचुकी पै वो दमकते।

रूप भरे मुख कर्न फूल झूम के हू झूलें फूलैं जामै नग नाना भांति के छमकते,
रूप भरी आरसी सु देखत लडैती मुख रूप प्रतिबिंब हाँसि झमकैं रमकते ।'

दोहा—चंपकलता चंपक वरन ललित निलांवर चारु ।
दंपति मुख सुख रूप निरख विंजन करै उदार ॥३७०

सेत पीत नर्म मिलि होत हैं चंपे कौ रंग तैसौ रंग चंपकलता कौ कहियत है,
ससि की किरनि पीत मननि मै झलमलै मृदुताई महामृदु तैसौ लहियत है ।
नीलांवर ऐसौ जाकी नीलता चलत पाय दौरत अकास दिस नीलौ चहियत है,
विंजन वनाये मन रंजन लडेती जू कै लाल उर रस कौ प्रवाह बहियत है ॥

फटक मनि चौकी अंछि चामो कर थार स्वछ नाना भांति कटोरा विंजन सरस है,
चंपकलता वनाए मन के सुहाए सब देखत ही नैननि में चैन के दरस हैं ।
जैवत लडैती लै जिवावैं लाल रूप भर सुह्य उपजावैं कौर अधर परस हैं,
देखत ही भौंहनि मैं मोहनता होत चित मुरन फिरन हसि रस के वरस हैं ॥

दोहा—कुंकुम के रंग वरन अंग कनक वसन रुचि मान ।
प्यावत रस सौं सरस चित्रा सखी सुजान ॥

किधौं अनुराग प्रिया प्रीतम कौ वपु धरयौ किधौं चित्रा सखी जू कौ तन छवि छायौ है,
किधौं प्रेम उज्जल ह्वै चषक सुकर बस्यौ लस्यौ किधौं तोय सैत्य स्वछिता उमाह्यो है ।
पीवत गोविंद राधा सुभता कहाँ लौ कहूँ मुख झलमलै प्रतिविंव होत भायौ है,
मंजुल कपोलनि में मंजुल विलास हास किधौं रूप जल वरसावै झर लायौ है ॥

कुंकुम की प्रभा रंग अंगन में रूप श्रवै कनक वसन हार नीलमनि भायौ है,
सेवा में फिरत मानौ दर्पन के मंदिर ह्वै दामिनी रसीली आवै जाय कौंध लायौ है ।
रतन प्रदीपत जराऊ अंग भूषन हैं कुंज ही में रूप रूप दंपति के न्हायौ है,
याही कुंज सुख पुंज चित्रा सखी कूं भइ छबि लता प्रेम तरु जहाँ तहाँ छायौ है ॥

दोहा—गौर वरन पंडुर वसन तुंगविद्या उनहार ।
राग रागिनी सुरनि में होत जात अतिचार ॥

गौर वपु आभा कोटि पंडुर वसन ओंठ मुख ससि वीचका मे सुविकासु हाई हैं,
ता में सो अधर महा मधुर रसीले सुर लेत है रसीली तान रंग छवि छाई हैं ।
किधौं तुंगविद्या बीना मंत्र महामंत्र भरयौ हरयौ मन देखि सुनि प्रेम झरी लाई हैं,
रसिक सिरोमनि रसीले रस रीझे भीजे भीजी है लडैती तान सबै मन भाई हैं ॥

वीना वजावै प्रवीन महा तुंग विद्या जहाँ रस विद्या वढैं जू ।
आकृति आनन की उमगै सुर लेत जगै रूप चंद चढैं जू ॥
दंपति सिंधु महा उमगै सुनि कंठ विलास प्रकास वढैं जू ।
तैसैं उठैं किलकैं चिलकैं रूप काम के तंत्र ह्वै राग कढैं जू ॥३७८

दोहा--हरतार वरन है अंग छवि वसन सुरंग विलास।
कोक कला रस चातुरी इन्दु लेखा रति हास ॥३७६

रंग हरतार वाला वसन सुरंग आला उठै छवि ख्याला इंदु लेखा जू कौ तन है, अंग ही में बाग लग अंग ही में राग रंग अंग ही में कोक की प्रवीनता कौ पन है। देखें जाके रूप के प्रदीप रस श्रुति संथा रोम रोम व्यापि जात दंपति कौ धन है, एक ही समै में दृग तारन की माधुरी सौं दोऊ कौं पढ़ावै हसि चितै रूप रन है॥

कोक कला कुल की उजियारी भरै अति जू इंदु लेखा नई जू।
सीखत दंपति संथा चही चही जेई विलास के ग्रंथ भई जू॥
एक विलोकनि में दोऊ के दृग में न कलोल कलोल मई जू।
प्रीतम देखत ही अनिमेष ह्वै प्यारी सकोचन रूप रई जू॥

दोहा--केसर जो ह्वै कमल में जाके वरन प्रकास।
तन पर जपा पुहप वसन रंगदेवी सुखरास॥

बारिज में केसर है वेस है सुवर्न जाकौ हर्न करैं कंचन कौं कंचन प्रकास है, आवत द्रुमन तरै जात ऐसी लगै मानौं चलै पाँव चपला कि जोवन उजास है। रंगदेवी पहिरै जपा पुहप अंवर सुअंवर सुगंध फैल छैल गति हास है, वृन्दावन चंद श्री गोविंद प्यारी जू की सेवा चित्र रच कियै लियैं चित्र रति रास है॥

चित्र लै वनायौ मानौं रति ही विलास छायौ मोती सौ महल स्वच्छ मालती सी वालहै, उज्जल पर्यंक बैठी लसै प्रिया प्रीतम सौं सुख के विलास देखें आखैं रूप जाल है। दोऊ यौं विवस होइ पूछै रंगदेवी जू सौं राधा काँति एकै हम वर्ण्यौ रस ख्याल है, दर्पन दिखायौ एक महा ही चरित्र भरयौ जामैं वेई प्रतिविंव किये प्रेम माल है॥

दोहा--कुंदन कौ सौ वरन है वसन सहानें लेख।
मंजन चिकुर वनाव ही कज्जल मंजुल रेख॥

कुंदन से दिव्य अंग वसन सहानें भव्य ऐसी है सुदेवी जू की सोभा स्वच्छ सारै हैं, चिकुर लडैती जू के खुले रस तुले जिन्हैं ओले कर नैंन मैंन उठैं मंजु चारै हैं। ज्यौं त्यौं केस भर पाटी पारी माँग मोती भर लाल गुनी सरस दरस उठैं धारे हैं, वैनी गुहि अंजन दै मंजन करी हैं आखैं खंजनन हाथैं किधौं दीनी तरवारैं हैं॥

चकित रहे है सुनि खगन के वोल रीझ मन ही को भीज इन्हैं कैसै पहिचानी है, किधौं ए सुदेवी जू के नैंननि सौं पढ़ै वोलै ल्यावत वनायैं ज्यों को त्योंही रसवानी है। सोए सार सूवा वोलैं झोलैं एक रचना सी रसना सी ललित विलास ही की तानी है, देत पहिराय किधौं आप ही पहरि लेत मनसा हमारी रुचि माला करि मानी है॥

दोहा--सखी अष्ट वरनन करी चौसठ हैं तिन संग।
आठ आठ निरमान हैं रूप गुननि रस रंग॥

ललिता जू की सखी--

छप्पै—कुंज निकुंज विलास की ए आस्वादक प्रेम भर।
रतन प्रभा रतकला सुभा पुनि सुभता सरसत।
कलहंसी कल हासि कलापनी कला जु वरषत।
भद्र सौरभा भद्र उदै जहाँ मन मधि मोद प्रकासैं।
सुमुखी सुख वर रासि अष्ट सुभ ललिता आसैं।
सखी सवै अनुराग घन वरषत मधुरै मधुर कर॥
कुंज निकुंज बिलास की ए आस्वादक प्रेम भर॥

सी विसाखा जू की सखी--

माधुरी मधुर महा मालती अहलाद अहा कुंजरा चलन छवि हरनी सुलेखियै,
चपला चपल नैंन गध रेखा गंध ऐंन आनना सुभग अति सोरभी सु देखियै।
सुभता सवै विसेषि रस रचि हैं असेष स्वछ चाकि चंकि रुचि दंपति विसेखियै,
वसन विशाखा जू पै अनुदिन लियै रहैं पियै प्रेम रस वस त्रपत न भेषियै॥

चंपकलता जू की सखी--

कुरंगाछी अछि मनि कुंडला सुलछि स्वछि चन्द्रिका प्रकास वेस चरिता विसेखियै,
मंडनी प्रकास वैस चंद्रलता चंद्र है सु मंदिराल उजाल सु काछनी सुभेखियै।
ललित विलास चष सुछि है विलोकनि में विंजन मै लछि है सु चरिता परेखियै,
चंपकलता अनुग मुख ही की जानैं रुष कौन स्वाद रुचि सोई ल्यावत सु देखियै॥

चित्रा जू की सखी-

चित्रा जू की सखी रसालका चित्र वातन में तिलकनी सुरूपकौ तिलक जाकैं भाग है,
मैंन नागरी प्रवीनताई मैंन सीखै जहाँ रामिलका रमनीयता कौ अनुराग है।
नाग वेंन काके वेंन दैन कल सिछा इछा त्यौं सुगंध का सुगंधसिंधुन कौ जाग है,
सौर सेनका सु सौम रूपन कौ सैनिरूप नागरी सु आठौ चित्रा सखी सेवा पाग है॥

तुंगविद्या जू की सखी--

मंजु मेधा मंजु है मनोहर सु मेघवत है सुमेधका सो सव रसन निकेत हैं,
तैसें तन मंध्या प्रिया प्रीतम कै रागवत गुन चूडा प्रीतम कौं राग सिछा देत हैं।
वरांगदा सुवर अंगन की कहा कहौं मधुरा मधुरता कौ वढे रस खेत है,
मधुसिंदा मधु मधुरा इहै सुमधु मधु मधुरै करना प्रवीन तुंगविद्या हेत है॥

इंदुलेखा जू की सखी--

भद्रा तुंगभद्रा हरि रूप ही कौ मंगल है रसतुंगा राधाकृष्ण रस के विलासिकी,
गानकला गान की कला हैं जाकी वोलन में चित्रलेखा रूप प्रेम चातुरी सुवासिकी।

मोदनी आनंद सिंधु जैसो मंदरालसा है जैसी ही सुमंगला सु मंगल के हासि की,
चितरागी चित्र जाके रोम रोम रूप पगी रूप रंगी इंदुलेखा दासी रसचासिकी ॥

रंगदेवी जू की सखी--

कलकंठी महा कल मीठो कंठ बोलन में ससिकला चंद्र जाकी कलासम जानियै,
कमला कमल गंध अंग वे सुगंधत हैं जैसैं मधुरिदा मधुरता देत आनियैं।
सुन्दरी सुन्दरता विछत जात चलवे में कंदर्प कंदर्पन कौ ओप रूप मानियै,
प्रेम मंजरी सुप्रेम सदा अंकुरितु रहै रंगदेवी जू कै हित कामलता सानियै ॥

सुदेवी जू की सखी--

कावेरी कुरगाछो है मनोहरा सुभाछी जैसैं चारु कवरा की कवरी ओप धोप है,
मंजु केसी केस जाके महा ही मनोहर हैं तैसै केसिका के केस कामकांति ओप हैं।
हारहीरा जू कौ रूप हीरावति भूषन हैं महा हीरा जाकौ रूप दर्पन अलोप हैं,
तीसरी सुहीरा जाकौ कंठ हीरा ही ज्यौं सोभ कानन कौं भूषन सुदेवी रीझ रोप हैं॥

दोहा—बृहद गौतमी तंत्र में कहै सख्यन के रूप।
श्री गौतम अंबरीष के रस संवाद सरूप ॥
बरनन कियौ जु सखिनि कौ सो है दर्पन रूप।
जिन सौं राधा कृष्ण कौ दरसै रूप अनूप ॥

प्रियंवदादि सखी सब कही है पुराननि में रूप को पुरानवत दिव्य महा रूप हैं,
तैसैं चन्द्रभागा अनुरागा चंद्रआस्या हास्या चंद्रभाष्या चास्या ऐसी सबही अनूपहैं।
कदर्पा विलासा दृग लास्या रसरास्या सुखा तैसैं ही सुभाछया दृष्टि मोदही सरूप हैं,
विज्वलता भास्या कोऊ चंद्र कोटि दास्या कोऊ रसविष्टरास्या महामोहनी जु रूप हैं ॥

कोऊ है विलासा कोऊ प्रभा वागरास्या कोऊ लोलनैंना पैनी चिदा चंद्र मनमोहनी,
दर्पना अगछा कोऊ लछिरंग आछा कोऊ माला रूप वाला कोउ रससिंधा गोहनी।
कोकिला सुलाछा कोऊ रागरति आछा छबि झूम कै चिताछा भूमि अलंकार सोंहनी,
कंदर्पा कटाछा कोऊ दिष्टमिष्ट आछा कोऊ लावन्य कलाछा भासि प्रभा हसि जोहनी ॥

दोहा—सखी रसिकनी जे कही बड़े नैंन विसाल।
कृष्ण चंद्र पर झर लगै करैं कटाछ निहाल ॥
प्रथम आठ चौंसठ कही और असंख्य विचार।
रूप प्रेम अरु आनंद निधि वरषा बरष सुधार ॥

चाहै जो विलास हासि कुंज औ निकुंज वास उदित उजास जहाँ सदाई रहत हैं,
पीयौ चाहै रस जीयौ चाहैं छवि जीव ह्वै कै लीयौ चाहै रूप आखै घूँमत लहत हैं।
नैंननि में धारयौ चाहै राधा कृष्ण सुंदरता कियौ चाहै घर ह्याही प्रेम सौं चहत हैं,
सखिनि के मन राखै हाथ मन साथ नित करत खवासी हँस माधुरी कहत हैं ॥

राधिका जू चंद कही सखी ए किरन कही रजनीन कही जामें कहियै प्रकास है,
स्याम ही सचिक्कनता यहै निसि निवड नेह मेह रूप घन ह्वै न सूरज उजास है।
स्याममैं प्रकास सो प्रकास स्यामता विनन स्यामहीमें स्याम देखिलीजो जोतिरास है,
सोई तो प्रकासता लडैतो गौर स्याम ही में ताही की निसानी सब नैंननि निवास है॥
दाहकता आगि में जौ सीतलता जलही में दूधमें सिताई ज्यों मिठाइसमैं मिठास है,
भूमि ही में गध जैसें धन में धनूंतर है रति में रत्यन्त वल में वलंत रास है।
सौंने में ज्यों भूषनन भूषनन में ज्यों सोभा सोभा राति में ज्यों दीप दरसै विलास है,
वृंदावनचंद सी गोविंद कह्यौ प्यारी जू सौं तुम ही सो हम हम तुम ही प्रकास है॥
रसना में रस ही कौ स्वाद जैसें सखी जानौं सोई गौरि स्यामै लसतु अनुराग है,
जैसे दिष्ट देखन निहचैता सिध होत तैसे हँस वोलत चढ़त रस पाग है।
रूप रस विवस वढ़त प्रेम सुख जैसैं कानन कै मधि जैसें सुनै रति राग हैं,
इन ही कै आसरै लहैगौ कोऊ दंपति कौ जैसें दरपन में कढ़त मुख भाग है॥
धेय धेयतर धेयतम वृंदावन रम्य द्रुम द्विज संकुलादि मंडल विलास है,
जांवूनद मणि भूमि भूमि रवि सुता रही कंकण आकार चार विलसै प्रकास है।
ता कै मधि मंडल प्रसिष्ट सिष्ठ दर्पन ज्यौं तापै है पदम दल सोडस हुलास है,
ता मधि सखिन जुत दंपति करत रास रूप रास मिलैं नैंन होत मंद हास है॥
सखी अष्ट मुख्य दल मुख्य मुख्य पर राजै विंदा जू निर्माण साजै अरु क्रम जानियै,
कर्णिका विलछन सु लछन नृतत दोऊ सखी रूप गुरू धेय दाहिनैं वखानियैं।
भाव रूप ह्वै अनन्य वेस दिव्य अंग पन मंत्र प्रपन्न मन हिल मिल गानियै,
अंगन नचन सुनचन नैंन नैंनमि में जुगल हसन मंद नैंननि में आनियै॥
जोवन ललित मुकलित कै नृतत दोऊ गंड प्रतिविंव ह्वै अंच भौ मुख हास हैं,
भूषन वसन की झमक रूप की रमक मुकट चमक चंद्रिका मिलै हुलास हैं।
थेई थेई कहैं चहै रहैं इतैं उतैं भ्रमैं प्रेम रस रमैं चाहि चांदिनी हुलास हैं,
वृंदावन चंद श्री गोविंद प्यारो को उघत सुघटता भरी सब मंडल प्रकास हैं॥

स०—प्यारी की रीझ विलोक पिया गति लेत प्रिया मुसिकै तिरछौ हैं।
फूल झरैं कि सुधाधर तैं रूप आकृति आनन हो की रुचौ हैं॥
मंडल में प्रतिविंव दसौ दिस विंव विलोक लला वस मोहैं।
दोऊ चितौ न वितै न यहै रस लै लै सखी हित सौ हित जोहैं॥५१०

मुकट वनाइ कै झुलाइ कै बुलाक मोती मृग मद लाय कै करत प्यारी रास है,
चंद्रिका सु लाल कै ललित मोती नथ हाल गोरोचन अंग लेप सुखद सुवास है।
उरप तिरप भाव नैंननि सुलट लेत क्रम सो उलट वढै आनंद हुलास है,
कियें गरवांही नैंन चैननि निर्तत दोऊ कतम उरोज परसत मुख हास है॥

दोहा—बहै सिंहासन जोग मैं इछा मंडल होय।
रसिक रसीली रस बढै करत रास रस भोय॥
श्रमित ह्वै पौढ़े महल खेलै हैं रस भोय।
सखी जहाँ सेवा करैं मन में अन भै होइ॥

सखी हैं सपुष्ट अष्ट सो सुभाव प्यारी जू कौ महल निकुंज मंजु ही में प्रेम सर सैं, राखत पौढाइ मन भाव चाव सिज्या ही पै नैननि खवासी करैं हेत रूप दरसैं। सोवैं न्यारी न्यारी सो जगाइवे की समैं जान लै लै बाजे साज माज महारस बरसैं, जेई जे बिलास हासि गसे रसमसे भये तेई गूंढ हार पहिरावै छवि परसैं॥

कुंज है अनंत जामैं महा कुंज मन्दिर है सुंदर हैं द्वार चार जोग पीठ भाये हैं, मनौं मई रच्यौ है सुसचे हैं प्रकास नग लसैं कामरवि मानौं संपति लै छाये हैं। ता में है पर्यंक दियैं जुगल छबीले अंक सोए प्रेम गोए रूप छवि भर धाये हैं, देखैं जाल रंध्र सखी पेखैं चहूधाँसौं लगि नैननि नैननि चिसैं डारी किधौं चित्रगाये है॥

दोहा—श्री गौतम अंबरीष कौ ललित संवाद बखान।
बृहद गौतमी तंत्र जिह वर्नन सखी सुजान॥

(अष्टकाल लीला वर्णन)

दोहा—अब आठौं ही काल कौ बरनन करौं बखान।
घरी घरी में कौंन छबि कौंन सिंगार सुजान॥

स०—भाव प्रकरण सुसेवा प्रकर्ण किये सब वर्नन प्रेम की रासी।
आगैं सु आठौं ही कालकौ वर्नन घरीन घरीन लीला प्रकासी॥
सो सुख सनतकुमार सों संहिता नीकै कहै मनके मन वासी।
ता में पटल छतीसवौ है रति है रस है मानौं रूप की रासी॥

पूर्वोक्ति – सो पर्यंक पौढ़ी प्रिया प्रीतम कैं उर लाग।
सो छवि कवि क्यौं कहि सकै छके सुदृग अनुराग॥

चंद्रकांति मनिनि सौं खच्यौ है पर्यंक भाये बुन्यौं है निवार मखतूल की बनाइ कैं, पाटिन कै मधि मृदु ललित बिछौंना तैसौ सिर पीठ सो उठौंना उपमा तनाइ कैं। रसिक लडैती तापैं पौढ़ी छवि कहा कहौं निसा वौं नछत्र निसापति रह्यौ आइकै, बृन्दावन चंद श्री गोविंद जू की प्यारी प्रिये मुख की उजारी भरी कुंज रही छाइकैं॥

दंपति के प्रेम की सुपुष्ट अष्ट वेल वलि ललितादि सखी कै विलास उर छायौ है, लै लै वीना साज चली सेवा सब न्यारी न्यारी भारी भारी तान निज गावैं रस गायौहै जाग लागे सोवन ए राग महारंजनी के बिस मैं भये हैं बतरान रूप भायौ है, आलस हँसन अनुराग डर मिश्रत कैं प्राननि मैं प्रान हार गूथ पहिरायौ है॥

सारौ सूवान कियौ है विचार लै ये अकुलाय हियौ कहा कीजैं ।
दंपति ये सुख संपति सिज्या पै सोए हैं भोए महारस भीजैं ॥
अंक में अंक दियै हैं निसंक ए रूप के जंत्र लगे रस पीजैं ।
देखें ही लागत आखिनि कौं सुख पै इन कौ .सभरायें ही जीजैं ॥

जागे रसमसे रसे रोम रोम कसे प्रेम रस ही के चोर भोरनो कै देखि पाये हैं,
भुजनि भुजनि पास दृगनि दृगनि हास आलस में दुरी मिही मिही छवि छाये हैं ।
झपकें पलक रूप छके लाल फूक देत उकसे उरोज अंग रात अंक भाये हैं,
किधौं घन दामिनी ये जामिनी वरस छाए आये किधौं जामिनी विलास झरी लाये हैं॥

पलकै खुलत पलकापै न लगत पल टकटकी प्रीतम के दृग छके वस कैं,
ज्योंही ज्यों विलोकत है ज्योंही हँसि मुरि जात ज्योंही जुरि जात नेंन राखें गस कसकैं ।
भुजनि में राखी अगरात छबि चाखी ज्यों जँभात चपलात छाकी प्रेम उरधस कैं,
बृन्दावन चंद श्री गोविंद संग लाडिली जू अलसात जगी ललचात लाल रस कैं ॥

दोहा—ये रस के चसके परे मसके नहीं विचार ।
कहि सारौ रवि किरन की धारा झल की वार ॥
उतरत पलकातैं दोऊ चरन ललाई फैल ।
झलकत तरु पल्लवन में मानौं दामिनी मैल ॥

उतरे पलकातें रसमाते अंगिराते दोऊ राते अनुराग भाव मुदित करत हैं,
जोरैं भुज मूलैं झूलैं दाम उर न्यारी न्यारी इत कुच उत उर उकसैं भरत हैं ।
मोरैं अंग अंग मोरैं देह कौं झकोरैं रूप तीछन कटाछैं कोर पैंनी कै धरत हैं,
नेंननि कलोलैं लोलैं प्रान प्रान मोल होत झोल होत वड़ी मानौं खंजन लरत हैं॥

दोहा—उत गुरु जन कौ डर वढ्यौ इत रस वढ्यौ अपार ।
दोऊ तृपत न होत हैं पीवत रूप सुधार ॥४०८

प्रीतम में मन तन गुरु जन की आसै ज्या में वढ्यौ है विलासै सिंधु तरयौ जानपे सनैं,
पाइ अधरन की मधुरता मिठास पास विष की बढाइ कास जव विछुरैं गनैं ।
रूप पंक ही में संक प्रेम के धका की वडी खिस लेस लेपै सुंदरता आयकैं भरै पनैं,
दृग कहैं देखि तू श्रवन कहैं सुनि वातैं मोपै न वनत पिय तुम कह्यौ क्यौं वनैं ॥

श्रुति के सूत सौं वांधे है प्रेम नैं अंग में अंग दिये हैं नवीनैं ।
रूप सकामन तृपत होत हैं पीवत जीवत हैं परवीनैं ॥
गुरु जन कौ डर है वढ़ई अरु अर्क करौ तनयौ कर लीनैं ।
चीरत पीरत नेह के धीवर ऐसौ कठोर कियौ विधि हीनैं ॥

मिल कै चले हैं दोऊ गाढौइ आलिंगन दै रूप ही के चित्र मानौ हिये कर लिये हैं,
किधौं प्रेम साह वडौ ताकौ लै दियौ है धन लैहिगे मिलाप रूप चीठी लैकै जिये हैं।

चले आप आपकौं दिसंतर घरौ ही औरजाय ह्वांही पौढे औढे पट दुति दिये हैं,
कल छल वाला लाला माला ए पहर रहे उठैं बोलैं हिलौ मिलौ ऐसैं आसा किये हैं॥

दोहा—प्रथम पहर पहली घरी यह सुख वरसत छाय।
माता ललहि जगावहो सखी प्रिया हि जगाय॥

चामीकर रोचक सुरच्यौ महा सच्यौ सुख खच्यौ जात नैंननि में अति दुति भई है,
जा में खची मनि तेई रंग जे असख्या भइ चाकि चकि छई कांति छवि भरगई है।
मोहन मन्दिर पौढे ओढे ब्रजचंद पट मुख की मरीचैं रंग होत धारा कई है,
प्रेम जोग जसोधा कै रोम रोम सग रहै आखिन में राखैं सचि यहै गति नई है॥

देखत लला के अंग जसोधा के नैंन पगे जगे है पुलक ए चरन कैसैं धरैंगे,
धरती कठोर पग कोमल करोर विध धरा ही सरोज जीभ धरै नेह सरैंगे।
भई है प्रसन्न स्याम चंद्रमा सु चंद्र मुख खोल उठ बैठे भए हँसि चितै हरैंगे,
कइ धारा छवि की सु जव की प्रथी पै दौरी तवतैं गोविन्द हि जगावै प्रेम भरैंगे॥

मोहन मन्दिर ही में पौढे जाम तीन जान उठी है जसोधा प्रेम सागर झकोरे सौं,
सोभा कौ निकर सो जगावत जग्यौ है जागी रूप की निकाई नीकी आलस हिलोरेसौं।
अध खुले दृग निज वाहर सी दृष्टि विष्ट जाहर ह्वै आवत विलोके रस भोरे सौं,
नैंननि की पाल की लडावत लला कौं लाइ मीठे मीठे हेत सींच आनंद के जोरे सौं।

प्रिया जू कौ जगावनि—

दोहा—श्री राधे पौढी महल चहल पहल लगि रूप।
लाखन आँखनि कौं भये सुंदरता के कूप॥
प्रिये पौढी मन्दिर सुरस वाहर झलकत चारि।
मनौं कलानिधि कोटि छवि लीनैं दर्पन धारि॥
सखी जाय पायन लगी चायन उमडे नैंन।
सुकर चलत विच ही थके तारिन कीने ऐंन॥
सखी कहैं सुनि जागिये हे लाडिली कुवारि।
आनन रूप उदार छवि होइ दृगनि कौ हार॥

आइ हैं जगावन सु जागि उठे याके अंग रंग रंग कोतुक सु देखे हैं छकनि में,
झीनौ पट ओढैं जौं न कामै ज्यौं मरीचैं बीचैं उठैं मुखचंद तें कि फैली हैं तकनि में।
लै लौ सुधा बूदैं किधौं पूतरी समेटत हैं राखैं भरि तारे दै कै रही हैं थकनि में,
पौढ़ी पलिका पै पलिका पै सही जात लही दीनी रूप कारीगर टेव की चखनि हैं॥

उठि बैठी प्रजंक पै अंग दियै महा सुंदरता सु चलैं हरषें।
जहाँ प्रीतम के मिलवे के विलास हैं गाँस हैं आस वजे परषें॥

महा रूप ही मान सरोवर में सखी हंस बसैं मन जे करषैं।
इत कौं उत कौं फिर देखत हीं दृग चंचलता मुकता वरषैं॥

भई परभात प्यारी उठी अरसात अंग रात वेई जात में न भरे सरसान में,
ऐंडे वेंडे परैं पाइ धरैं प्रेम नेंम आय भरै दृग कौतुक सुरूप सुखदान में।
इतै वितैं तकत थकित हँसि रहि जात नेह की निसांनी रसदानी पान खान में,
वृंदावनचंद श्रीगोविंद लाड लाडी माँडी सखिनि में ठाढ़ी मानौं रूप रूपवान में॥

आलस खिलार अलसान में कमाँन कर चार जाम रंगन के रंग सौं ललित की,
हँसनि चितौन नट जान ललचान हा हा खाँन अनखाँन माँन सब ही कलित की।
प्रेम के प्रबल बल कानन लौं ताँन तान प्रीतम विलोकन निसाँनें पै फलित की,
जोरै भुज मंडल मरोरैं अंग अंग थोरै नैंननि की कोरैं रस बान ह्वै चलत की॥

महल निकुंज तें उखर कैं खरी है द्वार पूछैं सखी बार कछु कहिये बैंननि सौं,
रस के बरसैं मेह देह में सरस सर हे तिन कौं दुराबत सुभावत ऐंननि सौं।
हित हू की चित हू की जानैं महाबित हू की हम सुख चाहैं जू वे रावरे चैंननि सौं,
भावै ज्यौं मुकर प्यारी मुकर से आनन दुरावत हँसत कहा फिरत नैंननि सौं॥

सोई हुती सहनी री रजनी सुपन भयौ आयौ मनमोहन जू महा रूप जग्यौ है,
कीनी मनुहार रस भीनी के कटाछन सौं आसव पिवायौ भायौ महा प्रेम पग्यौ है।
चाट बात राचि कहैं साचि एक रचना सी आचि लागि नबनीत तन तय लग्यौ है,
नैंननि सौं नैंन लगि मन बासौं पगि गयौ रंगि गयौ ऐसैं जैसैं पट रैंनी रंग्यौ है॥

दोहा—दुती घरी दांतिन दोऊ फेरक लेऊ वेर।
उतै जसोधा हेत सौं इतै सखी सुख हेर॥
सौंनें की चौकी पै बैठे गोविंद करैं जब दाँतन की छवि छाई।
कूची करैं हलैं लाल बुलाकु अमी मुकता भयौ बूंद ह्वै आई॥
फारी करी हैं उतारी हैं जीभी कि नील सरोज सुगंध बहाई।
यौं उभलौ मुख सौं लगि कै जल छीटन की रचना सरसाई॥
बैठी जसोधा करावै कलेऊ सु अंबुज सौ मुख देखि लला कौ।
मिश्री भरी जामैं माखन कौ रस लौ मुख मैं दियौ हाथ भला कौ॥
खात भलैं मुसक्यात हलौ अधरा मृदु स्वछ सुरूप कला कौ।
देखत होत सवाद बडौ मुख में प्रतिबिंबत रूप पला कौ॥

प्यारी जू कौ दांतिन करिबौ--

हरे स्वछ रंग काष्ठ कुल में जनम जाकौ रस की सी धारा प्यारी दाँतिन करति है,
कूँची के करत खुलैं अधर दसन छबि हीरा लालमनि झांई भूमि मैं भरति है।

बीच बीच नथ मुकता की झाँई ह्वै ह्वै जात भर जात पानि पहिलो रेले झरत है,
दर्पन दिखावत ही सखी सन मुख पीछै देखि प्रतिबिंब पिय मन में धरत है ॥
बैठो प्यारी दाँतन करत सु हँसौ है मुख सखी रूप स्याम सोहै सुकर सुझारी है,
जल ढरकावै ढरकावै दृग दृगनि दै पीवैं छवि रूप करैं कुरली उजारी है।
कूची के करत ऊची उपमा हलत नथ पाइ कै कपोल मोती लोटैं भाग भारी है,
चीरत ही फारी छबि छाजत अन्यारी जामें जीभी झलकारी सुधा चंद कहा चारी है॥
पौंछत हँसत से वसन सौ सु मुख छवि धोय कै गुलाव सखी मृदु कर लयौ है,
लावत अधर सौं मधुर लाल रंग भयौ उज्वल ह्वै गयौ हसे दंत दुति छयो है।
बिसमै ह्वै लाडिली जू पूछत यौं ताफ तान कहाँ तै उपज रंग बहरैं लै भयौ है,
चित्रत सरूप रूप चित्र केहि चित्र करै दर्पन निहार देखौ सोभा सर नयौ है ॥
करत कलेऊ प्यारो सखी एक रावत हैं लाड़ मैं लडावत सुरस मुख देत हैं,
माखन मधुर औं सुगंधत सधर स्वछ अधरन झाँई दंत प्रतिबिंब हेत हैं।
मंद मंद चलत कपोल नथ लोल मोती आखैं छल छल ढरैं छवि गुथ लेत हैं,
कछुक सुदृष्टि है झकोरै हस विन रूप लेत है अचौं न वीरी हँसन समेत हैं ॥
अधरा मृदु चलैं हलैं वेसर को मोती भलै सुधाधर आनन पै भरै सुधा मैंन है,
वामगण्ड ही पै मानौं लीलासी अनंद करै पीरा हरै सव उर प्रीतम कै चैंन हैं,
प्यावै जल सखी आखैं भरि भरि छवि स्वाद खावत लडावत हँसत रस ऐंन हैं।
वृन्दावन चंद श्री गोविन्द प्यारी निजु मुख करोत कलोल रूप उरझत नेंन है ॥

दोहा--धरी तीसरी में चले मल्ल अखारे लाल।
चढ़ी अटा देखत प्रिया रूप उदधि की जाल ॥

सुवल सीदामा आदि खेलत अखारे भारे मल्ल लीला चारे ह्वै परस रस भायौ है,
लरैं अरैं जुरैं मानौं प्रति अंग सुंदरता भरत हुलास उर हरि उर झायौ है।
देखत उतै कौं दृग लगेतइतै कौं तौं तारे रूप के उभारे रस ऐंन मेंन पायौ है,
देखत ही ठाढी प्यारी उचीये अटारी पर दृगन लरावै पिय इत रूप छायो है ॥
सुवल सी दामा दोऊ जुरे है अखारे भारे उर ही सौं उर भिरैं छवि सौं अनूप हैं,
मंडल करत वायैं दाहिनैं फिरत भलै अरत न न्यारे होत वढै रति जूप हैं।
श्रमत विलछन अमृत कस सिंधु राजैं उमडे सरस रस सुंदरता भूप हैं,
वृन्दावन चंद श्री गोविंद के ललित प्रेम सखा रूप कुसती दिखावे देखौ रूप हैं ॥

दोहा--धरी चतुर दोहन चले सुरभी लाल रसाल।
दुहे गए इन के सुदृग देखी सुन्दर वाल ॥

सुरभी समुह महा उज्जल पानिन जुत दमक दमक उठै सेत दुति अंग में,
तिन कौं दुहत स्याम लागै ऐसौ धाम छवि नैंन उजराइ तारे कारे मानौं संग में।

लाडिली अटापै ठाढ़ी देखत आंनद बाढ़ी चखन की गाढ़ी चोटैं चलत उमंग में,
दोहनी विसर दूध भरत है इत उत नैननि ह्वै भरयौ जात रूप सब अंग में ॥
सुरभी समूह रूप लाल कौ विलोक भर प्रेम दोहनी सुकर रूप सुख चैन हैं,
पावसत थन रा भरा भकै बुलावत हैं आप आप दिस ही में हसैं रस ऐंन हैं।
सब ही कौ समाधान करत भरत प्रेम आछी अवलोकन औराची गज गैंन हैं,
वृन्दावन चन्द श्री गोविंद ज्यौं ज्यौं दुहैं दूध त्यों त्यों उन्हैं रूप देत दुहे मेरे नैंन हैं ॥
प्रात ही खरक गई गोधन दुहावन कौं दुहत ही दूध संग मन दुह लियौ है,
कुंडल न डोलन चलन बड़े दृगन की अलकैं हलन में सुधा सो भरि पियौ है।
भुजन हलन में हलत पीत पट छोर कटि की हलन घोंट्टू हल हाल कियो है,
वछए गयो है छुट छूटत लग्यौ है थन आखन सौं आखैं लगी चितै हँसि दियो है ॥
जितै प्यारौ तितै प्यारी श्रुति ही के सूत प्यारो अनुमान दिष्ट धारी वहैं रूप सोतहैं,
जहाँ बैठे तहाँ देखैं हाव भाव रस रेखें उठत उमेषैं ह्वै विशेषैं छवि जोत हैं।
देखत अचंभौ लागै दंपति दुगन आँजै नेह ह्वै कलप राजै कौतिग उदोत है,
वृन्दावन चन्द श्री गोविन्द प्यारो इतै उतै देखत है तऊ दृग न्यारे नहीं होत हैं ॥

दोहा—धरी पाँच मंजन कियौ सखी प्रिया सुख जान।
उतैं जसोधा लाल कौ प्रेम सुधा सुख मान ॥

दीपत प्रकास वान वपु प्यारी जू कौ महा सुंदरता भरयौ सुख सुख वे अपार हैं,
चितये तैं हित ही प्रकास होत कोस वत रितै नही जात जात चढ़ैं छवि धार है।
ऐसी रूप वान याकौ कहा धौं वनाव कीजै मन मन भीजै मन मंजन सुचार हैं,
भूषन उतारैं जितै भूषन वढ़त जात फसलस आखैं खुलैं संपुट सिंगार हैं ॥
खोलत चिकुर सखी वारिज सुकर देखि उठी अलसैनी मानौ नेह में परस हैं,
उतरे सुकटि ह्वै छुवान छ्वै सिमट रहैं उर ह्वै कै गहैं आली नैननि दरस हैं।
किधौं है सिंगार रस तार ह्वै वसे हैं सीस किधौं रूप जंती ह्वै कै निकसे सरस हैं,
किधौं छूटे लूटे लेत मन की दसा समेट किधौं धारा कोप की कि सुधा ही वरस हैं ॥
मंजन करत प्यारी वैठी मनि चोकी तापै अंग प्रतिविंव न्यारे न्यारे होत चार कैं,
स्याम घन तार मानौं छुटे कच भार होत नीलाम्बर चारु किधौं आनन अगार कैं।
सिखातैं परत तोय मंजुल कपोल धोय वेसर सौं मिल कैं उरोजन सौं धार कैं,
जोवन सु जौंहरी लावन्य हैत करन मैं मोतिन की लरैं धरैं हिय मैं संभार कैं ॥
अतर सुचारु वार पल्लवी लये सुधार वाहत वहत कर राखे हैं सभारि कैं,
चीकनें नरम सिही उज हास चिक्कन हैं क्यौंही क्योंही गुहे गए लांवनि अपार कैं।
वैंनी गुहि पाटी प्यारी मोती माल लाल गुनी हिल मिल कांति ह्वै मकर छवि चारिकैं,
मुकर लखत प्यारी किधौं पत्रि त्रिवेंनी तामें दृग लाल न्हात वेहसनि फल धारिकैं ॥

जैसें प्यारी मंजन करत सुढरत जल भरैं मोती पानिपकी पानिप झरत हैं,
हुती मनुहार पौ पियाकी सखी देखन ह्यों देखी अंग सोभा एतौ उघरे परत हैं।
आँखिन द्रिष्टि लपेटी दिष्ट जौ लौं केस छोड़ दोनें प्रीतम विवस राधे चातुरी करत हैं,
छाती सौं लगाइ लीनें भीजै रूप भोजे कीने हँसि हँसि आँखिन में खीजन भरत हैं॥

बैठी सखी वार वे सबारे जंती कांषईसौं जा मैं कारे कंचन के खेंच सोभा देत हैं,
भाल सौं खिचत आखैं खिचि घिचि वढ़ जात चढ़ जात भौहैं मिलैं केस वेस मेत हैं।
ताही समैं आए हैं रसिक श्री गोविन्द चन्द घूघटन सकी करि मिली दिष्टि हेत हैं,
लाजि गिरि गई नेह घेरै परि गई कोऊ आसरौ न पावै सो वढावै रस खेत हैं॥

विछिया अनौट पाय जेव अतरौटा सारी लावनि नीलांवर किनारी सोभा देत हैं,
किंकिनी झमक मुदरी झमक आरसी हू पहुँची वोरीदी रत्न चौक चूरी हेत हैं।
मोती माल धुक धुकी मनि माल चंद्र हार कंठ सरी नथ मुकता कै रस खेत हैं,
वृन्दावन चंद श्री गोविन्द प्यारी कर्नफूल झूलैं वेना वंदी सीस फूल छबि सेत हैं॥

पग के धरत ही धरन छवि भर जाय भर जाइ आनन की चाँदनी वरसती,
जाही कुंज जाय सोई कुंज यो प्रदोपत ह्वै सीस के महल धस्यौ चंद ज्यौं दरसती।
रूप की किरन ज्यौ किरन रंध्रननि फैली मैली जा सौदामिनी लगत हैं परसती,
वृन्दावन चंद श्री गोविंद जाहि पाय हि दै पावड़े विछावै छावै हसतों सरसती॥

दोहा—जसुधा निजु कर लाल कौ करावत असनान।
रोम रोम जाके लखे अपने नैंन रु प्रान॥

छप्पै—चौकी रतननि जटित ललित वर कलित प्रकासैं।
पंक तरंग अनेक एक तैं एक अभासैं।
ता पै श्री व्रज चंद चढ़ मंजन मंजुल कै।
दृग चकोर माधुर्य्य भरत जननी हित चिलकै।
स्याम सजल घन अंग पर ढ़रकत उजल नीर।
चंद कला किरनावली ढ़रकत छवि लगि हीर॥

मंजन करत स्याम अंजन से अंग पर जल ढ़रकत हरपत मानौं चार है,
किधौं जौहरी सिंगार मोतिन की लरैं चारु चहूँ ओर देखैं किधौं आनंद अपार है।
मह मही स्यामता सु उजलता जोतितान आखैं लपटायै लेत सब की उदार है,
जगमग जगमग अंग पर होइ रही भोय रही स्वछता में सुंदरता हार है॥

दोहा—अंग अंगोंछ मुख पौंछ कै चिकुर सुकावत चारु।
आखिन ह्वै हिय मैं धसे फसे लसे सुख सारु॥

सवैया छं०—सरस कर के सवर वेस जूरौ वंध्यौ सध्यौ सर काम ह्वै अनी अन्यारी।
वंध्यौ किधौं आप बाधै दृगन छवि रसी किधौं दृग वंधै रस छकन भारी॥

वरस सनेह उद गेह मारिग किधौं वरस सुख मुक्ति अनुरक्ति कारी।
किधौं संधां वंधान दौरनि छविन ह्वै रही भीर मुनि मुनि चानरी ॥४७५

मैंन कारीगर नैं बुंनी है पीत सूत लैकै दैकै सो किनारी अनुराग रैनी रची है, एसी धोती जोतिवंत कटि में रही है जटि ऊरूपी डुरी न ह्वै छवान लग सची है। चलत हलात जब लालित उठत छवि कवि कैसैं कहै कोऊ उपमा न वची है, अंग में लाहक होत मानौं घन दाम जोति वरषा है सोम सारदा हू पी कै मची है ॥

दोहा--सिंगार उदधि पर रूप भर फिरै सुनौंका प्रीति।
आँखैं लेत चढ़ाइ कै उपरैंना रस रीति ॥
नंद राइ इक दिन कह्यौ कृष्ण चंद सौं भेव।
अपनैं कुल के देवता श्री नारायण देव ॥
जिन की सेवा कीजियै प्रेम प्रीति चित लाइ।
आई श्री गोविंद कै निहचै मन मैं भाइ ॥४७६
आप न यै की आपु ही सेवा करन वनाइ।
लीला हित सब करत है जामें अदभुत भाइ ॥४८०
लै झारी हू जमुन जला रुचि सचि रचना चार।
आदि देव कुलदेव की सेवा करन सुधार ॥

सेवत स्याम रँगे अनुराग मे प्रीति की रीति कौं जो पन गायौ।
लै जला उज्जला सौं अन्हवाय सुभाय सौं कंचन सौं ढ़रकायौ ॥
सेवत हैं इति भेवत हैं उत राधिका की छवि में चित छायौ।
भूषन हू पहिराइ कै आरती प्यारी कटाच्छन माँझ समायौ ॥

दोहा—प्रथम पहर पंचई घरी भोजन करत गुपाल।
छवि सौ राधा रूप कौं छलकत परसत थाल ॥
एक दिवस सिष्यन सहित दुरवासा रिषि आइ।
लीला हित इछा सहत ग्रहन कियौ वर भाय ॥
श्री वृषभान जु जुरे कर करवाई रिषि भेट।
रिषि इछा जस समुझ कै दीनौ वर जु सहेट ॥
जो या तेरे सु करसौं जैवैगौ छिन एक।
रूप वढै अरु आय हू बुध सुख वढै अनेक ॥

वात सुनी वर की सी जसोदा जू राधिका मंदिर वेग बुलाई।
सौम श्रवा निजु हाथन सौं करै भोजन कृष्ण भले यौं सुनाई ॥
रूप लहालह साथ सखी सव सुंदरता वरषावति आई।
प्रेम प्रताप करयों न परै सुकुवारी प्रथी देखि आपु लौ धाई ॥

दोहा—करन रसोई मन दियौ प्रीतम हित प्रिये जान ।
विसकरमा की वधू जब आइ सेवा मान ॥४८८
दर्पन सौ रचि चूल्हौ दियौ मनि लाल वै संद्र मानौ झलकाई ।
सौनैं की टोकनी अमृत विंजन जामें सरूप की होत निकाई ॥
नैंननि सुंदरता वरषैं रस हेत सुवाद वढ़ै सरसाई ।
प्यारी कै प्रेम वढै तन में उत प्यारे की आखें चकोर ह्वै आई ॥
लाल गोविंद सुनी इक वात सुमंदिर राधिका न्यौंत वुलाई ।
फूल गए अंग भूलि गई सुधि नैंननि झूलै सरूप जुन्हाई ॥
आइ गई सुधि वा मुख को रुचि की रुचि रस चाँदनी छाई ।
जाके विलास निवासन रासनि हासनि की रचना झर लाई ॥४९०

आनंद सौ भात दारि प्रीति रस रीति जैसी हाव भाव तैसी तरकारी ज्यौं सुधीर है, चावनि से फूलके सुभावनि सूंधार कीने चाहनिसी मिश्री औं मुखै मिलि भोर है रसद विलास चतुराइ सौ सौंहत भोग दृगनि लुजाइ से आचार हसि खीर है, कुचनि उठनि कंदु लडू ज्यौं बनावन मैं पापर कटाछैं रूप भोजन सौं सीर है ॥

दोहा—करी रसोई प्रेम सौं प्रीतम हित मन साज ।
प्रीतम के उमगें सुदृग भोजन रूप सु आज ॥
भोजन करन चले गोविंद करि सिंगार इह रीति ।
जिह जिह रचना रुचिर सौं प्रिय की रुचि परतीति ॥४९३

जा मौ घेर दार जौं जवाहर उदार कढि फैंटा छोर चारु किंकनी के झनकार हैं, मोती माल स्वर्न स्याम उर में सुभरन रंग उर्वसीन गन प्रतिविंबन के हार हैं । पहुची रतन उभै वाजू वंध हीरा कंठ धीरा नक मोती झूलौ हसन सौं चार हैं, मुकट झलक कुंडलन की ललक रंग दौरन कपोल आँखैं चलन सुढ़ार है ॥

दोहा—करि सिंगार वाहर खरे भरे रूप दृग ऐंन ।
जिन में उन अँखियाँनि की लेवा देई ऐंन ॥

लालन के आवन की रीति भई मन्दिर में जालीन झरोषनि ह्वै रूप झर लायौ है, अंगन की कांति भूषननि की जमाति मिलि मुकट अलाति प्रतिविंव धसि आयौ है । आवत ही द्वार चारु मूरति सी ह्वै ह्वै चलौ आगैं आगैं छविनु की ह्वै प्रकास भायौ है, किधौं पानी पानिप सनेह राधा जू के मिलि भयौ रंगामे जीकौ विलासे घर छायौ है.॥

दोहा – उतै लाल के रूप कौं इतै लाडिली रूप ।
दर्पन में ज्यौं वीजुरी घन की कौंध अनूप ॥

नीलक निर्मलताई उज्जल विमलताई दोऊ मिलि दौरे रूप दर्पन सभार ज्यौं, वढि वढि आवैं रूप मैतैं रूप चिलके के चाक चक्क ह्वै ह्वै कढ़ै मूरति उदार ज्यौं ।

ओर पास सखी वढ़ि वढ़ि जात दूनी चौनी सौगुनी हजार दीप जू पन अँगार ज्यौं,
वड़े वड़े दृग हसि उठत ही दंपति कैं मंदिर उठ्यौ है हसि छवि उर हार ज्यौं ।

दोहा—सखियन प्रीतम देखि कै भोजन आसन आन ।
रतननि चौकी स्वच्छि पै दियौ विछाइ सुवान ॥
तापर बैठे स्याम रवि नीलक दिन जहाँ होइ ।
कोटि सूर नहि करि सकै तदपि उजारौ कोइ ॥ ५००
तिन कौं देखत राधिका भोजन थार वनाइ ।
कौंन भांति वा रूप की लै आवन बन आइ ॥

सुकर सुथार प्रेमवल सौं उठाइ लीनौं मानौं चंद्रमा सौ धरे स्वर्न मनिनि कटोरा हैं,
वीजुरी सी आवै मानौं रूप कौ चाकि चक्क होत घूंघट नीलांवर प्रकास के झकोरा हैं ।
आगैं आनि धरयौ तामें विजन कहाधौं कहू आखैं लगी जेवन वा मुख मिष्ट कौरा हैं,
तृपत न ह्वै लजान हँसन जिमावन में विच विच पानी वे कटाछन केवोरा हैं ॥

जोवन झमक भात पुरसनि दिपति जाति प्रीरित रस रीति नु सौं दारि दरसनी है,
आव न मजेज की सुपापर अजेज टैंटी फुल के प्रसन्न लडू कुच सरसनी है ।
मेथी चित बनि सेती जेती अनियारी आखैं ढ़रे मिरचानी कढी मधु दरसनी है,
तापर कटा छन मुरबे मैं लजान दही सही हसि खीर भूष संग वरसनी है ॥

भोजन करावत हैं छवि सौं लडैंती लाल छवि सौं करत होत कौतिग निहाल हैं,
लटके निकट ह्वै सुकरसों परोसत ही रूप हूँ परोस दीनौ झोनै पट ख्याल हैं ॥४
हँसन सु नेह नथ मोती सेततार छनै अधर ललाई द्रग चपल बिसाल हैं,
लेत कौर दिष्टि जुरि गई है तीरीछो फेरै पुरस कटाछैं रूप सुधा सिंधु छाल हैं ॥५०

दोहा—जमुना जली सरूप भरि लई सुचित्रा हाथ ।
रतन कटोरैं भर सुधर प्यावत रचना साथ ॥५०४
पुनि अचवन करवाय कर मुख पौंछौ इह रीति ।
अधरनि लाली रंगि गयौ कर पल्लव दृग प्रीत ॥ ५०५
जसुधा देखे सवै सुख भोरी सव गुन रीति ।
प्यारी कौं भोजन अवै करवावन में प्रीति ॥

प्यारी जू कौं भोजन करावति जसोधा जवै दृगनि कौं रूप ही के भोजन ह्वै जात हैं,
लाड सौं जिवाव त सुलाड रूप धर जैवैं जैवैं बड़ी आँखिन की चलन छकात हैं ।
कौर मुख लेत छवि भर देत राधे आखैं कछूक लजायैं मोद आयें हँसै वात है,
लाल विषैं राग सो ललो में रंगि रंगि आवै दूना दूना भयौ प्रेम रैंनी छयै गात है ॥

दोहा—जसुधा जल अजवाय प्रिय अचयौ रूप निहार ।
अचवन की कुरलीनि में सुधा श्रवत ज्यौं सार ॥

मुख पौंछत ही वसन में अधरनि लाली पाय।
नथ मुकतन मधि लालरी ताकी तंदुति भाय॥
वीरी दै मुख देखि कै जसुधा सुध बुधि नाहि।
राधा छवि की माधुरी कृष्ण सनेह अन्हाहि॥
विदा करी घर कौं गई छवि नहि दीनी जानि।
लला विषैं लड भांवरी राधा रूप निधान॥
घरी सातवी में कछुक पौढे लाल गुपाल।
पौढ़ाई सखियनि प्रिया रूप उदधि की छाल॥
उझल उझल दोऊ रूप वे पौढे हूँ मिलि जांहि।
दोऊ महल मिलि गौरता नीलक उरझ सुहांहि॥

दोऊ ही महल न्यारे न्यारे पौढ़ैं तऊ मिलै झांई दोऊ बीच गंगा जमुना ज्यौं धार हैं, जानी जात जालीन झरोखन ह्वै रूप छनि दोऊ सन मुख गौर स्यामता उदार हैं। सूते हंस नेह रंग दौर दौर देह धरैं करैं हैं विलास मानौ सुंदर सुढार हैं, जाहर जवाहर सुवाहर प्रभा के फैलैं आखिन कौं गहने लगन उर हार है॥

उतकंठा सौं जगि उठी संग ही जगे गुपाल।
उतै लडैती यों जगी प्रेम उदधि की छाल॥
घरी आठवी में दोउ लागे होंन सिंगार।
इति सूरज पूजाहि विधि उत गोचारण सार॥ ५१६

लाल अतरौटा लाल मनि जासौं फीको लगै नीकी लगी कँचुकी है लाल जगमगी हैं, लगी है नीलांवर में जागती किनारी कीनी बादर कौं चीर सुख चंद जोति जगी हैं। रंगी हैं दिसा प्रकास सखी सीच कोदन की आमें मधुरिमा सा जि रही होति रंगी है, बाहर कें जन कहैं सीस के महल मांझ दामिन धसी है किधौं जगा जोति जगी है॥

सूरज पूजा कौ साज कियौ सखी लीनी है एक हैं एक सवाई।
कोऊ लै चंदन कोऊ लै वंदन कोऊ लै थार सबै छवि छाई।
मधि प्रिया सब ऐसी लगैं मानौं जोतिसि चकमै चंद कहाई।
दर्पन मन्दिर माझ धसी मानौं ओढि नीलांवर दामिनी आई॥

दोहा—वन विहरन प्रीतम मिलन सूरज पूजा व्याज।
किये सिंगार सुप्रेम सौं रिझ वन मोहन आज॥
चलन कौंन विधि महल सौं वाहर आवन देखि।
दीप मालिका सी मनौं रूप दृपन अवरेखि॥

ठुमक धरत पग नूपुर झमक वजैं झमकत रूप आयौ वाहर प्रकास हैं, जैसैं जैसैं आवैं पग धरत धरत द्वार द्वार लियें आवैं मानौ रूप ही के रास हैं।

जहाँ जहाँ खरी होत सोई द्वार चित्रसोत मनिन कपाट प्रतिबिंबन विलास हैं,
बड़े बड़े दृगन सनेह भरी देखन सौं प्रीतम मिलन के हुलास भरी हास हैं॥
दोहा—पैरी उतरत द्वार की आवत मग कै मूल।
प्रीतम वन कौं जान विधि अवलोकन में फूल॥
उतरत पैरी मानौ उतरत रूप साँचैं मनि प्रति बिंब राचैं चलत सुदेखियैं,
उतरत जासौं और उतरत जापै वे तौ न्यारी न कहावैं कोऊ कौतिक विसेखियैं।
आगैं छवि चलै त्योंही पाइ छवि बिचलावे आवैं सबै राधिका ह्वै गई राधा ढिंग लेखियैं,
हँसन तरोर अधरन को ललाई आगैं पाछे दंत कौमुदी वे उज्जल परेखियै॥
खरी यौ भई है देखि आगम गोविंद जू कौ चंद से मुखारविन्द रूप बरसावनी,
बड़े दृग बड़ी दृष्टि दूर लौं विलोकत ही दिसा इतराई रूप रचना की छावनी।
प्रीतम के आवन को राह छवि छाइ राख्यौ हँसन प्रभा की फुंहीं आखिनु छकावनी,
सखी अंस भुज दै कटाछन की सामालै कै झर लाइ राखी वाहि भेवन सुभावनी॥
दोहा—अब जसुधा निजु लाल कौं लागी करन सिंगार।
गोचारन वन जान कौं भूषन मनि गन हार॥
इंद्रनीलमनि सौ सुतन स्वछ लछि छवि प्रतिबिंब भास जाकी झाँई के ह्वै जात हैं,
जा के अंग रचना सिंगारत जसोधा रानी मन्दिर सिंगार्यौ छवि घर में न मात हैं।
जे जे अंग भूषन बनाए पारजात भए एते ते पलटै हैं रंग आप में सुहात हैं,
देखे हैं गोविंद जिन एक बेर आखिनि सौं आखैं द्वार ही हैं गति ह्वै गई अलात हैं॥
भूषन यौं पहिरावै जसोधा प्रकाश मनिंद्रन के से बढ़े हैं,
होति अनलंकृत के आखैं बिलोकैं मनौं दीपमालिका चाव चढ़े हैं।
वे लहकारी उजारी सिग्धता अंगन की छवि लै लै कढ़े हैं,
भीतर माता जू बाहर मित्र चकोर है रूप के प्रेम पढ़े हैं॥
बनि ठनि निकसे उदार मनि मन्दिर सौ मानौ पचरंग घन मैं सौं रवि स्याम है,
नीलाक सिनग्ध स्वछ किरनैं सु अंगनि लैं नेह कौ प्रकास कोटि सूर अभिराम है।
फूल उठे कमल सुमित्र चित्र रचना के आँखिन सौं आँखु नु कौ चाक चक्क धाम हैं,
हँसन हँसन को मिलन में बसत मोरयौ मधुप कटाछिन कौ बिच बिच काम है॥
कोऊ तौ आनँद मुख स्वछ महा दर्पन सौं कोऊ सोभा सर माह कमल सौं देखियै,
कोऊ अंग प्रभा तामें सौनैं की सी दौरै धरा कोऊ चंद्रवासी हँसन छविसु लेखिये।
कोऊ रवि कांति मणि केसे भूषनन सोहै कोऊ मोती पानिप सौ गौरता विसेखियै,
बीच में गोविंद पचरंग माल मानौं बन पै उमड चले घन घन लौं असेखियै॥
आए सखा सब प्रेम के जंतर रूप के मंतर कहै खिलौना।
स्याम चिकन है रंग लागै कोऊ गौर औ रंग अनेकनि भौंना।

ऐसे विराजत पास गोपाल के मंडली की उपमा कहै कौंना।
अद्भुत सूरज पास विराजत राजत हैं किधौं कंज खिलौंना॥

किये है सिंगार वे उदार दरसन आस स्वछ नटवर तास के प्रकास किये हैं, जूरा में बँधे हैं मोर पिछ कर संग वेनु काछनी सुकटि में सुप्रेम रस पिये हैं। जैसौ हरि रूप जामें उठत अनूप छवि रूप की प्रवीनता लौ रूप फूल हिये हैं, सब ही के नैंननि में राजत गोविंद किधौं नैंननि की मूरति गोविंद दृष्टि दिये हैं॥ कोऊ तौ आनंद मुख स्वछ महा दर्पन सौ कोऊ अनुराग रूप कमल सौ देखियै, कोऊ अंग प्रभा तापै सौंने की सी दौरै धरा कोऊ चंद्र श्रवा से हँसन छवि लेखियै। कोऊ रविकांति मणि कैसे सुभूषण सोहैं कोऊ मोती पानिय सौ गौरता विसेखियै, बीच में गोविंद पचरंग वगमाल मानौं वन में उमड़ चले घन यौं असेखियै॥ भीतर तौ बाँस जाके ऊपर लग्यौ है सौंनौं तापर जराब जामें छिद्र सात राग हैं, तामें पचरंग नग लगे लाल हरे पीत मर्कत फटिकनि के जगमग वाग हैं। जाकौ लैं वजावत गोविन्द अधरनि धरि वाजै मानौं राग रंग मूरति ह्वै पाग हैं, व्यापि गई ब्रज में सु गोपी ग्वाल गनन में धेनु दौंरी आइ चित छकि अनुराग हैं॥ किधौं काँति पर्वत की किरन निकर धाइ किधौं चन्द्रमा सौं सुधा मूरति चुचाइ हैं, किधौं दर्पन खानि वनि वनि आँईं सबै फटिकमणि जोति जगमग अरु झाईं हैं। किधौं सोभा प्रभा हेत पायन चली है धैंनु प्रेम उपरैन ऐंन रति की बनाइ हैं, मोतिनु सहस्र गुनी कनिय करार गुनी उपमा अरी नी आखैं छवि कौ छकाइ हैं॥ एक पग धरे एक वेरि हरि देखि लेंहि दूजौ पग धरैं फिरि देखैं जब चैंन हैं, जाही कौ उचारैं नाम सोइ तौ हुँकारै फिरि याही मिसि भरैं रूप आखैं भरि अैंनहैं आगैं धेनु वृंद पाछै पाछै श्री गोविंद आपु आपु कै निकट मानैं स्याम छवि देन हैं, तृन के चरत में सुरति दिष्टि लौ लौ आवै प्यारे की निहारन हँसन कर वैंन है॥

चले हैं गोविंद वनि गोधन चरावन कौं द्वार पै जसोधा अरु गोपी ठाढ द्वार हैं, जालीन झरोखन ह्वै महल महल ह्वै कै मुख झलत मलौं जाकी उपमा उचार हैं। किधौं स्याम चंद्र के चकोर गौरचंद भए जिन हूँ न छाडत वे सुंदरता हार है, उरझैहैं नैंन सुरझै न और उर जाहि हँसन कटाछन निहारन उदार है॥

दोहा--तबी धरी गोविंद जू गहवर वन कौं जाँहि।
नंदी सुर सौं विजै ह्वै ह्वै वरसानैं माँहि॥
वरसानैं की ओर ह्वै चले चरावन धेंन।
देखत रूप दृगन चढै ह्वै मत वारे मैंन॥५३८
खेलत ही चले मित्र सबै नंदनंदन से जिन प्रीतम पायैं।
चेलौं हसैं जू कटाछिनु सौं मधुमंगल नाचत रूप लुभायैं।

गैदैं उछालैं सु फूलन की चलौं आँखैं रसीली सु रूप छकायैं।
प्रानन प्रानन खेलन होत है हास विलास पारहास कायैं॥

मित्रन सहित धेनु सोभित चलत आवैं नंदी सुर वारिध तें वादर जौं हूल हैं,
घटा ज्यों चढत घन स्याम वग मोती माल ख्याल पीतपट कौं धनुष छबि भूल है।
महल महल चढ़ी गोपी प्रेम ओंपी देखि मुरली बजावैं गरजन कौं न तूल है,
धुनि के सुनत बरसानौं रूप ओप उठयौ दामिनी नु सेती ज्यों सुमेरु अनुकूल हैं॥
प्यारी खरी द्वार सब सखी हूँ उदार सोहै जोहै छबि राधा साथ सबै राधा भई है,
प्रीतम सनेह रस हँसी की विलोकनि में जानि लीनी निपट कटीली भौहैं रई है।
मथ्यौं गयौ मन मग चोकनौं ह्वै गयौ यातैं पायहू न चलैं पीछैं प्रेमगति नई है,
रूप रस चाह प्यारी चलत उजारी जहाँ ह्वै उमहि श्री गोविंद गोधन लै आए हैं॥

पीठ दियै चली जाँहि केते द्रुम बीच ताहि उठि जुरि जाँहि हँसि नेह फेर भाये हैं,
मित्रन सौं कहैं हमैं ऊँचे द्रुम उतै जानौ जितै वे विलोकैं उतै इतै द्रग लाए हैं।
द्रुम प्रतिद्रुम ह्वैकै साखान रंध्रन ह्वैकैं जौ लौ राधा आखिनि सौं आखैं अरुझात हैं
त्यौं लौं तन मन प्रान सब विहवल होत चलिजात थिर होत प्रेम सरसात हैं।

ठठुकत गऊ चलैं सबै अटकी छबि गोविंद।
गोविंद अटके रूप सौं सो राधा मुख चंद।
पूजा लै वन कौ चली वन मान्यौ आनंद।
पाछे सौं गोविंद चले गऊ कुमुद ज्योंचंद॥

दोहा—ए गहवर वृंदा विपिन वे गहवर इह ओर।
गऊ चरावैं मित्र सब कृष्ण प्रेम उठ भोर॥५४५

कैसी है भूमि जहां चलैं झूमि वे ग्वाल गुपाल गऊ संग लीने।
सुंदर स्वछ लसैं प्रतिविंवत भीतर वाहर अद्भुत कीने।
देखैं चलैं खरे होत भली विधि रूप सौ रूप मिलै हँसि दीने।
यौं छबि जोति उदोत प्रकास चितोंन इतैं उत होत नवीनें॥

गहवर ही वन ओर दियै हैं दियै संग गोधन मित्रन के।
मानों दर्पन से द्रुम ओप उठे प्रतिविंवत चंद्रमा चित्तन के।
जब लागैं अनेक चढै छबि देखि वढ़ै परिवार विचित्रन के।
मनि भूषन यौं दीप मालिका साथ चली आवैं प्रेम पवित्रन के।

दोहा—वन के निकट गई प्रिये वन कीनौं सिंगार।
फूल फलनु की छविनु सौं ह्वै गयौ उर में हार॥

प्यारी कौं देखि उठयौ वन यों हँसि फूल वे फूलन फूल खरे हैं।
आवै किधौं वन सामु ही लैंन किधौं सत रंग वे रूह भरे हैं।

चंपक और चवेली कंदव गुलाव औ वारिज भेट धरे हैं।
ह्वै किरपाल प्रिये मुसिक्याइ सुदीपति की द्रुम दीप करे हैं॥
हरि चंदन औ पारिजात मंदार असोक हूँ फूलनु यौं वरषै।
रूप पौंन लगे छुटैं साखानिसौं वे नौछावरि होत तऊ हरषै।
वन सोभा लगी है अकास हूँ में पचरंग जराव कौ सो परषै।
हँसि देखत राधिका ऊचैं जवै दृग दीरघ सुंदरता सरसैं॥
वन भूमि करै निजु दास भलौ धरै पाँवड़े फूल सरोजन के।
सुगयौ चाहैं दूर ह्वै जाइ नजीक वढ़ावै विलास सुभौजन के।
जाहि देख्यौ चहैं जु मिलाइ दै ल्याइ गोविंद के रूप सुसौजन के।
छबि माधुरी कौ कहूँ और नही रस सिंधु वढै सुख कौजन के॥

द्रुमनि के वृंद जा में फूलनि के वृंद में सु गंधनि के वृंद में भवर वृंद भाव हैं, खगन के वृंद में रसीले वोल वृंद रति राग रंग वृंद वृंद सुंदरता चाव हैं। रचना के वृंद रस रचना के वृंद प्रेम रचना के वृंद छवि छंद वृंद राव है, आँखिन के वृंद औं कटाछिन के वृंद हँसि भाषन के वृंद यातैं वृन्दावन नाँव है॥

दोहा—आई वन में राधिका रूप सखी सब पास।
दर्पन मंदिर दीपगन ह्वै रह्यौ हास विलास॥
खरी डारगहि कुंज की पिय उतकंठा होइ।
वड़े वड़े उन दृगन की दस दिस दौरै लोइ॥
सकल दिसा गोविंद कैं रूप वनी हैं रूप।
आवैं छवि की माधुरी तरु तरु माझ अनूप॥
अब आवैंगे कृष्ण जू जिन कौं चित्र सरूप।
संकेत सु वन यों दिपि उठ्यौ राधा रूप अनूप॥
दसवी घटिका में जहां आवैंगे गोविंद।
राधा रवि छवि किरन सौं फूल रहे सब छंद॥

देखे तमाल लता लपटे अचले से भये सु चलैं लखियै हैं।
जो छवि छाइ उमाहि सु नैंननि वैंननि सौं ढकियै रखियै है।
पूछत डोलौं सखान कौं सूचत सुंदरता वन की तकियै है।
चित खिलावत चाव ही चाव सुहाव औ भाव छुकैं छकियै हैं॥
चाह वढ़ी जिय के जिय में वह प्यारी के रूप की जोति जगी हैं,
जा को चितौन के डोरैं वंधें दृग खैंच गये मति रंग रंगी हैं।
पूछत जात तमालन सौं वह त्यारी कहौं किह और खगी हैं,
ऐसे सनेह विलास रंगे पिय नैंननि की पुतरी लै रगी हैं॥

छाड़े सखा वे चराबत गौधन नैंन चरावन आपु चले हैं,
वहै झुकराइ कै रूप की झाई उन्हैं उरझाइ वे प्रान पले हैं।
धेनु सबै पसु पक्षी उहाँ के सु व्याकुल देखि वियोग दले हैं,
वाँसुरी सौरस कान भरे भरे नैंननि में हाँस रूप टले हैं॥
उगि ही उगि रूप कौं अंक भरें मानौं कुंजनि कुंज में सेज पैं ज्यौंही,
पगि ही पगि जागि उठी है सफूरति आगैं चले सुख हो है त्यौंही।
लगिही लगि आँखैं सौं आँखैं मिलै वह राधिका की छवि प्रेम छल्यौं ही,
छकि ही छकि माहि वियोग दशा वृषभान सुता जू रहौ उर क्यौं हो॥५६१

ऐसी गति देखी वन भूमि हरि प्रीतम की कीनौं उपगार जा में कौतिक करोर के,
ह्वै रही सिमट दूरि निकट नजीक भई आँखैं जुरि गई उर जुरे मिले जोर के।
देखत कलपद्रुम के सवन रूप दोऊ देखत कहैगौ कौन जा में सिंधु वोर के,
कौंन कल माधुरीं हँसन औ कटाछिन जा में हल उठैं मोती नीचैं नथ छवि ओर के॥

प्रेम प्रमत्त खरे सुख संतत जंत्रत मंत्रत हैं रस हीतैं,
गौर औं स्यामए रूप सुधाम हैं वाम प्रियापिय हैं वस हीतैं।
अंस भुजाकर एक उरोजन यौं परसैं रचना मिस हीतैं,
कैसी विराजत मोतिन माल मिलैं मुसिकयान दुहूं दिस हीतैं॥
प्रेम सौं प्रेम औ नेंम नेंम मिले अंग सौं अंग जोति लगी है,
राग सौं राग प्रकास प्रकास सौं राचे मु नैंननि प्यास पगी है।
सो मुख सौं मुख मैंन कटाछिन रूप की चातुरी हौंन लगी है,
पानिप देह में नेह चुचायै खुलैं रंग लै मुसिकयान खगी है॥

जुगल निहारें पात पात फूल फलन में जुगल ही दीखैं हासि रस के उदार हैं,
फेर जो निहारैं अंग अंग रूप रचना के रचना सौं प्रतिविंव द्रुमनि के सार हैं।
अद्भुत सिंगार वन कोने हैं वसन पत्र जैसैं जहाँ चाहियैं फूल भूषन निहार हैं,
पाट सौंन गुहे न सुनार के धरे है एतौ देखैं जो निहारवन कीनें यौं सिंगार हैं॥

कोऊ तौ मोती कौ पानी हरै द्रुम कोऊ तौ सोंने की कांति सुधारैं,
कोऊ कहै ए प्रवाल को लाल है कोऊ कहैं मनिलाल हू हारैं।
मर्कत हू मनि ऐसी न होति हैं जैसे तमाल हैं कौंन उचारैं,
हीरे औ पन्ने पिरोजे सुछी रहैं या वन की उपमा न विचारैं॥५६६

दोहा—जो उपमा सुख देन ही, द्रग क्यौं लहैं सरूप।
ब्रह्मादिक कौं दुर्गम है धाम सु परम अनूप॥
जो राधा गोविंद की कृपा सु दीपक होइ।
तौ बृन्दावन धाम की नैंननि झलकै लोइ॥

कै प्रसन्न वन आपु ह्वै सरस परयौ जिय जानि ।
तब सब छवि गोविन्द की नैननि में रहैं आनि ॥
याही सुख छवि साज सौं आये सघन निकुंज ।
आस रास रस रीति की केलि कला रस पुंज ॥२७०॥

मंडलता सौं दिये सब मंडल वृक्ष लसैं सुख स्वच्छ प्रकासी,
उज्जल मुक्तनि तैं सत सै वर छाए हैं ऊपर जोति कलासी ।
नैननि की गरवाँही दसौंदिस देखत हैं उपमा जिय भासी,
घेरे हैं खंजन चारु मनौं कोऊ आनंद प्रेम विलास की हाँसी ॥
नखतैं सिख लों पिय प्यारी सिंगारी सिंगारे हैं भूषन आखनि सौं,
सीस फूल हू चन्द्रिका कौ फुंदना दाहिनैं उपमा छवि लाखनि सौं ।
हलि हाल किनारो सौं आनि लगै सुख की सुषमा हँसि चाखनि सौं ।
रस अंजनदार बड़े दृग चारु उडैं मानौं खंजन पाखनि सौं ॥

प्यारी जू सिंगार करैं प्रीतम कौ नख सिख मुकट कस्यौ में जामें जग मग रूप कौ,
आंखिनि सौं आखिनि मिलत हसि उठै दोऊ वीजुरी से कौंध उठैं नग छवि जूप कौ ।
जासौं वर मौती नथ मोती भरि भरि झूलै छनी परैं चाँदनी सु उज्जल अनूप कौ,
अलकैं कपोल कुंडलनि नग फैली जांहि पानिपके कनिका वे देखन सरूप कौ ॥

दोहा—घरी ग्यारही में दोऊ खेलन रूप सुरास ।
रोम रोम में रूप भरि प्रगटै नख सिख हास ॥

ललितादि सखी अष्ट रंग स्वछ दर्पन हैं प्रति प्रतिविंवन प्रकास रंग होत हैं,
राधिका गोविंन्द मद्धि ओर पास माला वलि जगि जगि जग मगै रंग श्रबा सोत हैं।
ह्वै गयौ निपट रंगा मे जो कौ निकेत वन अंगनि सौं दौरैं रंग रंगे द्रुम सोत हैं,
पात पात रास होत हासि हू विलासि होत चासि होत रूप जामें वढत उदोत हैं ॥

भुजन भुजन जोरैं मंडल पैं मंडली में सखी लखी छकी छबि चातुरी में वास हैं,
पावन सौं पाव कटि कटि सौं वरावर हैं उरजन की कोरैं क्रम मुख मुख पास हैं ।
तैसैं ही अलात दृग दृग सव अँगनि के मधि प्रिया प्रीतम हैं रूप के उजास हैं,
जित जित मंद मुसक्यान होत लाडिली की जित जित प्रीतम के नैंन करैं रास हैं ॥

एक एक भुजा अंस अंसनि पैं लीनी धरि एक एक भुजा लै हथेरी अरुझाई हैं,
आखैं अरझाइ गति सवै सरसाइ भरि अंगनि में आइ नृत्त सिकल कराई हैं ।
झमके सहाइ वे कटाछिन चटकताई रूप की निकाइ दौरें हँसनि सवाई हैं,
जाग जाग उठैं स्यामताई गौरताई मानौं मंडल पै लहा लही ह्वै ह्वै और छाई हैं ॥

चक्राकार गोपी सब ओपी सारदा सी जामें सव ही की एक दृष्टि एक फेर रास हैं,
मध्य प्रिया प्रीतम की दृष्टि सौं फिरत आवैं आंखिनि की चहा चही हँसनि प्रकास हैं।

मुकट अलातन के चन्दिका सजातन के चाद नैं कटाछिन के झमक उजास हैं,
अद्भुत जुगल छवि प्रेम ससि मार हू न सखी है नछत्र झमकनि के निवास हैं ॥
हीरनि मंडल पर छवि के दरस भरि भौंहन सौं भौहैं जुरि वचन विलास हैं,
थेई थेई करि वेस मुख ह्वै उलटि जात सुलटे ह्वै जात न छुटैं चितौ पास हैं।
तिरछी कटाछैं रूप रस की सी गाढैं वड़ी आखिन की फासैं गडै उघटैं सु रास हैं,
प्यारी कौ चिवुक पिय हाथ प्रिय प्रीतम कौं लाडसौं नचत चलैं आनन सुहास हैं ॥

उरप तिरप लाल लेत एक आँगुरी दै मुकट किरन अग्र लह कैं सुरस कैं,
थेई थेई कर वे नचत जात प्रिये ओर वेइ नैंन जोरि कै रचत कछू हँसि कैं।
तैसैं आँगुरी दै चंद्रिका के फूँदना के छोर तिरछे कटाछन हिलोरे उरवस कैं,
बृन्दावन चंद श्री गोविंद प्यारी नख सिख पोहि राखी पिय प्रेम आंखिन में कसकैं ॥
प्रीतम के मन की समझ प्यारी तृत्तति है फिरत न भौहन सौं भौहैं वाधि कै चंही,
दाहिनैं सुकर एक छोर गहि घूँघट कौं चंद से वदन हासि मंद मंद ह्वैत ही।
लाल के चकोर दृग पीवत अघात नाहिं थेई थेई कोकिला के सुरता सु दैस ही,
यह छवि देखि हरि भये हैं विदेह वर प्रेम भरि कें कटाछि उर उरझै रही ॥

नाचत परस पर हाव भाव दाव भर सुघर सुभर ताँन माँन सुख दाई मैं,
नूपुर मिले हैं जंत्र झनन ठनन मंत्र नैंनन एकत्र गति मति छबि छाई में।
अभिनय कटाछिन में हँसन बिलासनि हिले मिले जात गौर स्याम अधिकाई में,
सखी अकुलाइ प्रतिविंवन खिलाइ वे तौ राधाकृष्ण निहचै न खेलैं चतुराई में ॥
भुज वे आटी सौं जौरैं आँगुरी हथेरी जोरैं छविन कौं जौरैं फेरैं खेलैं हैं सुछंद में,
पाइन के फेरन फिरन कटि किंकनी की उर स्वछ भूषन फिरैं हैं सोभा कंद में।
मुकट फिरत फिरैं चन्द्रिका के चाक चक दौरी फिरै हाँसी मुख छायौ है अनंद में,
फूँदी की फिरन सूधी आवै चितवनि दौरी वडी वडी आखै वे ढरारी ढरैं फंद में ॥

नचत चले हैं दोऊ रचत अपार रूप कौतिक अनूप ताके वढ़त विलास हैं,
भुज हैं भुजा मैं नायैं भाल भाल सौं लगायै मिले हैं कपौलन कपोल सुखवास हैं।
चंद्रिका मुकट पर औढैं जरी ओढनी सु छोर दुहूँ हाथन में चौंर छवि रास हैं,
खुल रहे मुख हल रहे वर मोती नथ मंडल में दौरे फिरैं पानिप औ हास है ॥

सुदाँमा पर्वत वत स्वछ मनि मंडल पैं राधा वीजुरी ज्यौं घन गोविंद उद्योत हैं,
कौंधे कौ वढ़त जात कौंधौ सुनृत्तति अति स्यामा स्याम खेलैं स्याम गही प्रिये जोत हैं।
छवि उरझी हैं आखैं आखैं न सुरझ सकी उरझे कटाछन के रस रस होत हैं,
दिष्टि के मिलैं तैं मन हँसन लपेटे गये नथ वर मोती झरैं पानिप के सोत हैं ॥

दोहा—रास रसिकनी रसिक कौं जो जन रहै निहार।
आखिन में उरझ्यौ रहैं रूप जवाहर हार ॥

दोहा--घरी बारही में जहाँ लीला होत वसंत।
वहै सुवन वहै मन भयौ वहै सुरस वरसंत॥

गर्म सीत सम स्यामा ग्रीषम सिसर बीच रितुराज जोवन कौ प्रमुद सुवास हैं,
हँसन पुहप से सु अल कै भवर सो है द्विज कल भासन मधुर प्रेम आस हैं।
त्रिविध समीर सास स्वासन सरीर मैं ते मंदता सुगंधता महक छवि रास हैं,
बृंदावन चंद श्री गोविंद प्यारी जू कौ तन वन्यौ है वसंत वन रूप कौ विलास हैं॥

बृक्षन माहि संतानन कौ बन होत वसंत जा कुंज मैं आयैं।
लछ गुलाल वे पल्लव लाली की धूँधरि लाल भई छवि छायैं।
स्वर्ण से फूल सु दामिनी केसे हैं केसर सी वरझाँईं सुहायैं।
अवीर किधौं हँस देत प्रकास में गावत है भवरे अरु झायैं॥

खेलैं वसंत यो लाल गोविंद लडैती जू घूंघट की रचना सौं।
लाल चलावैं लै मूँठी गुलाल लड़ैती अवीर चितै हँसना सौं।
आखिन की चलि चालनि आनन चाहन चौपन कान कनासौं।
डार गई दृग में दृग पूतरी सूत लज्यो है चितै रचना सौं॥

दोहा--घरी तेर ही में जहां लीला होरी जोइ।
कुंज जहां वे खग सवै बोलन होरी होइ॥५६०
सौंज सवै जहां होरी की होत है आवत ही दोऊ कुंज में ज्यों ही।
तैसैं अवीर गुलाल औ केसर चंग उपंग बजैं उठि त्यौं ही।
होत बड़े जहां नैंन कटाछन मार मचै रंग भीज भिज्यौं ही।
आनन आनन होत हँसानन प्रान रंगे रंग छावनी छौ ही॥

दोऊ लियें रंग दोउ हीये हैं उमंग संग बूका पचरंग पाँच रंग के विलास हैं,
मूठिन उठाये छख विन हीं उड़ायैं आती आँगुरी अदायै लाली नैननि निवास हैं।
साँचे ही उड़ावैं तौ अकास द्रुमलता कुंज रंग के ह्वै जात चाँदनी ज्यौं दौरैं हास हैं,
उज्जल कटाछैं रस होत जात आछैं वड़ी आखैं चलि भाषैं हो हो होरी के विलास हैं॥

सखी हैं सहस्रनि सहस्र ही वसंती सारी सौनै में की ज्योति काढ़ि न्यारी विधि रची हैं
राधिका प्रकास छवि सवही में दीपति हैं दर्पन सी कुंज नाना रंग होरी मची हैं।
भीजि गए रसिक कटाछ पिचकारिनु सौं उड़त गुलाल मार उपमान वची हैं,
झलक झलक उटै लाली यो कपोलनि में हँसन अवीर मै जु लाली मणि खची हैं॥

फटिक मनि मंडल पैं चढ़ि गये खेलत ही राधिका गोविंद होहो होरी सखी संग हैं,
ह्वै गयौ अरुन वा गुलालकी ललाइ ही सौं रूप की जुन्हाई ताफ ताई के से रंग हैं।
नृत्तत सुखेलैं वे कटाछन कटाछन ही आगैं वढि उलथै गुथैं हसैं उमंग हैं।
सारदा रंगीन भई होरी हू प्रवीन भई निघट न गई छविनि वरन पंग हैं॥

दोह—घरी चौदही में जहां झूलन ही में फूल।
रचे हिडोरे मनि मई वढ़ै रूप रस झूल॥

चारौं ओर हैं तमाल औ प्रवाल ताके द्रुम वीच वीच मोती द्रुम स्वर्न की अवनि है, मद्धि द्रुम उभै स्वछि जोति मै अरुन रुचि सुचि रही डोरौ रचनानुकौ भवनि है। ऊपर वितान तन्यौं मोतिन कौ जाली दार पानिप निहार वरषानि सीचवनि है, चारु हँसि भाषिनी कटि खिनी सखीन वीच झूलत गोविंद राधा रूप कौ द्रवनि है। ऊपर वितान रूप झूलत निधान दोऊ दुहू आँननानि छवि स्वछ होत रूप में, होत प्रतिविंव वा वितान मै तैं मोतिन के स्रोत झरना से झरैं भरैं सोभा जूप में। किधौं स्वाति बूंद स्वेत सीप की कपोलन की लोल ह्वै ह्वै गोल होत दरसैं अनूप में पानिप हँसन मिलि मान्यौं अद्भुत मेघ स्वाति मिस वरसैं हैं दरसै सरूप में॥

झूलत सुरस सौं गोविंद राधा रससौं सु झूलत कपोलनु में अलकैं हिलोरे सौं, नथ मुकतनि सौं उरझे कर्न फूलनि सौं प्यारी सुरिझावै झोटे वढ़े हैं सुजोरे सौं। अनुखन वढै ज्यौंही चढै रमकनि दूना उझक लडैती लगी छानी छवि वोर सौं, झूलवे की सुधि न झुलाइवे की सखीनि कौ प्रेम कें हिडोरे वे कटाछन झकोरे सौं॥

दोहा--घरी पंद्रही में जहाँ कुज रसीली देखि।
रितु वसंत जहाँ नित रहै सोभा अद्भुत लेखि॥

झूलत में फूलत में मुरली गई है गिरि राखी है दुराइ सखी जामें रस खेत है, अद्भुत विनोद दृष्टि सवनि की एक ह्वै ह्वै दैनन कहैं हैं वढै स्पार तन हेत हैं। सवनि की आँखैं राधा आखिनि सौं मिलैं देखि करि अनुमान विनैं चातुरी समेत हैं, वड़े वड़े दृगनि निहार निरधार प्यारी मुरली दुराइ दीनी हँसनि समेत हैं॥

सारौ सुक कोकिला भवर समुदाय जामें धुनि छाइ राखी सव काम मतवारे हैं, त्रिविध समीर झरना से झरै रस ही कै मौरें हैं कदंव अंव फूले फूल सारे हैं। फूले हैं तमालफूली माधुरीलता की सोभा साखानिमें साखाज्यौं भुजामें भुजा डारे हैं, कीनी गरवाही देखि आँखैं अरु झाई है कपोलनि में झाँई हसैं रूपे उजियारे हैं॥

छप्पै--दियैं अंस पर अंस पियें मद रूप रसालौ।
चलैं नैंन अरझाइ हंसगति रति पिय वालौ।
देखत लता तमाल थकित ह्वै जात रहत हैं।
उपजत रति रस चोज मौज मानौं फैंट गहत हैं॥
कुंज सखी ह्वै यों कहै हया ही करौ विहार।
छवि जुरावरी उर वसै होइ जवाहर हार।
धसे कुंज में जाइ सघन निरवारत आछैं।
मिटत अँधेरौ जाइ प्रिया मुख चंद छपाछैं॥

सखा लेत उठाइ डार दै पाछैं जवहीं ।
आगैं आवत रूप कटाछन हँसन सु सबहीं ॥
भीजि गए गोविंद यों रीझी राधा देखि ।
प्रेम प्रिया के रस भरी चितवनि वरषा लेखि ॥
दोहा—घरी सोरही जहां ग्रीषम होत विहार ।
छुटत फुहारे रंगनि जल राधाकुंड विहार ॥
एक कुंज देखी जहां अद्भुत रचना चार ।
लता तमालनि उच्च अति सोभित रुचिर उदार॥६०५

देख्यौ है एक दुवार जहां द्रुम ह्वै विच साखनिहि कौ बन्यौं है ।
कोर वरावर हैं फल पीत सु चौषठ सी पुषराज गन्यौं हैं ।
पल्लव लालनि कौ समचै मनि लाल कपाट निकौसौ गन्यौं है ।
फूल सु उज्जल हीरे खचे मानों होत जवाहर तैसैं तन्यौं है ॥
दोहा—खेलत पिय प्यारी जहां वीनत आए फूल ।
कुंज मनौं रतननि खची धसे सु सोभा भूल ।
साखा निरबारत मानौं दोऊ खुले कपाट ।
भीतर के जगमग मानौं आवत चलत सुवार ॥
अद्भुत कुंज सुवाग है अद्भुत देखन हार ।
अद्भुत वैठक रूप में रूप हू होत उतार ॥
अव याकौ वरनन सुनौ को करि सकै वखाँन ।
भई जहां की सरदा रीझ सखी सुखदान ॥६१०

आठौ दिसा भीत जाके आठ है पहल स्वछ द्रुम प्रतिद्रुम लता चढ़न सुधारी हैं,
पीत फूल मानौं पुष्पराज लालमनि फल वीच वीज पात यौं सुपन्ना सोभा भारी है ।
जगमग जगमग रूप जामें फिरत से फिरैं सखी पृथ्वी पर ऊँचैं नीचैं सारी हैं,
एक को करोरनि करोरनि को अर्वन वे हीं प्रति वृछ फूलन में वीजुरी सुखारी है ॥
वीच जाके मंडल चौकोर कोरयौ हीरौं एक कोरि चंद्रमा सौ स्वछ उज्जल प्रकास है,
ता मैं कोरी पैरी तापै कोरयौ छोटौ मंडल हू तापर सिंहासन हू कोरयौ सोभा वास है
तापर विछौंना है सुठौंना सुठिताई भरयौ सुख सरसौंना सुघराई कौ निवास है,
जामें जगि जगि उजिराई स्वछताई झरि लाइ राखी सवै छवि मानौं कुंज हास है ॥
हीरनि की रौंसैं चारौं पैठी छवि हौं सैं आवैं स्वछ अछ लछ छावैं दौरैं रूप खचे हैं,
एक एक हीरा मानों सौ सौ चंद्रवत स्वछ उजराई जासौं चांदनी सी दौरै सचे हैं ।
हँसत हँसत प्रिया पीतम जहाँ ह्वै आवैं हाँसी कौ प्रकास जाकौं कहै कौंन रचे हैं,
सुधा सौ स्रवत जात वड़ी वड़ी आँखिन सौं फूलन कपोल नथ मौती झूलैं मचे हैं ॥

पैरी न चढ़नि वासु मंडल की लगै दोऊ झाँईं ही के रूप मानौं आगैं चढ़े जात हैं,
प्रथम चढ़त पग धरत ही खरे भए प्रतिभास छए छवि चढ़ैं इतरात हैं।
दियैं गरवाँही दृष्टि सीचत सुवृष्टि कियैं चारौ और सखी सोभा सफल अलात हैं,
जब जाय ठाढे भये बीचौ बीच मंडल कै आँखिनि की पूजा सब ओर सौं समात हैं॥

दोहा—बैठे वा मंडल सु मधि ललित सिंघासन चार।
चहूँ ओर सौं ह्वै रह्यौ जल जंतर दृग हार॥

सोभा ही के घर महा सोभा जहाँ भरि रही सोभा छबि धरि कैं रसीले वलकत हैं,
दीरघ ढरारे दृग दृष्टि गरवाही किये देखत फुहारे पच रंग ललकत हैं।
मारुत सौं मंद मंद फुंही यों परस करैं झिझक उठैं हैं जा मैं रूप मलकत हैं,
झीने हैं वसन सेत तन सुख तन हेत सोहै सोभा देत जामैं अंग झलकत है॥

बैठे हैं रूप सिंहासन ऊपर दैत किये वग लौ मद ही सौं।
देखैं जितै प्रिय प्रीतम के दृग लागे चलै रचना छद ही सौं॥
औरैं सखी हैं वडी खीन के अखि दौरत सामु हैं आनंद ही सौं।
कौंध उठै वा दिसा मानौं रूप सौं प्रेम प्रमोद वढै फँद ही सौं॥

दोहा—ताजु सिंहासन गिर्द हैं सखी आठ छवि फेर।
आठ रंग दुति कमल मानौं दंपति केसर हेर॥
छूटि रहीं किरनैं सब ओर सौं रूप भरी छवि साचै ढरी हैं।
मानौं महा घन उज्जल में विजुरी रंग आठ की कौंधैं खरी हैं॥
प्रीतम प्यारी कौं देखैं खरी भरी आवैं हँसी सु आनंद भरी हैं।
यौं मुख चन्द्रनि की झलकारी उजारी जवाहर लागी झरी हैं॥

दोहा—पीछैं रौंसैं जे कही तिन कौ कहूँ सिंगार।
बीच बीच फूले कुसुम इत उत मग सुख सार॥
रौंसनि ऊपर फूले हैं फूल हजारनि रंग के कौंन कहै गौ।
रंग हजार ही भाति जरीनि के किर्न विभाकर परस लहै गौ॥
सेवा निमित्त जो आवैं सखी कोऊ होत जराव ज्यौं अंग चहै गौ।
कोर किनारे है आवैं औ जाहि रंगे मानौं चंद्रमा रूप गहै गौ॥

दोहा—क्रम सौं चारौ ओर कौ सखी करैं छवि सेब।
पाछैं पाछैं अधिक वे दिसा दिपै छवि देव॥
रौंस चौंतरे सब कहे बैठक जुगल विहार।
अब ताकी उपमा करौं सोभा दृग उरहार॥६२३

चंद्रमा की चाँदनी निकासी हीरा सार हू लै प्रभा हू मिलाइ महा कांति पुंज कियौ है
रूप की पवन लागें ऐसैं जम गयौ मानौं कोटि चंद्रमा कौ चंद्र हीरैं वपु लियौ है॥

ता कौ कियौ मंडल विराजैं तापै दंपति यौं रूप मैतैं रूप के समुद्र वढै हीयौ हैं, ज्यौं ज्यौं जा सखी की आखैं आखिन सौं लगैं जाय आखैं द्वौपगे हैं लै हसनरसपीयौहै

दोहा—अव चारौं तखतेन मैं छुटत फुहारे पूर।
मनौं अनेक सुरंग के द्रुम ही मूरति मूर॥
ऊचे अति मानौ परस पर साखा छीट मिलाहि।
छीटन मिलि मानौ एक ह्वै वे ही फूल कहाहि॥
अद्भुत कुंज सु वाग है रौस चौतरे चार।
हीरनि की कोरैं वनी झलकत होत उदार॥६२८

रौंसन ऊपर फूले हैं फूल हजारन रंग के कौंन कहै गौ।
रंग हजार ही भाति जरीन से किरन विभाकर परस लहै गौ॥
सेवा निमित्त जो आवैं सखी कोऊ होत जराउ ज्यौं अंग चहैगौ।
कोर किनारैं ह्वै आवै औ जांहि रगे मानौं चंद्रमा रूप गहै गौ॥

दोहा—क्रम सौं चारौं ओर कौं सखी करैं निज सेव।
पाछै पाछै अधिक वेदिसा दिपैं छवि भेव॥६३०
सवै और जल जंत्र वे छुटै सघन घन होइ।
ग्रीषम मैं मानौ सरद जल वरसैं कौतिक जोइ॥

छूटत फुहारे चहुँ ओर सौं हजारै वैठे रूप उजियारे वीच दंपति विलास हैं, सखी आठ रंग आठ रंग दरपन मानौं सव और खरी कायव्यूह छवि रास हैं। भीजे हैं फुहीन प्रति विंवन सौं रीझैं अंग लगे से वसन भ्रम झलकैं उजास हैं, विसमैं ह्वै जाँहि सुधि आवै छकि जाहि देखैं कौतिक सुहाहिं आवैं आननन्नि हासहैं॥

दोहा—सो चारौं तख तान में छुटत फुहारे पूर।
मनौं अनेक सुरंग के द्रुम ही मूरत मूर॥
ऊँचे अति मानौ परसपर साखा छीट मिलाहि।
छीटनि मिलि मानौं एक ह्वै तेई फूल कहाहि॥

छूटत फुहारे रंगे जलनि के न्यारे वे तौ सव ही हजारे मानौं द्रुम ही विशेखियैं, कोऊ मर्कत मनि के से रंग रंग्यौ जल कोऊ लाल रंग कोऊ हर्यौ छवि देखियैं। कोऊ पुष्पराज जैसौ कोऊ हीरे उज्जल सौ कोऊ ऊदौ कोऊ तो गुलावी जामै लेखियैं, छीटन के फेर मानौं साखानि के घेर प्रति विंवनि सौं हेर मानौं झरैं फूल पेखियैं॥

देखि देखि भरैं राधा वल्लभ अलोकि कला लोल ह्वै ह्वै हँसननि झांई छवि सही हैं, छीटन के फूलन में रूप हू के फूले छवि वाग फूल तामें पगे भौंरे दृग मई हैं। जलकन झर झर भूमि में परत मानौं वरषैं जवाहर सी भूमि सोभा कही हैं। परत न जल जहां मिलत न जरैं वहै वृंदा देवी सक्ति प्रतिविंव न्यारे लही हैं॥

दोहा—वृन्दादेवी सौं रसिक रीझ ऐसैं देखि।
आँखिनि में भरि ही रखी हँसि मुखकी छवि लेखि ॥ ६३७

दोऊ उठि ठाढ़े भये किधैं गरवाँही लियैं हाथ पर हाथ वेस नेह मतवारे हैं,
देखैं जा दिसा कौं चलैं रूप रूप मैं तैं लै लौ आकर प्रभा के ह्वै ह्वै जेसे रूप सारे हैं।
देखैं जा दिसा की सखी इतेही कौं आवत हैं वेतौ ह्वांके ह्वांही ठाढे कौतिक निहारे हैं,
सब ही कौ सुख होत सब ही निहारैं छवि ऐसी विंदा देवी जूकी कुंज स्वछ धारे हैं ॥

पुछत रसिक सौं रसीली हँसि वृछ है कि दीसत फुहारे नाना रंग के अनूप हैं।
छीटनि पै छीटैं परैं मानौ फूल ह्वै ह्वै जाहि धारनके चिलके सौ पात सेस रूप हैं।
उठत सुमूल जाकी फैलौ रहै साखा मानौ झलकैं आकास विच वेई फल रूप हैं,
सोभा मानौ रस की सी धारा आवै देखत ही जानि परी सुंदरता ही के नये भूप है॥

परैं हैं फुहारे मोही दोऊ के कपोलन पैं ढरै चिकनाई पै न रहैं भरैं देखियैं,
मानौ रूप मैं तै रूप रंगन के ह्वै ह्वै चलौं हँसन रगे हैं रंगे आंखिन कौ लेखियै।
परस समीर सीरी सीकर ह्वै आवत ही झिझकत प्यारी पिय अंक लै विसेखियैं,
होत ही गरम अंक मैं सौ ऐसैं निकसी हैं मानौ घन मै सौं स्वछ दाँमिनी परेखियैं॥

रौस रौस पर दोऊ देखत चले हैं ऐसैं देखत हैं रौसैं इन्है चलन न देत हैं,
दोऊ खरे ह्वै ह्वै रहै रोसैं सोभा लै लै कहैं कवि वे कहैंगे जे कलप जैसे हेत हैं।
हँसन विलास औ कटाछन के चास जा में भूमि क्यौं तजैंगी निजु जानैं रस खेत हैं,
तत सुख जान इन्हैं जान देत और कुंज रूप भर लेत जब चहै दिखि लेत हैं ॥

दोहा —निकस कुंज देखत चले सोभित रचना चार।
आगैं सुंदर सुघर वर राधाकुंड उदार ॥
पिय प्यारी आवत लखे पुलके अंग अंग रूप।
स्वछ सु जल की चाँदनो लहरैं लेत अनूप ॥
आवत देखे हैं दंपत यो जल पानि लै पावड़े सेज विछावै।
देखत राधा गोविंद रहे मानौं भूमि हसैं रचना सरसावै ॥
जोति वढैं नल चंद्र न की मानौ रूप घटा झरना झरलावै।
कांति अलात सु पैरी न के नग कुंड मनौं आरती सी फिरावै ॥
दोहा—दिवि मणिन में भूमि है गणिना रंग न होइ।
बृत्तानि के प्रतिविंव सौं जगमग जगमग लोइ ॥
काम कला रति चातुरी सवै रंग उनिहार।
विसकरमा की चातुरी भइ बाँझि रचि हार ॥
सब और मही पच रंग नग सही वे है ओपो दिसा जेहैं सवै देखियै जराव की,
हरी झमकनि लाल लाल चमकनि मरकत दमकनि पीत राजत सुभाव की।

पांचई फटकमनि सुभ्रसों चटक उठैं झाँई सौ झमक ह्वै अकास यों वनाव की।
क्रम सौं खची हैं मनि रंगनि अलात भाति मानौ रंगमाला राधाकुंड उर चावकी॥

दोहा—राधाकुंड चौफेर है छतरी मनि मैं जान।
इन्द्रनील मणि लालमनि फटक पीत हरियान॥

छतरी चौफेर राधाकुंड छवि हेर पच रंग जग पग पर करमासी देत हैं,
रवि की किरन परसे तैं सब मणिन में लागत आकास यो जराऊ सोभा सेत हैं।
रजनी भये तैं ससि किरनि औ नछत्रनि सौ दिन ह्वै रहत रंग में चो के से खेत हैं,
जाही और आवैं राधा गोविंद जितै कौं तित मनि देखि रहैं चिलकें वे दृग हेत हैं॥

मटिक मनि पैरी कांतिवंति है अलाति स्वछ अछ सब ओर मानौं चातुरी प्रकास की,
बीचौ बीच जल चंद्राकार सुधा सार भरयौ ओप ओप उठै उजराई चंद्रवास की।
किरनैं लहर चादनी के फैल कहै कौंन मानौं चाक चक्क ह्वै सु मुद्रा मृदु हास की,
करत सनान उतरन राधा गोविन्द की रूप उतरे हैं सब ओर छवि रास की॥

दोहा—उज्जल जल पैरी सबै वढ़त हैं उज्जल होइ।
प्रेम वढै कुरखेत ज्यौं रूप उजारो होइ॥
जल पैरी द्रुम लता मिल फुल फल निरन धर्न।
रूप सघन में जगमगै ज्यौंव मेघ रस भर्न॥

स्वर्न की किरनि लालमनि की किरन नील मनि की किरन से सुलसत तमाल हैं,
रवि की किरन ससि किरननि से फूल फल झूलत समीर सौं जराऊ सोभा जाल हैं।
जल लौं परस झुकि साखा प्रति साखा स्वछ पात पात कृत पानी चढ़त उछाल हैं,
पानिप ह्वै रहे जड जंगम जहां के सब राधाकुंड ह्वै कि राधा रूप छवि ख्याल हैं॥

दोहा--खग रंग नाना भाँति के वैठन वोल अनूप।
देखत पिय प्यारी जिनहिं गढ़े दृगनि के रूप॥
जल में पैरीवो लागै ऊपर लौं झलकाहि।
ऊपर को जल माहि यौं पानिप मुक्ता आहि॥

पचरंगन के खग वृछन में रंग संगत सौं वैठ वोलत हैं।
रच संगत संग चैतन्य जराव चलैं हू फिरैं रंग झोलत हैं।
खचे लाल हरे सुक स्वर्ननिसे उडते वे मिलौं छवि डोलात हैं।
हँसि राधा गोविंद वडे वडे नैननि देखे हैं रूप कलोलात हैं॥

दोहा--ज्यों छवि राधाकुंड की कृष्ण कुंड छवि देखि।
संगम कौतुग रूप के दुहु दिसि होत विसेखि॥

झलकैं चाँदनी से सुवे जला हैं लियैं राधागोविंद के रूप की झाँई।
पैरीनि ह्वै प्रतिविंव चढैं लहरौं के मनौं छवि सामुहैं आँई।

भीजे वे जात हैं सुंदरता जड जंतु जहाँ के सुप्रेम सुहाई।
दोऊ ही कुंड कै बीच मनौं निति दंपति खेल्यौ करैं सुखसाई ॥

दोहा--राधा कुंड कै आठ दिस आठै कुंड प्रमान।
अष्ट सखिन के नाम सौं आठौं रूप सु आन ॥

मनि मर्कत से हैं तमाल वे स्याम आसोक वे स्वर्न मही झमकै।
ललकै झलकै छवि दर्पन ह्वै ललिता कुंड रूप मनौं रमकै।
मोर पिछन सी छवि वृछन की ह्वै ह्वै जात गोरोच मिलैं दमकै।
जल राधागोविंद सरूप सौं ओप्यौ सु खेलत छीटैं फुही चमकै ॥

उज्जल सुजल पच रंग हैं विमल कंज फूल रहे मंजु रंगा मे जी कुंड कियौ है, आए है निकट राधा गोविंद विहार हित ललित सखी जू हँसि हाथ गहि लियौ है। उतर प्रवेस कियौ जल पिचकीन मार छीटन विहार सुधि भूली गुथ्यौ हियो है, कमल समूह प्यारी छीटन निकस छिपी रूपन छिपाइ पिय पाइ हँसि दियौ है ॥

दोहा--तपत स्वर्न उपमा लहैं सौ विजुरी लौं कांति।
सघन द्रुमनि वरषा मनौ उज्जल खगनि आलाँति ॥

दिव्य छवि सौनैं कौ विसाखा कुंड जान लौहु सौ सौ विजुरी से झमकनि सब ओर हैं सघन द्रुमनि प्रतिविंव फूल फलन के जगमग जलरंग मिलन हिलोर हैं। ह्वै रह्यौ विहार राधा गोविंद निहार देखौ फूले हैं कमलन की मार द्रग जोर हैं, वीच श्री विसाखा रस कौतिग वढ़ावत छुटावत न छुटैं हँस छीटौं के झकोर हैं ॥

दोहा--चंपकलता सु कुंड है चंपक वरन प्रमान।
चंपक द्रुम फूले रहैं झाई झलमल जान ॥१६४

स्वर्न स्वछ भूमि फूले चंपक सुवृछ झाँई ह्वै रही झमक चंपा रूप भूमि छाई है। विच विच हरे पात पल्लव भवर भ्रमैं आवत सुगंध ह्वै गुलाव सौं सवाई है। जल हू सुगंध पैरी ऊपर लौं भरयौ मानौं उतरे न दंपति ह्वै भ्रम हँसी आई है, उज्वल ह्वै आयौ तासौं चंपकलतासौ कुंड छीटैं उछलैं है लौ लौ रूप उजिराई है ॥

दोहा—चित्रा कुंड सुजान लौ स्वर्न ललाई पाइ।
पीत मनिन में लालमनि कोरन झाइ पाइ ॥

पानिय सुजल मानौं पानिप भरयौ है कुंड द्रुम फल फूलनि में पानिप के सोरा हैं, फूले हैं कमल किधौं पानिप के गुछा सेत जल सौं निकसि मकरंद के से वोरा हैं। राधिका गोविंद जल छीटैं हँसि हँसि खेलैं छीटैं रंगी जात वे हँसन ओप जोरा हैं, आनन परस जल जल मैं परत मानौं उज्जलता नीचै धसी रूप के झकोरा हैं ॥

दोहा--तुंग विद्या रस कुंड की को कवि उपमा देइ।
जगमग होत हैं रूप जहाँ राग प्रकृति देह लेइ ॥

हीरनि खचत स्वर्न झाँई ह्वै मचत कुंड उदै तुंगविद्या रूप उठत निकाइ है,
उज्जल द्रुमनि पीत फूलनि फलति पोरे मधुप धुनित राग चातुरी दिखाइ है।
जल स्वछताई फले कमल निकाई मति दंपति लुभाई रुचि खेलन सिखाई है,
हँसत हँसत उतरत हँसी आगैं आगैं पैरीन तैं उतरे न झमके सुहाई है॥

दोहा—इंदुसु लेखा कुंड है पीत मनिन कौ जान।
लालमनिनु रंग बृच्छ हैं जल उज्जल अतिमान॥६७०

स्वर्ण तै सहस्त्र गुनौं पीत सुमनिन कुंड लाल हैं मनिन वै सुद्रुम सौभा देत हैं,
मोतिन सहस्त्र गुनौ पानिप सुजल भरयौ वीच में अरुन कंज फूले मंजु हेत हैं।
उतरत आइ राधा गोविंद निकाई रूप नीलक गुराई खेलैं लहरैं समेत हैं,
रंगे हैं मृणाल दल कर्निका सरोजन के छीटन कौ घेरौ हँसी भेद किये सेत है॥

दोहा—रंग देवी रस कुंड है रंगनि की जहाँ रास।
दर्पन रंगन झल मलै देखत होत प्रकास॥

स्वर्ण ही की भूमि स्वर्न पैरी जल चाँदिनी सौ जल मिलि झाँई सौं आकस झलमल्यौहै
जपा ही पुहप के से रंग के हैं द्रुम सब ऊदी लालमनि सनि रंग स्वछ रल्यौ है।
रंग देवी कुंड रंग लहरैं उठत जामैं राधिका गोविंद रूप मंजन सौं पल्यौ है,
हँसन फुहीन चुनरी में पीताम्बर की जल मैं झलक देखि प्रेम काम छल्यौ है॥

दोहा—वहै सुदेवी कुंड है सौंनैं ज्यौं झलकाइ।
विच में चन्द्र सुहार ज्यौं जल की पानिप पाइ॥

श्री सुदेवी कुंड सौंनैं ही को द्रुम लाल सब फूल फल तेई जाके गहनें लगत हैं,
वीचौ वीच जल लहरै लै होरा मंडल ज्यौ नीलौ है पै ऊचौ होत स्वेतता जगत हैं।
जा में राधा गोविंद निहार हँसि खेलत ही उठत है छीटैं रस कौतिक रंगत हैं,
मानौं रास मंडल उदार चारु छविनु कौ रूप घन दाम फुहीं वरषैं लगत हैं॥

दोहा—राधा कुंड कै आठ दिस आठै कुंड प्रमान।
मध्य सु चंद विराज ही तारा मंडल मान॥

मानौं आठ दल राधा कुंड कुंड आस पास मधि राधा कुंड है सुकरनिका लगतिहै,,
सुंदरता सर ही मैं फूल्यौ जोतिवंत स्वछ अद्भुत प्रभा कौ रग्यौ रंग लै जगति है।
सीतल सुगंधित सुजल ही थगति है आनंद देखै मधुप गोविंद मडरायौ है,
भयौ है प्रमत्त आठौ दलनि कौ तत्व पाय राधा अनुराग नेह मंजन रंगति है॥

दोहा—सो छवि राधा कुंड की गिरदि कुंड कहि दीन।
बैठक छतरी चौंतरे राधा कुंड लौं कीन॥६७८
अब छवि राधाकुंड की छतरिनु छतरिनु देखि।
फिरत जु देखत लाडिले राधा गोविंद लेखि॥

हरित वसन मनि लाल छतरी में सोहैं उतरी हैं सोभा राधाकुंड में लगति हैं,
कियैं गरवाही ललितादि ढिगि लियै पियै रूप चित दियैं झाँई जल मैं जगति हैं।
हसैं हँसि उठैं प्रतिविंब उन रसन में मत्त ह्वै ह्वै जाहि राधा गोविंद रंगति हैं,
सखी सब छकी इति उत रूप खैंचा खैंची धरैं है हदैं हू भरैं छबि में पगति हैं॥

हरी मनि छतरी में लाल ही बसनि वनि आवनि गोविन्द राधा छवि सो विसेखियै,
फैलत ललाई प्रभा नीलक सुवर्न वर्न हरीये सीसी मैं ज्यो त्रिवेनी रंग लेखियै।
उतरि परी है छवि पैरीन ह्वै जल ही मैं रूप उतरैं है मानौं हँसत असेखियै,
नथ मुकतन की हलन वर मोती हू की स्वछता तरंगन मैं हलैं चलै देखियैं॥
पीत मनि छतरी में नीलांवर ओढ़ि प्यारी पीतांवर पिय ओढि आवनि प्रकाश है,
मानौं रवि प्रभा के सुमंडल में देखियत घन बिजुरी रहसि वरषा सुहास है।
झमक झमक राधा कुंड जल सीमा लै लै मुख झलमलै जहाँ भरयौ रूप रास है,
बड़ी बड़ी आँखैं सब ओर सखी लाखैं आँखैं सोत बँधि रहे सुख वस्यो करि वास है॥

मर्कत मनि छतरी में पीत पट ओढ़ पिय स्वर्न से वसन प्रिया अंग जगमगी है,
मानौ स्वछि घन में प्रवीन घन वीजूरी कौ रूप वरसे है वरसन छवि जगी है।
ह्वै रह्यौ प्रकास हँसि हँसि जल देखत ही जल हँसि उठैं चिलकेसौं जोति लगी है,
मीन उछलन लगे संग चिलके के देखें नथवर मोती चून भ्रम सोभा रँगी है॥

छतरी है फटिकमनि उज्जल वसन धरि भूषन जलज गौर स्याम जग मगे हैं,
मानौ चंद मंडल सजल घन वीजुरी लै प्रथी उत्तरयौ है रूप वरषन लगे हैं।
भीजि गयौ कुंड हँसि हँसि दोऊ देखत हैं रीझ जल जंतु रंग हाँसी ही कै रंगे हैं,
उज्जल ह्वै गयौ मानौं स्वच्छ जल मन्दिर में चले चले फिरैं स्याम स्वेत दीप जगे हैं॥

झमकी है छतरी वे सूरजमनिनि रंग राधिका गोविंद रूप रंगा में जी किये हैं,
एक एक मनि नाना रंगन के सोत श्रवैं द्रवत हैं सोभा प्रतिविंब छवि लियै हैं।
देखैं हैं हँसै हैं बड़ी आँखिन के पानिप सौं खंभ झलकै हैं भरयौ कुंड पगे हिये हैं,
लहरैं रंगी है रंगी पैरी जल जंतु सब सारदा रंगी है किधौं प्रेम द्रग दिये हैं॥
ऊची छतरी हैं मनि राधिका गोविंद वस ह्वै रहे खरे हैं देखैं राधाकुंड सोभा है,
कियै गरवाही बड़ी आँखिनि चितौंनन की हँसी ह्वै ह्वै आवै दोऊ दिसन की ओभा हैं
किलकि किलकि उठैं रमकि रमकि अंग झमकै हैं भूषन सखिन द्रग लोभा हैं,
वड़े हैं विलास रूप चढ़े हैं द्रगन पर दर्पन में जानी परैं जैसैं प्रेम गोभा है॥

दोहा—विच विच छतरी औ रहैं संध्यारंग मनि जान।
पदम मनादिक नील मनि स्वर्न मनादिक मान॥
ह्वै ह्वै वर ए आव ही एतौ कुंड प्रमान।
राधा गोविंद फिरत हैं सोभा देखत जान॥

जिन जिन छतरनि राधिका गोविंद आए जिन छतरिन सखी सोत वधि आये हैं,
राधाकुंड गिरदि हैं अलात रूप मालावलि दंपति सुमेर द्रग सब के लुभाये हैं।
नाना रंग मानि मुख चंद्र हैं हँसौ हे सौहैं रंगति करैं हैं किधौं जल छवि छाये है,
भयौ है सुफल प्रतिविंव झलमल रहे ह्वै रहे विनोद कृपा दृग झर लाये है॥

दोहा—उत्तरत पैरी कुंड की राधा गोविंद लाल।
रूप उत्तर पै हलै मिल्यौ जल सौ झलक रसाल॥

पैरी हैं फटिक मनि अटकन रूप वारी उतरत हैं री राधा गोविंद रमकते,
प्रतिविंब होत गौर स्याम मुसिक्यान भरे खरे ह्वै ह्वै भरे जाहि छवि सौ खमकते।
उतर उतर ज्यौं लौ जल सौं परस झाइ परसत दीखै खेलैं दंपति दमकते,
भूलीं सब दासी झूली रस के विलास पाइ झाँई हू के रूप येक कटाछनि झमकते॥

जाही पैरी धरैं पग जोही पैरी भरै रंग आँगुरी नखन विछुवनि अनवट के,
छवि सौं चलत पग तली ज्यौ जराव झाँइ ह्वै ह्वै पावड़े करत मानौ हेत पट के।
कियौं स्वछिताई आगैं आगैं लियैं चलै रंग होत जात चिन्ह प्रतिविंव प्रेम षटके,
उतरन न्यारी न्यारी होत सोभा संपदा की जल लौं आवन सो दृगनि रूप गटके॥

देखि कुंड सोभा गौर स्याम छवि सोभा लै कै भीतर धरते हैं रस चातुरी के रस हैं,
जल भयौ उज्जल फटिकमनि मैलो जासौं चंद चाँदनीन है हँसन रूप कस हैं।
धसो मानौं उज्जलता दौरी है पाताल जाय परस फनिद्र मणि उठैं जोति जस हैं,
राधिका गोविंद राधा कुंड धसे खेलन कौ खेलैं उजराइ मुख दोऊ प्रेम वस हैं॥

खेलैं हैं विनोद रंग राधा हरि सखी संग पानिप कौ पान. पानी कटि पर आयौ है,
फूले हैं कमल मुख मानौं झल मलैं स्वछ दृग है मधुप मकरंद हास छायौ है।
तिरछी कटाछै प्रेम पौन परसैं हैं जैसैं छीटैं उछलै हैं रस झरी मेघ लायौ है,
ढरि ढ़रि परै हैं कपोलन सौं जलकनि मेरै जानि कामरति रूप वरसायौ हैं॥

छीटन कौ खेल मानौं जल धर ही में मेल घूमि कर दइ सब सखिन विलास की,
आइ गई प्रिया अंक मानौं घन वीजुरी कौं अंक लै दिखावै वरसन रस रास की।
चपला सुभाव कौंध्यौ चाहै छुटि अंक मै तै छुटो न रही है कौंध छावै मृदु हास की,
जल भयौ उज्जल मही ज्यों झमकनि उठि चक चौंधी भई रूप माधुरी उजास की॥

खेलैं चौप भरै छीटैं जल पिचकनि लरैं वडी वडी आखैं अरैं दिष्ट के झकोर हैं,
हँसि हँसि श्रम हरैं करैं लै कटाछै मार परस सरस सिंधु आनँद के वोर हैं।
सखि नु विचार कै श्रमित न्यारे किये जौलों हिये हिले मिले जाहि रूप ही के ओरहैं,
ललिता लड़ैती कौ निकास ल्याइ इति उत लाल कौ विसाखा न छुटीवे द्रग कोर हैं॥

दोहा—प्रिया सिंगारी प्रेम सौं ललिता सखी सु जान।
रसिक विशाखा प्रिया कौ प्रियै की रुचि के मान॥

निकसे सलिल तैं ललित तीर ठाढे भए झरत हैं नीर चीर उपमा समेटी हैं,
छीटैं हँसि हँसि चितै लीनी हैं परस पर अंगन नै न्यारी न ही कीनी छवि भेटी है।
लपटी इहाँ लौं आइ लावन्यता छोड़ी नाहि जानें सुकुवार चलीं सोभासौं लपेटी हैं,
अंग न वसन लगे फसन लगी हैं आखैं रूप के समुद्र चहले में परी लेटी है॥

वसन उतारे भीजे अंगन अगोछे कीजै लावन्यता के सिंगार कहे कैसैं जात हैं,
रूप चक चौंधी आँखैं सखिन की सेवा लै लै भीतर धसी हैं प्रेम चातुरी की वात हैं।
सारी लहगा हूँ गीतांवर औ सिगारे प्यारे नथ वर मोती हू हँसन कौंधैं गात हैं,
प्रीतम विलोकत प्रिया की ओर जव जब रस वढ जात प्यारी छवि सौ छजात हैं॥

छप्पै—राधाकुंड सिद्धान्त सकल तीरथ फल सव ही।
आगै लै लै धरैं न चाहैं सेवक कव ही।
जल ही दरसै रूप राधिका गोविंद जब ही।
जात सिंगारी आँखि छविनि तरु वरिषा जव ही।
ब्रह्मलोक वैकुंठ की वैभव चाहत नाहि।
राधा कृष्ण विलास की रस ह्वै नदी समाहि॥६९९

दोहा—धरी सत्र ही में दोऊ भोजन कुंज में जाय।
लता द्रुमनि सोभा विविधि दंपति देखि लुभाय॥

आवत देखे हैं राधा गोविंद सवै द्रुम फूलनि सोभा दिखावै।
मानौं हरे लाल उज्जल पीत रु मनिन्द्रन फूलन से झर लावै।
देखैं है दंपति सुंदरता वन नैंन भरे मुसिक्यान रचावैं।
जोति जगी सी सुधा वरषी सी कटीली कटाछै लगी लगी आवैं॥६०१

दोहा—वैठैं हैं भोजन करन कौं रतन पीठ दोऊ मीत।
स्वाद परस पर होत हैं जा मैं पूरन प्रीत॥७०२

वैठे हैं रतन चौकी भोजन कौं सन मुख रूप ही के भोजन प्रथम दृग होत हैं,
स्वर्न थार मानौ मुख नैंन है कपोल कान रतन कटोरा एई नासा रस सोत है।
षट रस विंजन मिलन द्रिष्ट लाज नेह स्वाद दरसैं कटाछै मिलनि उदोत हैं,
अधर खुलै खुलन दसननि चौका चारु कोरे लैं परस पर हसननि जोत हैं॥

रूप जैसौ स्वाद भात दारि जैसी प्रीति जात प्रेम जैसौ घृत भौहैं पात तरकारी है,
अनख मुरवे मैं षटाई हू मिठाई भरी कौर देत रस रस भाव वृद्धि भारी है।
दृष्टि की मिलनि मिष्टि उज्जल मोहन भोग जोग हैं कटाछनि कढी दुधा सुधारी है,
फुल के झलक छवि थार परि ह्वै ह्वै जात हसन सुखीर दुहू और कौं उजारी है॥

दोहा—दै अचवनि वीरी दई किये मगन अनुसारु।
निंद्रति नैंननि देखि कै पौढावनि सुखचारु॥

दोहा—घरी अठारह दिन वढे सैंन कुंज सुख दैन ।
जहां पधारैं लाडले वारे कोटिक मैंन ॥

मोरे जहाँ अव औ कदंव चंपे केवरे हू केतकी सुगंधनि विलास वरसत हैं, राय वेलि मल्ली हू चंवेली सखी वपु धरैं सोवत हू सेवा नासारंध्र दरसत हैं । ह्वै ह्वै जात त्रिविध समीर दीपे वंत जहां न्यारे न्यारे परस सिंगार सरसत हैं, खगन कुलाहल वजन षट राग मानौं वीना सी लै गावै रूप धरैं परसत हैं ॥

दोहा—सोवत रूप सुस्वाद लै राधा गोविंद लाल ।
निद्रा हू रीझी जहाँ देखि प्रेम रस ख्याल ॥

सोहत हैं जागे दोऊ पागे है सुनैंननि में पलकैं न परैं जो परैं तो रसमसे हैं, दिपि रहे मुख ह्वै परसपर आरसी से सोइ हाँसी हसैं निजु रूप प्रेम फसे हैं । रसही के अंग उठे रसिक जगावत हैं पद परसे तैं रस गाढे करि कसे हैं, रोम रोम अंगनि पै वरसे अनंग रंग जागन कौ करैं जागे हैं न रंग वसे हैं ॥

दोहा—सोवैं पट ओढैं दोऊ जागैं रूप रसाल ।
आखैं रस में होत हैं देखैं करैं निहाल ॥

कुसुम सुसेज पिय प्यारी औढे जगे रूर जूर रहो कुंज गौर स्याम जगमगे हैं, साखा रंध्रन ह्वै निकसि आवैं सुंदरता दौरी जहां जाहि छवि करैं जोति जगे हैं । ढिंग सखी वीजन करत छवि मिलि रही न्यारी न कहावै दृग कौतिक में रँगे हैं, पौंन परसे तैं ज्यौं कपोलनि पैं नथ मोती हलैं चलैं पानिपु हँसन मानौं लगे हैं ॥

दोहा—सोवत रूप सुस्वाद लैं राधागोविंद लाल ।
निद्रा हू रीझी जहाँ देखि प्रेम रस ख्याल ॥७१२

सोवत हैं जागे दोऊ पागे हैं सुनैंननि में पलकैं न परैं जो परैं तौ रसमसे हैं, दीपि रहे मुख ह्वै परसपर आरसी से सोइ हाँसी हसैं निजु रूप प्रेम फसे हैं । रस ही के अँग उठि रसिक जगावत है पद परसेतैं रस गाढे करि कसे हैं, रोम रोम अंगनि पै वरसें अनंग रंग जागन कौं करैं जागे है न मन वसे हैं ॥

दोहा—उठि वैठे दोऊ रसिक उठ्यौ रूप इम भाय ।
फैल रह्यौ सव कुंज में आखैं पगि पगि जाय ॥
घरी चारी सोए सुखद रूप रूप में भोइ ।
घरी वाइस करि उठे छवि रँग रेनी होइ ॥

किसलय तलप तैं उतर दोऊ ठाढे भये गये नैंन जुरि अंग राइकै मरोर सौं, कंज वत मीन से ह्वै खंजन से दौरि दौरि नेह सौं ढरावे भारे फैलैं रूप जोरे सौं । तापैं लड़कावैं अरुझावैं भुजमंत ह्वै ह्वै हंस गति रति में कटाछनि झकोरे सौं, ललितादि वारि वारि पिवैं जल वार वार रिझवार दंपति रिझावैं हसि वोरे सौं ॥

छप्पै--कहाँ लसत है कुंज जहां दिवि आसन चौकी।
तापै मुख पर छाल कछू भोजन विधि जौं की।
स्याम सु निजु कर कौर प्रिये मुख देत अधरवरि।
कवै लेत मुसिक्याइ कवै अनखाइ चहत हरि।
पिय की प्रियता जानि प्रिय नैननि में सनमान।
रोम रोम प्रति रूप कौ रुख सुख विंजन जान॥
घरी जु है तेइसई चौपर कुंज विलास।
होत हासि रस परसपर हारि जीति सुख रास॥

दर्पन सी कुंज फूल फल द्रुम दर्पन से नग पचरंगन जराऊ ही अवनि है,
मधि इंद्र नील मणि मंडल झलक जामैं चौपर ललक लाल कौतिक कवनि है।
हँसि हँसि खेलै राधा गोविंद झमेलैं छवि लौ लौ सार पासे रौटा रौटी कौ भवनि है,
वढ़े हैं विलास रूप रास प्रतिविंवन में जितै दृष्टि जाहि उनि रूपनि छवनि है॥

खेलत हैं चौपर विलास हासि जोभरसु हार हार वाजी धरि पासे हाथ किये हैं,
लेत देत डारत उचारत हैं रस वस सार न चलावै चाव दाव रूप पिये हैं।
भुजन चलन पीन उर की उचन होत नैननि नचन पी विलोके हँसि दिये हैं,
वृंदावन चंद श्री गोविंद कहै जीतें हम प्यारी एके भृकुटी मरोर जीति लिये हैं॥

नीलक ललक लाल पीत की झलक ख्याल हरी सार है वे सोभा चौपरज रावकी,
हीरन के पासे राधा सुकर सुढर ढर लाली लाल भर छुटै उज्वलाता चाव की।
छाए षट दस आये सोल हौ सिंगार प्रीति न रद चलायै मुख झाँई चलौ भाव की,
प्यारी खेलौ चौपर यौं खेलौ चौंप रूप जामें पिय दोऊ खेलौ विधि प्रेम के वनाव की॥

दर्पन के मन्दिर में खेलौ सार पासे हरि राधा दुहू दिस प्रतिविंवत उदोत हैं,
प्यारी जू के प्रतिविंव ही सौं प्रतिविंव पिय प्रति अंग रंग मिलि वढि रहो जोति हैं।
देखि रही स्यामा जकि थकि रही वामा यह औरसौं मिलात हम सौं न प्रीति होति है,
सुख लियौ फेरि वाकी भौंहैं दृग हेर उठी चंद्रमा कौं चाँदनी ज्यौं दियैं जात गोत हैं

दोहा--घरी जु है चौबीसई मान कुंज में जाय।
वैठी राधा मान करि तऊ कुंज झमकाय॥

प्यारी तजिगई कुंज सुखद दुखद भई रह्यौ नही जात है न चल्यौ जात भूमि तैं,
जब सुधि आवै हँसि हँसि रसवातन की वात है न वात वारी भ्रमै देहि घूमि तैं।
कवहूँ तौ परै जाय सुखद समुद्र जहाँ रूप कौ महल रस विष्ट दिष्ट झूमितैं,
ताहू में अगिन नीर तातै जल मीन जैसें एसै पिय प्यारो विनु प्रेम व्यूह धूम तैं॥

प्यारी की देखि दसा जु सखीन हू भूलि गई सुधि हू न जगी हैं।
हेत जगैंगी मिलावन कै जिन के अनुराग कै रंग रंगी हैं।

सोचत कैसै मनाइयैंगी अतुराई अतै चतुराई पगी हैं।
योंही गई रहि ऐसै विचारत पूतरी सी अवनी सौं लगी हैं॥

कैसी वह कुंज जहाँ बैठी सुख पुंज ह्वै है दिपे ह्वै है द्रुम ज्यौं दर्पन खानि चंद्र है,
किधौं ह्वा के वृछ सुर सभा प्रभा ओपे ह्वै हैं बैठी ह्वै हैं राधा औ मनिंद्र मंद इंद्र है।
सघन सुभेद वन रूप ह्वाँ खरौई ह्वै है रूप उपमान महा रूप कौ पितंद्र है,
गौन करि मौंन की सुठौनता कहौगी देखें सीखैं यौं न रोका समाधि कौ जोगिंद्र है॥
प्रीतम सौं कह्यौ तुम आस लिये बैठे रहौ दखौ मेरी वुधि के चरित्र सिद्धि होत हैं,
जाउँगी मनाऊँगी वनाऊँगी कलप बातैं कोप जो करैगी वात ल्याऊँ रस सोत हैं।
घटती में रावरी कहौंगी वामें मिलि उनि औगुनन ही सौं वाकै करौ ह्वदै जोत हैं,
रिस ही के भीतर भरौंगी रुचि रूप तेरौ विच वे कटाछैं हँसि देखन उदोत हैं॥

दोहा--प्रीतम दोउ कर जोरि कै कही एक हँसि बात।
बात तिहारी प्रान है और न कछु सुहात॥
प्रीतम कौ मन राखि कै लाखन बुधि विलास।
गई सखी जहाँ लाडिली ह्वै रही कुंज उजास॥

देखी सखी कुंज जग मगी सब कुंजन में दौरे आवै सब ओर रूप के प्रकास हैं,
बैठी राधा मान करि जानि कै न देखै कोऊ छवि दौरि कहैं आखैं लागी आवै रास हैं।
छाये रंगामे जी के दर्पन से सघन द्रुम अनगने रंग मुख उपजै विलास हैं,
रूस करि आइ है कि रस करि आइ है कि सोभा झरलाई है कि मान मनिहास हैं॥

फूल रहे द्रुम भूल रहे हैं भवर माते बोलि रहे कोकिल मकरधुज मित्र हैं,
सुक सारौ जुग जुग लता औ तमालन सौं त्रिविध समीर नीर झरत पवित्र हैं।
दर्पन सी स्वछ कुंज अछि लखि रूप भोग पिय सुमिरन होत सुख न अनित्र है,
इतनैं ही माँझ जानी सखी हरि भेजी आइ आये सुधि दोस फिरि बैठी सोभा चित्रहै॥

सेत ही वसन घट भूषन कढत रूप मानौं माँजी आरसी सुदेह झमकत है,
स्वर्ण की सी झलकनि कैसें अंग अंग में तैं फैल रही जहाँ तहाँ कुंज चमकत हैं।
ठोडी दै हथेली भू लिखत छवि कहा कहौं सौनें के आसन नख चंद्र दमकत हैं,
दोय जकी राति सब जाग फल पावत है दिये दग पूरनमा पूजा रमकत है॥

नीची दृष्टि बैठी करि मुख की उजारी वह पैठी जात प्रीथी यौं दर्पन खानि कीनी है,
वामैं प्रतिविंव जानि मानौ कोऊ सखी यह आई है मनैवे न मनौंगी मति लीनी है।
बैठी फिरि उतै मानौं उतही कौं वाहि मान अनखान रोमरोम अति हठि भीनी है,
दूरि ही सौं देखि सखी कैसैं लै मनाऊ याहि निज प्रतिविंव में खिजान भरि दीनी है॥

सोरठा--ढिग बैठी सखी आय पट सौं लौ प्रतिविंव ढकि।
खिजत कौन कौं आय तो विनु दग जी नाहि प्रिये॥

तेरौ सौं रूप न चौदहूँ लोक में तेरे ही रूपसौं रूप भये हैं।
तेरी कटाछन के सब में लहैं पावैं कहा अंग छैल छये हैं।
तेरी सी चालन जोवन जोर मरोरति प्रीतम मोल लये हैं।
तेरी सी हाँसी कहौ कित है वडी आखैं विलास प्रकास छये हैं॥
तेरौई रूप अनूप सरूप है मान कियैं सनमान करै है।
मौंन किये तैं मनौं हँसि वोलति आनन चंद्रमा ज्योन्ह झरे है।
जो मुरि वैठति हौ अनखाइ उमाह लौ नासिका वेह भरै है।
रूसो रहौ छवि रावरी देखिकै देख्यौ करौ उर स्याम अरै हैं॥
मान करै कोऊ दै धन आन पनौतौ तौ लियौ है पिया को सवौरी।
खेचि लियौ जाल मीन को ज्यौं गति सिंधु भयौ सौल ग्रीषमहैरी।
रावरे रूप की पानिप में निति क्रीडा करैं दृग प्रेम भरैरी।
नौकु कृपा करि देखौ इतौ सोत चलौ श्रुति के वो अवौरी॥

ऐसौ रूप रावरौ दिखायौ पै विचारयौ नांहि देखि न छुटेगौ वडी आखिनु कौ पन है,
ठाका हौ रखौ हौं मुरि मुरि फिर वैठति हौ ऐठौ हौ अमैठौ ऐठ्यौ जाय पिय मन हैं।
ठोडी आँगुरी दै चितये है मुसिक्याइ जव गूठन नवाय कटि लचि काय तन है,
वेसर कौ मोती अधरन पै डुलाइ वाहि लियौ हौ लगाय अब मिलै क्यौं न चल है॥

घूँघट उघारतू निहार हे लडेती चलि जा कैं तेरे रूप कौ अनूप हार छयौ है,
प्रीतम की श्रुति डोर मणि तेरे अंग जीर कियौ है विधाता कोर कोर विधि नयो है।
नैंननि में राखै कवै वैननि में भाखै कवै हिये भरि चाखै कंठ कंठ लाकै लयौ है,
जाके मुख चंद की चकोरी वे करोरैं भईं सोई तेरे मुख चंद कौ चकोर भयौ है॥

चिलकि चिलकि फुहीं परत कपोलन तैं किलकि किलकि लटैं धुरवा उमडि कैं,
चमकि चमकि रवि मान तैं मरीचै बूँद रमकि रमकि कोप पौंन तैं रमडि कैं।
दमकि दमकि अनखत विजुरी ज्यौं घोर जोरि जोरि भौंहैं मोरि बादर घुमडि कै,
लहरि लहरि तेरौं रूप वरसै है आली वनमाली भाजै चलि भेवे क्यौं न मडि कैं॥

नीचे ह्वै चलत नैंन प्यादे सादे गतागति चंचलता खुरी तेज वाज सा जगाजी है,
कीलरी विरस सोचि इतै वीतै क्यौं डुलावै अधिक सुहावै भूपता मरजाद साजी है।
चितरी उ जीर कहै अर्जी तिछनि तजि सजै जिन मान प्रान मेरी मति राजी है,
तू तौ री निहार निजु मुख दरपन लैकै प्रीतम सौं खैलैं छवि सत रंज वाजी है॥

दोहा—सुनैं सखी के वचन यौं प्यारी अति अनखाय।
वासों कपटी कान्ह की ल्याई वात वनाय॥७४२

कान्ह की वात चलाइ कहा जहाँ नारि अनेकन की समुचै है।
नैंननि मैं कोउ वैंननि में कोऊ सैंननि कोऊ रोमनि में है॥

भौंहनि में अलि सोंहनि में को जोहनि में महा रूप रचे हैं।
जौन पत्यात हिये धरि हाथ इतै न उतै न कितै विमलै है॥
रावरे रूप कौ चित्र कियौ जिन ता कहू दोस कहौ कित दीजौ।
स्वाति की बूंद यौ सीप मैं मोती ह्वै मूरति वाधीन और पतीजौ।
तो छवि प्रेम सौं दर्पन होत हैं मूरति तो प्रतिबिंबित कीजौ।
भोरी है तू जवतैं इत बैठी हैं राधा ही राधा रटै रट लीजौ॥

दोहा—अति हठ देख्यौ मान में जव सव कियौ विचार।
स्याम दामउ भेद मैं निपुन सु परम उदार॥

साम उपाय—

आपकौं जो चाहै ताहि चाहियै प्रभू ज्यौं रीति प्रीतम जो चाहै तौ तौ सवै भांति चाहियै आदर वचन सौं प्रसंसत मधुरता सौं चाहियै चहाइयै हू द्रगनि उमाहियै। चंद की ज्यौं चाँदनी वढ़ैगी मुख चांदनी ज्यौं सुधा अहलाद दृष्टि रूप अव गाहियै, चितै चितै हँसन कटाछन सौं सीचियै सींवन वे मोती ह्वै ह्वै माला उर स्वछिमाहियैं॥

दाम उपाय—

पायौ स्याम सुंदर सुप्रीतम यौं छवि वाकी प्रभा ज्यों सुधा ज्यौं पान नैंन भरिलीजियै, वड़े वड़े दृग वडी भुजा उर उच्च स्वच्छ उरसौं मिलत सो मिलन सुख पीजियै। मिल तै सुदृष्टि विष्टि दृष्टि वे कटाछन की झरी लगि रहै भीजि प्रेम सौं पतीजियै, हँसन प्रवीसी दुहूँ ओर पर सीसी गौर स्यामता मिलीसी रंगी आवै मन दीजियै॥

दंड उपाय—

जव लौ मिलौगो दौरि दौरि मूर्छा ह्वै जैहै जगैगी जगाये हू न स्वासनि मिलावौगी, ह्वै है न प्रतीति कहैं सुनैं सव वीत जैहै आइ हू न आइ मनि लैहै स्वाद पावौगी। प्रीतम न चेत हैं सु ह्वै ही अचेत जैहौ वहै खेत लुनि हौ जो वोये वीज गावौगी, कोऊ जतननि करि जागि हौ समाधि वह सीरे अंग स्यामा विरही तपति छावौगी॥

भेद उपाय—

प्यारी तेरौ मन देखि तोपै तौ रतीकु नाहि अनमनी है कि नाहि देखि तू विचार री, तेरी आँखै देखि स्याम सुंदर कौं लियै बैठी तोहू न दिखावै दर्पन लै निहार री। देखि तू उरोज स्याम कंचुकी कौ स्यामा मानि उर सौ अरत लड़कात से उदार री, तेहि नखवर तेरे मान कौं खवर नाहि तिनही मनाइ करि दैहैं उर हार री॥

दोहा—सखी जाय गोविंद सौं कही रसीली बात।
सखी होइ अबही चलौ हित वढ़ि है सरसात॥७५०
सुख उपज्यौं गोविंद मन मोहन मुख परतीत।
वनिता के सिंगार सौं कहा वढ़ै रस रीति॥७५१

सखी कौं सरूप घनस्याम करि लियौ देखि काम मरयौ जियौ जाकी भृकुटी विलासतैं,
अंवर सरीर पर ऐसैं दरसत जैसैं दर्पन में स्वर्न झाँई दौरत उजास तैं।
कृत्तम उरोज लचकत कटि चोज जामें नाक चढ़ि जात धरा कठिन अयास तैं,
आई है अनौखी सखी साँवरो कहातैं ऐसी रंगी जात आँखैं लगी जात मृदु हासतैं॥
मानतैं अचंभौ राधा रूप है अनूप देखि तिहूपुर रूप नाहि आँखै चिपीजात हैं,
महा रूपवती तिन्हैं मोह उपजावत है यह मन आवै ह्वै पुरसमिलौ वात हैं।
नीलक निर्मल अंग जाके भूषनन सोहै मन पोहै लेत छवि जोवन जमात हैं,
उठत उरोज कटि सूछम चलन मंद हँसन सुधा में आँखै मेरी गोते आत हैं॥

तू तौ री कहत मान छोड़ मिलि प्रीतम सौं याकौं तौ न छौंड़ौं यह पाहुनी सी आई है
बोली सखी रीझि जौंलौं प्रीतमकौं ह्यौंही ल्याऊ तौलौं यासोंहँसौ खेलौं तैसौं मन भाइ है
प्यारी सुख पाय भुजा गरेसौं लगाय आँखैं, आंखैं मिलि आई अंग मिले छवि छाई हैं
जाग्यौ है अनंग पाग्यौ मान रूप चासनी में रस ह्वै गयौ है फिरी प्रेम की दहाइ है॥

प्यारी अनखाइ मुख चाहत फिरायौ जाकी आँखैं न फिरत छोड़ सांवरी के रूप कौं,
अंगी अंग झगरैं अनंग के विलास वढ़ें चढ़ें चतुराई ह्वै ह्वै कान तन जूप कौं।
मिलैं हैं सुदृष्टि चारौं मिलत मिलत ही में सब अंग मिलैं रस मिलन सरूप कौं
राधिका उठी है हँसि मान हूँ उठयौ है हँसि प्रेम उठि आयौ हँसि मिलन अनूपकौं॥

भौंहनि मरोर प्यारो कह्यौ हँसि जानैं तुम जानी यह सखी जो मनावन कौ आई ही
तुममहाछली महा छल ही कौ रूप कियौ आछौ वनि आयो भूली मैं हूँमन भाई ही
अंजननि मंजननि लटक मटक हाव भावनि बनाव जौं लौं हम हू न छाई ही,
रीझि कंठ लाइ सखी साँवरी छकाइ छवि आखैं भरि राखी जे जे प्रगटी निकाई ही॥

सुलट सिंगार किये प्रीतम प्रिया जू देखि दर्पन सी कुंज रूप जो में वरसत हैं,
किये गरवाही वडे दृगनि रसीली भांति मिलन सु दृष्टिनि रसीले सरसत हैं।
अंग अंग रंग पलटै है देखियत जब समुख लडैंती ह्वै सनेह दरसत हैं,
हँसन कटाछै आछै आछै केलि साचै तातैं सखी हो न पाछै अज्यो आइ परसत हैं॥

दोहा—घटिका है पच्चीसइ रचना कुंज निहार।
हरि राधा परवेस ह्वै खेलत रूप विहार॥७२८

दर्पन सी अछि कुंज लछि स्वछि आखैं होत देखत ही देखत चलत सोभा पाय हैं,
लालै लाल द्रुम हरे द्रुम पात पात में ह्वै पीरे द्रुमही में प्रतिविंव दौरें जाय हैं।
स्यामल तमाल सौंन जुही की झलक जामें गोरे स्याम रूप ओप ओप उठै आय हैं,
जित हरि राधा तित ही कौ धरा वँध रूप आखै लपटावनि लुभावनि सुभाय हैं॥
कहू नीलमणि सेत मालकी निकाई छाई कहँ पारजात फूल स्वर्न झाँई आई हैं,
जिनि विच ह्वै ह्वै ख्याल उठैं लाल द्रुम फूल झूलत ललाई ज्यौं जरावकी निकाई हैं।

जगमग जगमग लै लौ उठैं भूमि ज्यौं ज्यों दर्पन के डवा महामनि छवि छाई हैं,
चौकसी तिवारी सी झरोखा जाली वारी सी महलसी निकुंज सोभा फैल रही भाईहैं॥
द्रुम द्रुम मूल अग्र होत खरे दंपति यौं फूल वरसावै द्रुम झरीसी लगाई हैं,
वारत हैं मनि मानौ रूप रगे सोहैं फूल पृथी ज्यौं सिंगारी दीप माला ज्यौंनिकाई हैं।
हँसि हँसि वातैं करैं नीलक सुवर्न रंग उज्जल अरुन रंगामे जी होती आई हैं,
कोऊ कुंज दर्पन ललात जहाँ जात ह्वाँतैं होत छवि स्वाद निकलैं न सोभा पाई हैं ॥

दोहा—घटिका है छवीसई रचत व्याह ललितादि ।
दुलहनि राधा लाडिली दूलह कृष्ण सुखादि ॥
तमाल वृक्ष की कुंज में भाँवरि परत अनूप ।
छिन छिन छवि की चाँदनी प्रेम व्यापी वन रूप ॥

ललितादि मन मन आनँद भयौ है नयौ निति निति व्याह रस रचना करत हैं,
आनँद उमडि हृदै आए है प्रवल ह्वै ह्वै सौंन जुही मंड फलै रूप सौं भरत हैं ।
देखि देखि मुख दुलहनि कौ वड़े हैं नैंन सहज हँसन मैं न पाँवडे धरत हैं,
भावर परैंगी जब दूलह रसिक सेती आखैं रस चाखैंगी हँसन कौं करत हैं ॥

तेल यौं चढ़त नेह आखैं छकि जात प्यारी होत उवटन देह कंचन लजात हैं,
ऐसी दुलहनि जल मंजन करत वह पानी न रहत होत पानिप सुहात हैं ।
स्वछ करी भूमि दिसा ह्वै गई झलक ही की नभ झलक्यौ है ह्वै झमक सरसात हैं,
निकस्यौ है रूप मानौ चीर चंद वादर कौं किरनैं छुटी हैं मुख औपैं वरसात हैं ॥

अंग वे अगौंछे आछे केस औ तिलौछे नैंन अंजन दै वसन सिंगारे सव व्याह के,
दर्पन ज्यौं व्यापि उठ्यौ भूषननि देह सव जागीसी दिवारी प्रति रंगनि उछाह के ।
महँदी करनि पग जावक भरन रस डोरना वँधन हँसि हँसि रूप चाह के,
रोरी मुख चीत्यौ अछतन नाग वेलि प्यारी वढ़े तीन्यौ रंग ह्वै त्रिवेनो प्रेम राह के ॥

वाजे लै वजावैं गीत लाडनि लडावैं दुलहनि दुलरावैं ज्यौं ज्यौं आनंद भरति हैं,
चौंक लै पुरावैं चौकी रतन विछौनौ छावैं प्यारी वैठी भावै लछि झरना झरति है ।
वार ने करत नग मुख पैं झलक लगि पूल से विछत दसौ दिसनि भरति हैं,
देखत दृगनि वडे दौरै कान छुवै छुवै नासा ह्वै ह्वै इतै उतै हाव भावनि ढरति हैं ॥

दोहा—वँधत मौर सिर सेहता जा मैं मुख झलकंत ।
प्रीतम दिष्ट विलास लखि उपजै कला हसंत ॥

नग पचरंगनि जराऊ प्यारी जू कै मौरी पद नैंन मोती झलकत सब ओर हैं,
सेहरौ वध्यौ है बाद ले के पचरंग तार मुख के उदार हासि सवन में जोर हैं ।
झरत हैं छवि भरि रहत है धरे जब भाँवरि परैंगी वढ़ैं कौतिक करोर हैं,
उठैं जगि जगि स्यामताई में गुराई ज्यौं मर्कत स्वर्नताई स्वछ चादनैं झकोर हैं ॥

दोहा—ताही ढिग इक कुंज सौं ब्याहन चलत गोविंद ।
सखी बराती संग यों बेस पलट मुख इंद ॥

तैसैं ही गोविंद कौं चढावैं सखी तेल रूप आवैं भरी रेल आखैं बडी ह्वै ह्वै जात हैं, डोरना बँधत दुलहिन सौं मिलत मानौं अंग रमकत देत अंजन लजात हैं। गावति है गीतनि लड़ावैं रस रीतिनि सु दृष्टिनि मिलत हँसि उठनि अलात हैं, भाँवरि परैंगी जब कहाधौं विलास ह्वै है आगम विवाह कोटि ब्याह सरसात हैं ॥

वंदन सौ चीत्यौ सेत अछत सौं चीत्यौ नाग वेल हू सौं चीत्यौ पिय मुख ललकत है, उझलन रूप ह्वातैं उछलत रंग तीनौं धरा फेल जात ह्वै जराऊ मलकत है। सेहरौ बध्यौ है मौर छलि सवर ही दौर जरी के सुतार ह्वै दर्पन वलकत है, वढ्यौ है आनंद दुलहनि के मिलन कंद हँसन सु छंदनि झलक झलकत हैं ॥

दोहा—पटुका कौ है छोर मुख दूलह छवि न उदोत ।
मौर सेहरे कौ वढत उदौ हँसनि छनि जोत ॥
हरित स्वर्न मंदिर मनौं कुंज रही झमकाय ।
फूल फलनि महामणि नु कौ मनौ जराव सुभाय ॥
लाल फूल मनि लाल से वनि रहै चौषट भाय ।
वंद वाल दर्षन रुचिर मोतिनु झलक सुहाय ॥
पंच जात नग रंग की तौरन है झमकाय ।
दूलह रसिक सुजान कै परस सुकर कै भाय ॥
उतम उच्च तोरन छुवत चढत पौर वढि नैंन ।
मनौं सजल घन में लियै मोहन मूरति मैंन ॥
जन वा सेज्यौं कछू थमि फिरि भाँवरि ज्यौं वेर ।
दूलह दुलहनि प्रेम सौं चौंरी चढ़ि हँस हेर ॥

एक सखी वृषभान भई कर कन्या सुदान गोविंद कौं दीनौं ।
एक सखी गठ जोरो कियौ भयौ जोरौ सुनैननि कौ सौ प्रवीनौं॥
एक सखी देत भावरि प्रेम सौं लाल लडैती कै होत अधीनों ।
घूंघट माँझ लली मुसिक्यात कटाछन सौं हसि चाँदनौं कीनौं ॥

सखी आस पास जोति रंग हैं प्रथक स्वछि मधि महा जोति राधा गोविंद लसति हैं, भावरि वे लेत हैं अलात रंग अंगनि के सव में फिरत प्रतिविंवत जगति हैं। रंध्रन सेहरेन में ह्वै गौर स्यामताई हँसत छनति देखि अखिया रंगति हैं, उपज उपज छवि आंखिनि सखीन की में एकठी भई है रस रूप सौ पगति हैं ॥ भावरि परत आगै प्रीतम प्रिया जू पाछै अंग छबि आछै वढै कौतिक विलास हैं, वेदी प्रिदि फिरत परत निज दिष्टि उर प्यारी प्रतिविंवत छकत मृदु हास हैं।

आगैं करि देत है लडैती पिय पाछै पाछै घूंघट में देखैं उर दर्पन उजास हैं.
प्रेम के विवस ब्याह सखी यों करावत हैं आंखिनु कौं ब्याह रूप ही सौं रूप रास हैं ॥

दोहा--भांवरि लै दाँवरि वधे पिय प्यारी रस दान ।
नीची दृष्टि विलोकनैं घूंघट में हँसि जान ॥
दुलहनि लै उलहत उठे वेदी सौं गोविंद ।
निजु मंदिर दर्पन मनौं धसत लसत द्वै चंद ॥
दूलह हाथ न छुटि सकै दुलहिनि कंकन डोर ।
घूंघट सौं स्पारत लगी दिष्टि लगी तिह ठौर ॥

दूलह रसिक दुलहनि हाथ डोरना सु खोलत खुलत नाहि रूप कौ घुलाव है,
यातैं जानियत दृष्टि मुख छवि घूंघट में जाय अटकत सब चेतना भुलाव है ।
पिय पै न खुल्यौ प्यारी जू पै ये खुलायैं सखी सोभा भर लावैं छनि हँसनि उलावहै,
ह्वै गई कटाछनि झमक पौन बस नैंकु अंचल उडत दृग मिलन तुलाव है ।

दोहा--दूलह दुलहनि कौं सखी छरी खिलावनि हेत ।
मार होत चितवनि भरनि वडे दृगनि हँसि देत ॥
नवला सी चलै पिय पै प्रिये की संग हाँसी सुधा धर से मुखते ।
पिय की नवला सी जवै प्रिय पै पहुचै न कटाछनि के रुखतैं ॥
भेद घूँघट कौं वै वडे वडे नैंन छरीसी चलैं रूप के चुखतैं ।
खेल चौंपन सौं दुलही उलही उत दूलह मार मची सुख तैं ॥

दोहा--दुलह दुलहिन प्रेम सों सखी करैं ज्यौनार ।
घूंघट में सौं खाडिली हँसि हँसि रूप उदार ॥

दुलहिन दूलह सु भोजन करत नीकैं सखी एक रावै भरे विंजन सरूप के,
प्रीतम सु कर प्यारी जू के झोनैं घूँघट में कौर हँसि देत लौ हँसनि मिलि जूप के ।
चारौं दृग मिलत मिलत दृष्टि पट प्रति स्वाद उपजत मुख चलत अनूप के,
झूलनि किनारी चल दल झूलैं भारी वे कपोलनि पैं झूलै नथ मोती भरे रूप के ॥

दोहा—घटिका मसाईसई सूरज पूजा ब्याज ।
मिलत सु गोविंद राधिका कौंतग क्रीडा साज ॥
राधाकुंड के उतर दिस भरना हैं सो ग्राम ।
जाके उत्तर दिस विषं सूरज कुंड सुधाम ॥
जहाँ सुमर्ना बृछ है आदि अनादि सु बीज ।
जित ही सूरज कौ रुचिर मंदर दिष्ट पतीज ॥
प्रथम सु आई राधिका पूजन सूरज देव ।
तप्त ढाकि पृथ्वी उतरि करी दंडवत भेव ॥

अहो देवि अहो स्वामिनी अहो श्रीकृष्ण सरूप ।
अनुचर की पूजा करौ महिमा वृद्धि अनूप ॥
अनुग्रह लखि सूरज गयौ करि परिकर्मा भेव ।
कृष्ण पूजारी ह्वै धसे मंदिर सूरज देव ॥
दिन प्रति यौं पूजा करैं नैननि पूजा होइ ।
दिष्टि मिले तैं सफलता वढै रूप की लोइ ॥

चली राधिका सूरज पूजा लियैं मानौं कोटिक सूरज रूप उदै सौं ।
भली भांति पृथ्वी ह्वै ह्वै दर्पन सी जहां पाइ धरै यौं प्रकास जुदै सौं ॥
वे दिसा निस रूप घटानि चढै मुसिक्यानि सौं वीजुरी कौधैं वदे सौं ।
छवि चौंधि उठ्यौ वहू सूरज कौ धर दर्पन मंदिर सूर फँदे सौं ॥

वैठे हैं गोविंद ह्वै पुजारी रवि मंदिर में आँखिनि की पूजा चितवनि मन मोद में,
रहसि पुजायौ प्यारो छवि सौं चढावत ही चढयौ जात रूप पूजा आगैं चहु कोद में ।
आछैं लगी आवनि रंगीली हैं सो माधवनि दुरद कटि छीन उर उचन सहोद में,
मुख की निकाई वडे दृगनि लुनाई यौं पुजारी पूजा पाई हँसि पूजन विनोद में ॥

दोहा—सूरज पूजा करि चली श्री राधा घर ओर ।
घर मानौं आवत सामुहौं प्रेम वढत रस जोर ॥

ललिता विसाखा आदि सखी हैं समूह सब राधा के प्रकास स्वछ सवै राधा मई हैं,
घन तैं निकसि मानौं वीजुरीन कौ सौ झुंड वन तजि न्यारौ ह्वै पृथी पै धाराकइ हैं ।
रंगी रंगी जात राह रूप सौं सुवर्न जैसी वसननि भाँति भाँति रंगामे जो सइ हैं,
जोवन की झाँई भूषननि की निकाई मंद हँसनि सवाई की सवाई छवि छई हैं ॥

प्यारी जू को आवन सुनी है वरसानैं मैं कौ उठ्यौ वरसानौं मानौं प्यारी जू कौं लैंन हैं
घर घर में सौं मानौं चली लौन राधाजू कौं देह धरि धरि जोति गोपी ओपी मैंन हैं ।
इतै उतै दुहू ओर दामिनीन कौ सौ मानौ दामिनिनि कौ सौ धन रूप सोभा दैन हैं,
दर्पन महल स्वर्न फटिकमनिन के वे कीध कौंध उठैं प्रतिविंवन के चैंन हैं ॥

दोहा—राधा निजु मन्दिर धसी फसी मनौं छवि द्वार ।
सूछम सौं भीतर गई अटकी काँति उदार ॥
दर्पन मन्दिर दीपगनि जैसैं सोभित होत ।
त्यौं श्री राधा सव महल उदित रूप की जोत ॥
घरी अठाइसई मित्रन में हरि आइ ।
लग्यौ रूप हौ दृगिन सौं प्रगट्यौ सहज सुभाइ ॥८०४

मित्र हँसि वोले मित्र कितिहे कि इति कहूँ विनि तुमही हैं या त्रिलोक निसौं जिये हैं
रस ही कौं जोरो न छुट्यौ है हँसि बोलन कौ नयो ह्वै ह्वै आयौहैं सर्फत आगैं किये हैं ।

जितै अ खैं जांहि तित ही सो मानौं आवत हो पूछन सके हैं सोभा ही सौं जिति लियै हैं
रूप है कि मंत्र तेरौ गुपत प्रगट हू मैं लग्यौ ही रहत जासौ पगे जात हिये हैं ॥
तारन में चन्द्र जैसें मित्रन में कृष्णचंद्र सुधा ज्यौं स्रवत स्वच्छि मंद मंद हास है
मानौ वहु रंग के सरोजनि में रवि छवि विंव पतिविंव लागैं कमल प्रकास हैं।
मानौं सुर सभा में सु इन्द्र ऐसौ सौभित है कोटि काम मूरतिनि में ज्यौं रूप रास हैं,
मुरली बजावत मुकट झलकावत, सु दर्पननि माँझ दीप गननि उजास हैं ॥

दोहा—वंसी सब्द वजाइ के लीजो धेनु बुलाइ।
सोभा दृगनि मिलाइ कै चितवैं प्रेम सहाइ ॥

मुरली बजाइ जामें सव कौं सुनायौ नाम हुंकारै आवै धैनु दिसा मानौ छाई हैं,
चंद्रमासी उज्जल जलज देह पानिपसी बड़ी बड़ी आंखैं देकैं हरि कौं छकाई हैं।
धिरि आंई ऐसौ तैसैं रूप उझलाई जैसैं न्यारी न कहावैं मानौं छवि की बनाई हैं,
स्यामताई में कि चिलके की मानौ मूरति हैं उनै उनै प्रेम ह्वै आसक्ति वरसाई हैं ॥

दोहा—घटिका है उनतीसई घर को चलत गोविंद।
गोधन आगैं करि लिये ज्यो चकोर मुख चंद ॥

आगैं करि लई धेनु पाछैं पाछैं आप हरि आगैं धरैं पाय पाछैं देखै वे गोविंद कौं,
नेह वसि आगैं वँधि पाछैं फिरि देखि लेत मानौं आखैं सुंदर हैं वरजी सु छंद कौं।
सव धात चित्र संग चलत हलत मानौं रंगामे जी होत जात दिसा सोभा कंद कौं,
पूरव आसक्ति भईं उज्जल चकोरी वे तौ देखिवौ न भूलीं फूलीं स्याम मुख चंद कौं॥

दर्पन ह्वै जात राह आवत गोविंद दिसा कोटि मरकत स्वछ दौरैं वे प्रकास हैं,
चंद की किरन ज्यों प्रवाह गंगा जू में दौरैं आगैं आगैं धेनुनि पैं रूप के उजास हैं।
कुंडलनि मण्डित हैं स्वछ गंड मंडल वे नील अलिकावली लुलित मंद हास हैं,
रज की उडनि में प्रमान रंगि जात सो हैं मुकट अगौ है जगमगनि के रास हैं ॥

खुरन उडी हैं रज चढ़ी है अकास मानौं दर्पन दिखायौ गोपीं ओपी चारजाम की,
रज परसे तैं आखैं देखन विलात ह्यौंतौ रज ही सौं आखैं ह्वै भई हैं अभिराम की।
आगैं आगैं धैन उपनैंन ज्यौं चली वै आवैं जामैं झलकी है रूप माधुरी वे स्याम की,
दिन ह्वै रह्यौ है राति आई हैं निकट तऊ स्याम उजरइ कोटि दिनन अनूप की ॥

दोहा—वरसाने ढिंग ह्वै चले नंदग्राम गोविंद।
राधा मुख कै चाँदनैं जनों चकोर आनंद ॥८१३

अटा चढि देखै द्वार गोपुर अटानि वे तौ महलैं दु महलैति महलैं प्रकास हैं,
मानौं सिसमार चक्र अवनी उतरि आयौ गोपी छवि ओपीं वे नक्षत्रन के रास हैं।
अद्भुत निकाई मुख चंद्र हैं अनेक यामें एक हो चकोर कृष्ण देखैं मृदु हास हैं,
जात नंदग्राम साँझ ह्वै कै वरसानैं सरसाने है सनेह रूप माधुरी के वास हैं ॥

दोहा—बरसानैं ढिग होइ कै नंदग्राम हरि जात।
नैंन इहाँ रहि जात हैं राति मिलैं परि भात॥
राधा दृष्टि न छुटि सकै कृष्ण दृष्टि सौं लागि।
जौं वंसिलाप वा रूप की उठै हृदे मैं जागि॥८१६

आवैं वरसानैं के निकट ह्वै गोविंद जाहि देखैं नंदगाउ की वे गोप ज्यौं चकोर हैं,
सव ही की दिष्टि न लगी है मुखमण्डल सौ दिष्टिनि सौ दिष्टि मिलै वढै छवि जोर हैं।
हँसन विलास सौं हँसनि सव ही की मिलैं आनंद उजास रूप आवत झकौर हैं,
मुकट सौं सामु हैं मिले हैं सोस फूल नग रंगनि के दौरि होत पावडे करोर हैं॥

वंसी रव सुन्यौं ब्रजवासी विहवल भये कृष्ण मुख देखन कौं सवै उठि धाए हैं,
गोरज उड़ी है नभ पृथ्वी न समझ परै प्रेम ह्वै दर्पन रूप प्रगट दिखाए हैं।
चाहन सौं देखि हृदै लेखि चले मंदर कौं लाल हँसि चितै वत दान सौं छकाए हैं,
मुकट झलक झलकत जात आगैं आगैं जाग्यौ राज मारग जा मारग ह्वै आऐ हैं॥

दोहा—वृद्धनि सौं परिनाम करि वालन सौ सम प्रीत।
तरुनीन सौं अनुराग रति दिष्ट मिलन परतीत॥

धैंन आपु आपनी लइ हैं घेरि मित्रनि वे राँभि रांभि कृष्ण ओर देखैं खरी होत हैं,
जव लौं न मिलै दिष्टि तव लौं न टरैं ह्वांतैं मानौं विदा होत है आसक्ति में उदोत हैं।
वेऊ हँसि हँसि विदा करैं मानौं सवनि कौं देत रूप स्याथ स्याम स्याम दृग जोत हैं,
तऊ न सकत छोड़ चलैं इति ह्वैं ह्वैं जात प्रेम उनमत्त प्रेम चातुरी के सोत हैं॥

चले सव मित्र विदा ह्वै ह्वै घर आपुने कौं सव ही कै संग मानौं स्याम रूप सोत है,
डोरौ न छुट्यौ है सव ही के रस दिष्ट ही सौं विष्टि जो लगी है छवि वे प्रवाह होत हैं।
भूल भूल जात हैं उठैं हैं मन फूल फूल सांझ की प्रभात मानैं वढैं प्रेम जोत हैं,
आवैंगे चलेगे कृष्ण वन कौं चरावैं धैंन फेर सुधि आवै घर कौतिग उदोत हैं॥

दोहा—अपुनी निजु गायनि लियैं निज घर चलत गोविंद।
मनौं तरैया संग लियें अत्र भुवन ज्यो चंद॥
घरी तीसई दिन भऐ घर आए गोविंद।
धैनु सवै खरकनि दई चित चकोर ज्यौं चंद॥॥

महल महल चढि गोपी द्वार द्वार खरी आवन गोविंद जाहि देखै भौंहनि मरोर हैं,
अंग अंग सुंदरता कृष्ण छवि छकी सब ल्याय उर लेखैं जैसें चंद कौं चकार हैं।
रूप की अपार गति सवै दिस दौरैं छवि जितै देखैं देखन अधिक अति जोर हैं,
देखत हँसत लड़कात जात हित हियैं प्रेम के प्रवाह वे जसोधा जू की ओर हैं॥

दर्पननि ही कौ है कि फटक मनिनु कौ कि हीरन कौ है कि महा कांति पुंज देखियै,
महा स्वर्न तेज सौ कि द्वार जगि मगि सोहै जा में लालमनिन की चौखट विसेखियै।

दौरत हरचाइ से कि पन्नग कपाट सोहैं जा मैं रंगामे जी कोटि काम विजै लेखियैं, आई है जसोधा जहाँ आरती सजोवत ही ह्वै रही दिवारी है असंख्य रंग पेखियैं ॥

आयौ है गोविंद वन गोधन चराइ माता आरतो करत अरु देखैं मुख सोभा हैं, जैसैं वे फिरै हैं दीप नैननि भरैं हैं छबि दृगनि कपोल जोति कुंडलनि गोभा हैं। मुकट झलक मुसक्यान नक मोती ख्याल रूप सौं निहाल ह्वै ह्वै जात चित चोभा हैं, हाथ रहि जात चित बूड जात सुंदरता देखन कै लालच जगी प्रमोद लोभा हैं ॥

दोहा—लियैं जसोधा पुत्र कौं चली भवन में जात।
झमकि भवन मानौं रूप सौं भरि आनंद मुसिक्यात॥
प्रथम घरी निसि महल में प्रेम उछाह विनोद।
लेत जसोधा वार नैं पौछ पिता मुख मोद ॥

मुख देखि पिता उर लाइ लिये पिए रूप रूप सुधा श्रमके कन हैं।
छवि मंडत हैं रज सौं अलकैं झलकैं हैं प्रमान भले सन हैं ॥
मानौं नंद आनंद लियैं उर में मुसिक्यात लडावै लडेपन हैं।
पठ पौंछत जात ज्यौं ज्यौं वे कपोल सु आरसी से चिलकैं वन हैं ॥

दौहा—हस्त चरन धोये ललन छवि सौं मुख परि छाल।
लै जसुधा निजु पट मृदुल पौछत होत खुस्याल ॥८३०
उवटन करि मंजन कियौ जल समोय अगुछाइ।
अंग आरसी से निरखि जसुधा रूप अन्हाय ॥

करैं मंजन लाल गोविंद लला होत मंजन वा जल ही कौ लगै।
मानौं स्यामता में तै सचिकनता की उठै चिलकैं जाही रंग रगै ॥
मुख धोइ कपोलन ह्वै उर ह्वै कटि ह्वै चरनौं पर ह्वै ह्वै जगै।
उतरै ह्वै प्रथ्वी वहि जाही समैं मानौं दर्पन सी विछी कांति लगै ॥८३२

दोहा—दुतिय घरी निसि कृष्ण कौं प्रेम सु जल अन्हवाइ।
वसन पलट भूषन अलप रूप वढत सरसाइ ॥

भूषन उतारैं जित ही सौं भूषननि सोभा सौगुनी निकसि आवैं रूप की निकाई हैं, भूमि जगि जगि उठै दिसा ज्यौं अलंकृत हैं भवन लगत मानौं छवि घिरि आई हैं। ढाँपत निकाई माता भूषन वसन सेती एते पे झमकि आवै अंग सुखदाई हैं, ऐसैं जसुधा हूँ नंद देखत गोविंद जू कौं देखन न निश्चै फिरै प्रेम की दुहाइ है ॥

दोहा—त्रितीय घरी गोविंद निसि गोधन दुहत विसेखि।
गऊ दुहैं छवि माधुरी देखि देखि हिय लेखि ॥

दुहैं दूध गोविंद वे रूप लै लै सु भीर भरैं हैं दृगौ छवि हैं।
वह सावरी उर मूरति चित्र करैं वहु भाय लखैं भरैं ज्यौं कवि हैं ॥

जौ लौं होत प्रभात वा भाव प्रकास में यौ चितवै निकसै रवि हैं।
घरी चारि चढै दिन फेर उठैं फिरि जात चलैं वन कौं जवि हैं॥

चतुर घरी निसि कृष्ण जू भोजन करत विसेखि।
राधा निजु कर सौ लियै भेज दिये छवि देखि॥
पक्व अन्न गोविंद कौं राधा दियौ पठाइ।
तुलसी के सरि सहचरी लै आई या भाइ॥
होत जात उज्जल प्रथ्वी जिनके रूप उदार।
वडे वडे उन द्रगन के दिसा किये उरहार॥

मुख लायक प्रेम ह्वै देखे पूवा लडुवा मठरी भरि रूप दिये।
पपरी कचरी वे सलौनी लगैं भाव दै दै कटाछै मसाले किये॥
सुख उज्जल है वेह सीसे सुहाल सुवाल वनाए हैं देखि हिये।
वे जिवैया न है विन सुन्दरता हि सु आखिन ही सौं सभारि लिये॥

छप्पै—भोजन करत गोविद स्वाद जसुधा द्रग पावैं।
कौर लेत लडकाहि हृदौ जननी सिरावैं।
देखें मधुर कपोल चलत वेनैंन ढरारे।
मुदित होत मुसिक्याइ जलज वे सर उजियारे॥
अधरन लाली अति घनी खुलैं दसन मुख जोत।
हीरामनि लालमनि की आगैं वरिषा होत॥८१४
जसुधा हू भोजन किये किये, भोजन श्रीनंद।
अति सलाघ हैं स्वाद में मानौं महा अनंद॥
सखी जहाँ श्री राधिका आइ ले आनंद।
सुखद वात वे सव कही सुधा स्रवत ज्यौं चंद॥
प्यारी जू भोजन करत द्रगन हू मुख के स्वाद।
रूप हू पक्कौ अन्न के होत• मिले अहलाद॥

करै भोजन प्यारी सखी एक रावै सु प्रीतम की मुख माधुरी री ह्वै।
जैसैं आखिनि कौं रस आखैं पियौं छै तौं चार ह्वै प्रेम सवादनि भ्वै।
दृष्टि एक ही प्यारी की प्यारै मिलि हसि जैंवत संग मिली छविग्वै।
रतिभाव प्रकास न जानै परै सुमरैं रूप एक मै होत है छैं॥

दोहा—घरी पांच निसि मित्र तहां आये कृष्ण सुजान।
ज्यो दरपरन वहु रंग के हैं प्रतिविंव समान॥८४६

स०—मित्र मण्डली वैठी अथाई जहां गये कृष्ण तहाँ छवि सौं दमकै।
मानौं दरपन रंग अनेक सभा प्रतिविंव मिलौं औ मिलौ झमकैं।

होत जात कटाछन ही सौं हँसी वतरानन विम्वन की जमकै ।
ढरै मोती की ढार सुढार वडे द्रग पानिप ढार ढरैं रमकैं ॥

ऐसौ सुत पायौ नंदराय जै सौ सव सुख जायौ है जसोधा भरि आयौ साचौं रूप है, सव कौं सनेह उपजावै भरि प्रेम आवै देख्यौ ही सुहावै छिन छिन सोभा भूप है । अमृत सौं हँसन सुवोलन कहैगौ कौंन मीठे करैं कान दृग देखन अनूप है, सवन के नैंन है कि सवन के प्रान यही दौरत सौं रई पकरन आखौं जूप है ॥

दांता जैसौ इसविन उदमीन हू कौ देत जैसें माता पिता वे कुपुत्र हू कौं देत हैं, रछक ज्यौं प्रथ सिक्षा देवे हू मै प्रथि जैसौ सिंधुज्यों गंभीर छोटी वौ सभरे हेत हैं । ऐसौ रिछवार जैसौ रीछ मानौ देत धरे पृथी पौं उतरि देवता हू देखि लेत है, नंद जू तिहारौ पुत्र गुननि पवित्र वडौ व्रज राखि लियौ इंद्र पै तैं चढे खेत हैं ॥

दोहा--घरी सात निस कृष्ण कौं मोहन मन्दिर जाय ।
जसुधा दूध पिवावही रुचिर भात दरसाय ॥८५०

वह प्रेम जसोधा को को वरनै दूध भात खवावत रूप भरै ।
मुसिक्यात लला नट जात जवै हलजात वुलाक कौ मोती हरै ।
भरि जात है वौ छवि आँखिनमैं लड़कानि सिहान सुधा ज्यौं झरै ।
घर पौढे हू पुत्र ज्यौं चित्र हृदै लिख्यौ सोवत हू में लड़ायौ करै ॥

दोहा--घरी आठ पौढाइ निसि जसुधा मन्दिर जाइ ।
पौढन गोविंद लाल की नैननि मै अरझाइ ॥

दूध औ भात जिवावै जसोधा जू जौंवत जौंवनि आखिनि सौं ।
पूत पियारे कौ रूप विलोकत कौरन अंध्रन दाखन सौं ।
सूत लग्यौ रहै दिष्ट सु माधुरी स्वाद दुहू दिसि चाखन सौं ।
नूतन यौ वढयौ प्रेम अलौकिक नेह नयौ जानि माखन सौं ॥

प्रथम सखिन अभिसार प्रिय कौ करवायौ जानि ।
प्रेम पगन अंग ढ़ाकि कैं वडी चतुर रसदानि ॥

स्याम स्याम ही सिंगार कीनौं सव सखीन के स्याम वनी राधिका जू चलिजात सविहैं राति ही मैं राति मानौं डोरे ए सुगंधन कै भौंरै लपटे वे आवौ देखौं कौन जवि है । मानौं ससिमार चक्र अवनी उतारयौ ढकि नीलांवर ही सौं सोभा कहै कौंन कवि है, चंद्रमा नक्षत्रन सहत चल्यौ जात मानौ जानत न कोऊ प्रेम पिया विन छवि है ॥

नूपुर वजै न धरैं धरती पौं हरैं पाय नौंक हू झनक झिझकत खरी होत है, इतै वितै देखत उघारत छिनक पट दामिनी ज्यौं कौंधौं फिरि दुरन उदोत है । ढापत चलत मंद नखन दवायै नख चंद्रिकान दौरै नीकै तान नित जोत है, जवलौ न आयौ वन तवलौ अँधेरौ छित चाँदनी विछाइ खोल्यौ चंद मुख जोत है ॥

दोहा—एक पक्ष सुकला बनै एक पक्ष ह्वै कृष्ण ।
यौं अभिसार जु होत है बढै प्रेम की तिष्ण ॥

उज्जल सिंगार सब कोनें नख सिख बनि उज्जल किनारी जामें मोती लटकनि हैं,
मुख सौं मिलत प्रभा पानिप निकसि चलै चंद्र की किरन ह्वै चमक चटकनि हैं ।
बिस मै ह्वै सब दिसि देखत न देखी काहू रूपकी झकोर दृष्टि आछी अटकनि हैं,
नेह सौं बढत दृग प्रीतम निकटि आयौं आनंद बढि हैं लागैं अंग मटकनि हैं ॥

आगैं चली जात वन भीतर सुधोर गति जो जो द्रुम आवै सो सो होत है प्रकास कौं,
छाया न रहत साखा पल्लव वे स्वर्न होत कोऊ कोऊ चंद्र सौं भयौं प्रकास हास कौं ।
रूप रंग्यौ जात वृंदावन राधा आवन सौं दर्पननि में ज्यौं चंद्र वृछनि सु रास कौं,
महल निकुंज जहाँ बैठो सुखपुंज जाय फैलो है सुगंध स्वासा अंगनि सुवास कौं ॥

दोहा--कुंजन माँझ निकुंज है जामें मन्दिर स्वछ ।
वन कौं दर्पन रूप है वन मनौं दर्पन अछ ॥८६०
जहां पधारी राधिका वडे दृगनि सरसाँन ।
भीतर तौ पीछैं धसी धस्यौ रूप अग्रवाँन ॥
अप्रमान प्रकासन नग सबै जिन में अद्भुत सक्ति ।
ह्वै दर्पन प्रतिविंव लौ लियौं चलौं अनुरक्ति ॥
इक इक नग बहु रंग है निजु रंग सनमुख मान ।
दहनौं बायों नीच उचि जाँई जगमग जान ॥
जमुना निकट प्रवाह पर दौरत जाकी जोति ।
जोति उमडि मानौं जल परस प्रवाहन होति ॥८६४

सूर से प्रकास चंद्रमा से सम सीतल हैं काम हू से सोहन हैं ऐसे नग लगे हैं,
मोहि राखैं द्वार जाके भीतर कहैगौ कौंन रति नट विद्या नृति चित्र खेल रंगे हैं ।
देखत प्रसन्न जामें लाडिली प्रवेस करैं भीतर के रूप दौरे आवै रगे पगे हैं,
जेतिकि वे मूरति हैं दासी ज्यौ सहस्र मानौं प्यारीजू कौं लौन आवै झमकन जगे हैं ॥

जोति में महल मनि दर्पन महल जासौं भीतर सिंघासन पै बैठी राधा लस है,
सखिन में प्यारी प्रतिविंव सखी मंदिर में मन्दिर सुवन वन दिस प्रति धस हैं ।
रूप निचुरत मानौं अखिल ब्रह्मांडनि कौ प्रेम काम छानि काढयौ सर्व सुख कस हैं,
दृष्टि की झकोर मुसिक्यान वरसी है मानौं भीज रह्यौ वृंदावन सुंदरता रस है ॥

दोहा--पौढाइ कृष्ण माता गई मनन गयौ ता संग ।
फिरि फिरि आवत देखि हिये लालन सब सुख दंग ॥
ढकि ढकि सोवत कृष्ण मुख भोरी जसुधा माय ।
सोय गयौ सुत जानि कै सोवत आपु सुहाइ ॥

माता पौढी जानि कै उठे जहां सौं आप ।
खिरकी पोछै खोलि चलि राधा मन मन जाप ॥
नवी घरी निसि कृष्ण जू चले सुवन इत रात ।
द्रग राधा छवि माधुरी पूर प्रेम नियरात ॥८७०

स्याम ही सु आपु अरु स्याम ही भई है राति स्याम ही सघन हैं तमाल स्याम राहमैं,
रंगि रही आखैं राधा छवि में चले वे जात लागत है वन सब उज्जल उछांह मैं ।
कोटिक मसाल ज्यौं रसाल द्रुम भासत है ह्वै ह्वै जात भाव रूप कौतिक उगाह मैं,
बैठी मनि मंदिर लडैती ताके भीतर हैं बाहर समझ मिल्यौ चाहैं प्रेम चाह मैं ॥

द्वार ही पै आये पिय रूप धसि गयौ आगैं चिलके सौं प्यारी उठि मिलिबे कौं लगीहैं
फेरि सुधि आई यासौं मिलौ कौन ढीठ यह छोडि है न अंक सौं हँसन चितै रगी हैं ।
प्रेम सौं रह्यौ न गयौ भुज भरि लेत ही मैं भुज रहि गई पै अचंभै रस पगी है,
बडे वे द्रगनि की कटाछैन मिलाये खैंचि जितही तौ स्यामता धसी वे आवै जगी हैं ॥

दोहा--जब हरि भीतर जात ही सब दिसि राधा देखि ।
सपनौ है किधौं सो परति मिलि मिलि प्रेम विसेखि ॥

जेतीक वे मूरति है भासत किसोरी जहां सौनौ स्वछि गोरी राधा रूप लहलही हैं,
ह्वै रही लड़ैती सब ही मैं न्यारी नहीं कहू नख सिख प्रति प्रति झलक निचही है ।
जैसें बडे द्रग बड़ी दृष्टि की फिरन साची कानन कपोल स्वछ जगमग रही हैं,
जाही सौं मिलत धोखैं कठिन उरोज पोखै हाँसी सोत झोकै प्यारे प्यारी दौरि गही हैं॥
प्यारी अनखाय मुसिकाय पिय ल्याइ गरैं मानौं प्रतिबिंबित दर्पन दीप लौय है,
मुख लगि मुख छवि रूप के फुहारे छूटैं बडे बडे द्रग दृष्टि रसजुत गोय है ।
गुथैं गुथ तारे ह्वै उजारे यो कटाछन सौं झकाझक कानन सिंहान रस भोय हैं,
डारे भुज भुज में उरोज लगि उर मैं सुधासौ सीचे जात हैं मिठास मीठे मोय हैं ॥

दोऊ पिया प्रीतम परसपर जोरैं भुज जोरैं मुखमण्डल झकोरैं रूप रूप हैं,
हँसनि हँसनि सौं मिलनि की हँसनि औ दृष्टि झमकै हैं मिली भरी रस तूप हैं ।
मुकर विलोकैं न्यारी करैं मिली देखन सौं मिली हैं कटाछैं औरै गाठि का अनूप हैं,
दर्पन हू ढूढे न मिलत छवि माधुरी में कौन सौं दर्पन को जुगल रति भूप है ॥

प्यारी जू के नथही के मोती की को जाति कहै जोति जा मुखमें उदोति छवि छाई है,
प्रीतम की दृष्टि जुरि आवौ तैं झुकति चले परस कपोल जैसें हँसनि जनाइ है ।
झूलत झलक लड़कात लड़कौ है रूप जूप तज लू सपीरि पानिप सु आइ है,
जल निधि उपज्यौ कि उपज्यौं जल रूप निधि प्रेम निधि वारैं महा कौतिक निकाइ हैं॥
देखे अरविंद और चंद मुख चंद आगै दोऊ दबि गये न लगत उपमानियौ,
देखत द्रगन कै विदित कोटि जुग भये निहचैं न भयौ न तृपति मन मानियै ।

कहत गोविंद यौं सखी सौं तुम जानि लेहु राधिका के अंग अंग कौंन सुधा आनियौ,
नूपुर की धुनि में छतीस राग मोहे जात खोयेजात मदन वढत प्रेम जानियौ ॥
नखन प्रकास ख्याल देखत गुपाल लाल भूषन प्रकास भये जा प्रकास वास तैं,
मुख के प्रकास कौ प्रकास फुही वरषा ज्यौं चंद्र न छुवत भूमि जाके मृदु हास तैं ।
वोलत खुलत दंत कोमुदी अनंत दुति ओपत प्रकास कौं प्रकास दृग प्रकासतैं,
चलैं जो कदाचितो प्रकासते प्रकास चलैं चंद तौ ज्यौं चाँदनी त्यौं रूप राधा रासतैं ॥

चरन विलोकि जीभ धरे ही रहत धरा मृदुता ललाई मन भाई क्यौं हू पाऊँ मैं,
सूछम सुकटि देखि देखि दृग स्वछि भये त्यों त्यौं अति नये छबि मूरछा गनाऊँ मैं ।
ऊरज नवीनाई जु वनाई भूषनन सों है भूषन बनाये जात कंचुकी तनाऊ मै,
देखि मुख हँसन विलोकऊ रसिक ज्यौं ज्यौं उपजैं कटाछैं रस छवि गनगनाऊँ मै ॥

दोहा--नख सिख देखैं प्रियाकौं पिय मन मोद विलास ।
स्वाद वढत छवि माधुरी सुखद सु मंजुल हास ॥

चरन विलोकि नख चंद्रिका पैं भावरि दै अतरौटा लावनि सौं चढ़ै पन पाँवडे,
उदर सुरसना मयंक ज विवस चढ़े उरज बुरज प्रेम सुरझ न चाँवडे ।
त्रिवली सुकंठ कर्न अलक झलक झूले स्वछि गंड मण्डलनि मचलन छाँवडे,
वृंदावन चंद श्री गोविंद प्यारी प्रीतम के दृग मुसिक्यात तेरी उरझनि उमांवडे ॥

दोहा--दसै घरी निसि महल मै रूप परस पर पान ।
नख सिख लौं अवलोक पिय प्रिया सुरस रसदान ॥

नख तै सिख लौं पिय देखी प्रिया कौं वडे दृग मादिकता हि लियैं ।
रति मंत किये रस दृष्टि पिवाय हँसी मृदु प्यार ले मिठास दियै ॥
भुज में भुज डारे उरोज निहार अन्यारे गडे जाहि देखि हियैं ।
चित्र ह्वै है महा मंज मंदिर में वे कटाछनि रूप सभारे पियैं ॥८८२

किधौं वन यामें किधौं वन ही में यह दिवि जगि मगि रह्यौ रति मन्दिर विलास है,
चित्र मै रच्यौ है समैं समैं जे जे खेल चित्र चित्रनि दिखावै औ खिलावै खेलै रास है।
ललिता बिसाखा आदि सखी रूप मंडली में नृतत अलात वध्यौं मंडल उजास है,
दृष्टिनि मिलावैं प्यारी जू सौं गति लायैं माचैं वेसरनि मोती झूले लै लै मृदुहास है॥

दोहा—करि सिंगार वा महल सौं चलत जु राधा कृष्ण ।
रास सुरस आस्वाद करि पौढैं आय सुतिष्ण ॥

मंदिर सौं दछन सु हीरन कौ मंडल है लछनि प्रकासन करोर चंद्र जोत हैं,
आवैं जाहि सखी जाके ऊँपर वे खरी होंहि दीपसी दिवारी सी सिंगारी रूप होत हैं ।
आवैं हरि राधा रास करत भरत छवि जब जब नृतनि हँसनि कौ उदोत है,
तेज कौ अलात चक्र आखैं न धसत जा मैं गौर स्याम झमकनि प्रेमसिंधु गोत है ॥

महा तेज रूप जामैं आखैं न धसत अरु धसैं जो कदाचि जाय पिघल सरीर है,
वहाँ हू की सखी विनु अन्याह्यां न जान पावैं जायैं होत पानी प्रेम बाँधै चक्कतीर है।
ललिता विसाखा वाकौ करैं फिरि रूप खरौ देत वैसी आखैं छवि चाखै ह्वै सुधीर है,
स्याम हीमैं गौर गौर ही मैं स्याम ह्वैं ह्वैं जात, जानैं न परैं हैं भाव वृत्ति जानैं सीरहै॥

जाकी वासरी कै सुर जड़ जल ह्वै ह्वै चलैं जल जड़ होत जमुना जमाव भयो है,
तारागन थकित थकित चंद्रमा के मृग सूरन फिरयौ है सांस मार वधि गयो है।
सुरन विवान नभ छायौ जैसै वादर है नीवीन थमत देव वधू मोह छायौ है,
तनक दिखायौ रास कौ प्रकास वाहर कै पिघर चली है प्रथ्वी माया पट दयौ है॥

कोटि स्याम रविन कौ कोटि गुनौ स्याम तेज कोटि गोरे रवि कोटि गुनौ तेज गौरि है,
काहे न पिघरि चलै रूप सौ सनेह देह सूर ताप दुख रूप ताप सुख रौर है।
जैसैं पिघलावै देह वाधैं रूप मूरति यौं तैसैं जल ही सौं हिम करैं ओला और है,
ललिता विसाखा रास लायक दै नैंन वाहि ऐसी यौ वनावैं सव अंगनि सुडोर है॥

दोहा—घरी ग्यारह निसि रास के करैं सिंगार अनूप।
मुकुट चन्द्रिका जग मगै कौतिक क्रीडा भूप॥८८९

चंद्र की किरनि दरपननि परस ह्वा तैं झमकि उठनि नग रगी पचरंग हैं,
तदुति मयूर जाकी पिछ कौ मुकुट जैसैं चन्द्रिका चटक कोऊ चातुरी अनंग हैं।
छवि सौं लडैंती हँसि प्रीतम के सीस पर राखत सुधारि वाम रुचि के उमंग हैं,
रूप तौ रहत पाछै आगैं इनि आँखिन कौं सोभा घेर लेत रंग राग रैंनी संग है॥

तैसैं चन्द्रिका हू भाल सिखर आकर सोभा मुकट मिली है झमकनि एक मेक है,
भूषन वसन रूप मैकै रूप ऊपर है भूषननि में वढ़ावै भूषन अनेक हैं।
सखिन सिंगार करि ठाढे करि देखत मैं राधिका गोविंद छवि वढै वे जितेक हैं,
चारौ दृग स्वछि हैं सचिक्कन हँसी सिंगारे छवि सौं निहारैं हिल मिलैं खिलैं एक हैं॥

छविन सहित वे सिगारनि सहित हीरा मंडल निकट आये वह चंद्र स्वछि है,
छुटी हैं किरन वा मैं इतै रूप चंद्रन की येऊ जा मिली है जामें भयौ रस अछि है।
हँसत लसत प्रिया प्रीतम मिले हैं जाय सखिन सहित चक्राकार नृत्य लछि है,
जानैं न परैं हैं राधा रसिक रसीले कौं न जाने न परैं हैं जाने परैं प्रेम पछि है॥

दोहा—नृत्य गान छवि चातुरी आगैं वरनन होत।
रमकनि झमकनि रूप की गतनि जतनि हँसि जोत॥८९३

मल्हार साम कर्णाट केदार कामोद नट भैरव गान्धार वसन्तक जेवा राग हैं,
श्रीगुजरी रामकिरी गौरी आसावरी तोड़ी गण्डकिरी वेलावली गुजरी सुभाग हैं।

वराटिका देसवराटिका मागधी सुभगा कौशिकी पठमंजरी महारस वाग है।
पाली ललिता सुभगा सिंधुड़ा रागिनी संग गावैं सरसावैं व्रज रमनी सुहाग हैं॥

मुरज डमरु डम्फ मंडु ममक झमक मुरली पाविका मन्दिरा करतालिका हैं,
विपंची महती वीना कछपी करनासिका सुरमंडलिका रुद्रवीना रसालिका हैं।
वजावैं लै नाना वाद्य श्री हरि के महा हृद्य रस वरसावैं सरसावैं प्रेमालिका हैं,
हंसामुख त्रिपताका कर्तरिमुख पताका शुकास्यादि हस्तक समूह दरसिका हैं॥

चच्चत्पुट चांचपुट सिंहनंदन रूपक गजलील एकताल निःसारी निराला हैं,
अड्डुक झंप त्रिपुर नुद्घट रु प्रतिमंठ नलकूवर कोकिलारव कुट्ट ख्याला हैं।
उपाट दर्पन राजकोलाहल शचीप्रिय रंग विद्याधर ताल दरसावै वाला हैं,
श्री रंग कंदर्प षटपिता रु षटपुत्रक पार्वतीलोचन राज-चूडामनि कला हैं॥

थो दिक् दांदां किटकिट कणझें थोक्कुथों दिक्कु झेंद्रां झेंद्रां किटकिट धां झेंकुझें राचेहैं,
थो दिक् दांदां दमिदमि दमिधां कांकु झों कांकु झेंद्रां परबंध पढ़ि कृष्णचंद्र नाचे हैं।
धांधां दड् दड्चड्चड् निडांणंनिडांणंनिडांनां रु तुत्तुक् तुं तं गुडुगुडुगुडु धांद्रांमांचेहैं,
थेक्धेक् धोधो किटिकिटि द्रादमि द्रां द्रिमिद्रां रु वार वार चारु राधिका स्वामिनीवाँचेहै

मुख में है गान तान हाथ में अभिनयन चरण कमल सौं देवैं नाना ताल झोंटा है,
ग्रीवा रु कटि कंपन नैंनन के हैं दोलन वांए दाहिने में गमागम संग धोंटा है।
गीत वाद्य नृत्य रंग श्रीलाडिली लालजू के उमा उमाकांत रमा अज को अजोटा है.
एसैं रास रस वस ह्वै क्रीडत प्रति निसि वृंदावन योग पीठ कलपद्रु तरोटा हैं॥

जमुना में जलक्रीड़ा कुंज में है रति व्रीडा पुलिन में भोजन विलास नित नित हैं,
निकुंज में स्वाप लीला अरु हाव भाव हेला गोपांगना लै क्रीडत राधा व्रजवित्त है।
नित्त वृंदावन आवैं नित्त नंदालय जावैं प्रेम सरसावै दरसावैं रस रीति है,
नित ही धेनु चरावैं राधा संग मिलै नित नित्य एसैं विहरैं श्री व्रजराज सुत हैं॥

दोहा—रास विलास श्रमित ह्वै बैठे राधा श्याम।
मणिमय मंदिर मध्य है रतनासन अभिराम॥६००

दोहा—घड़ी बीस में विश्राम रु नाना विध भोजन पान।
चब्बीस घड़ी बीती जब सयन करत रसखान॥
कलप वृछ लछ जहां जोगपीठ है नाम।
निगम गेय विसराम थल है गोविंद जु धाम॥
श्रमित जानि श्री वृंदाजु लै वहु भोजन पान।
विंजन घृत फल दुग्ध रु नाना विध पकवान॥

हरसित ह्वै आगे धरयौ प्रिया प्रिय के प्रान ।
भोजन करैं रस झरैं गौर स्याम जुग धाम ॥
करी अचमन बीरी लई सखियन पाय प्रसाद ।
अपनि अपनि सेवा करैं मन में नाना हरसाद ॥
कुंज कुटि पुहप सेज पर बैठे प्यारी पिय ।
नाना बिध परिहास रस बरसत हैं सखि हिय ॥
नाना बिध क्रीड़ा करैं प्रिया प्रिय सुख धाम ।
निरखि निरखि आनंद भयौ सखिन के पुरयो काम ॥
पुष्प मयी चित्र सज्या मधि सोये क्रीडा कर दोय ।
निज निज सेवा में लगी सखियन वलि वलि जाय ॥६०८

ललिता बीरी खवावै विसाखा वेस बनावै विजन हिलावैं चम्पकलता जु चांह सौं, चित्रा जु विचित्र रस पान करवावै हँसि राग रागिनी सुनावैं तुंग विद्या झर सौं । कोककला सरसावैं सखी इंदुलेखा है जू चित्र दरसावै रंगदेवी नाना खर सौं, बिखरे केश सम्भाले सुदेवी जू रस भारैं निज निज सेवा रत ह्वै के तत पर सौं ॥

समय जान के सखिन सब मिस करि बाहिर आईं ।
लखत झरोखन रस भीनि जुगल अंग की झांई ॥
पुनि ललिता रु विसाखिका अरु सब सखि समाज ।
निज निज शयन कुंज में सोयैं पलंगहि माझ ॥
हरि चर्वित बीरी पुनि खाय महा सुख पाय ।
रूप मंजरी आदि ल्यौं राधा चर्वित खाय ॥६११

चरन चापत नाना चाँह सौं रस मंजरी जुग सोभा देखि गुन मंजरी लोभात है, उत्सव मंजरी बीना बजावत सरसात रति मंजरी जु वलि वलैया को जात है । लवंग मंजरी प्रिया प्रितम के अंग परि चंदन चर्चात मिठी मिठी कहि बात है, काव्य कला में निपुन श्रीरूप मंजरी जू है कला बरसावैं सोभा कहि नहिं जात है ॥

दोहा—इहि विधि सेवा करैं अपनी स्वामिनी जानि ।
ललितादिक सब सखिन संग निज निज भाग्य जु मानि ॥
लता छिद्रनि सों देखैं नाना युगल विलास ।
पौढि रहैं सब जाय कैं मन में बहु हुलास ॥
घरी तीस में उठै हैं प्रिया पिय सुख धाम ।
अचमन करि सेज पर बैठे हैं अभिराम ॥
ललितादिक सखियन सब लै आरति सुसाज ।
मंगल आरत्रिक करैं बोलैं जै जुवराज ॥
इहि विधि नित लीला करैं ब्रज में ब्रज जुवराज ।
राधा सखियन संग लै रसिकन के रस काज ॥

सुनैं सुनावैं रसिक सदा राग मार्ग प्रवीन ।
राधा राधारमन के लीला रस में लीन ॥९१८

सिरी रूप रसकूप राग मार्ग के है यूप सुमरन मंगल नाम सौं रचि ग्रंथ हैं, जुगल विलास केली नित्य महारस बेली रसिक जनन सुमरन महा पंथ है। कृष्णदास करुना वरुनालय रस वस भये कविराजख्याति अरु महारसवंत हैं, श्रीगोविंदलीलामृत मधि रस के वारिधि लीला अष्ट जाम वर्नी जानैं भाग्यवंत हैं ॥ उन्हीं हीं के पद रज: धरि सिर मैं जु आज लीला घडी घडी वर्नु ह्वै के है निर्लज है घडी घडी रस भिनी लीला जुगल नैं कीनी नित्य प्रति राजति जु वह निज व्रज हैं। भक्त जन कृपा रस मेरे जो है सरवस क्षम अपराध मेरो रसिक समाज है, बृंदावन चंद श्रीगोविंद राधा रस कंद पदारविन्द मरंद लेत शिव अज हैं ॥

श्लोक (९२०)

श्रीराधाप्राणवन्धोश्चरणकमलयो: केशशेषाद्यगम्या
या साध्या प्रेम सेवा व्रजचरितपरैं गाढ़लोलयैकलभ्या ।
सा स्यात् प्राप्ता यया तां प्रथयितुमधुना मानसोम्स्य सेवां
भाव्यां रागाध्वपान्थै ब्रजमनुचरितं नैत्यिकं तस्य नौमि ॥

अद्वैतप्रकटीकृतो नरहरिप्रेष्ठ: स्वरूपप्रियो
नित्यानन्दसख: सनातननगति: श्रीरूपहृत्केतन: ।
लक्ष्मीप्राणपतिर्गदाधररसोल्लासी जगन्नाथभू:
साङ्गोपाङ्गसपार्षद: स दयतां देव: शचीनन्दन: ॥

गौड़ीयग्रन्थगौरव :—

सानुवाद संस्कृत भाषा में प्रकाशित—

१—अर्च्चाविधिः (संगृहीत) ।)
२—प्रेमसम्पुटः (श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्तीकृत) ।)
३—भक्तिरसतरङ्गिणी (श्रीनारायणभट्टजीकृता) १)
४—गोवर्द्धनशतक (श्रीकेशवाचार्य्य कृत) ।))
५—चैतन्यचन्द्रामृत और सङ्गीतमाधव (श्रीप्रबोधानन्द-सरस्वतीजी कृत) १।)
६—नित्यक्रियापद्धतिः (संगृहीत) ॥=)
७—ब्रजभक्तिविलासः (श्रीनारायणभट्टजी कृत) २॥)
८—निकुञ्जरहस्यस्तवः श्रीमद्रूपगोस्वामी कृत) ।)
९—महाप्रभुग्रन्थावली (श्रीमन्महाप्रभुमुखपद्मविनिर्गता) ।—)
१०—स्मरणमङ्गलस्त्रोत्रम् (श्रीमद्रूपगोस्वामिजीकृत) ॥=)
११—नवरत्नम् (श्रीहरिरामव्यासजी कृत) =)।
१२—गोविन्दभाष्यम् (श्रीपादबलदेवजी कृत) ४॥)
१३—ग्रन्थरत्नपंचकम् १॥)
[१] श्रीकृष्णलीलास्तवः (श्रीपादसनातनगोस्वामि कृतः)
[२] श्रीराधाकृष्णगणोद्देशदीपिका (श्री श्रीरूपगोस्वामिजीकृता)
[३] श्रीगौरगणोद्देशदीपिका (श्रीकविकर्णपूरजी कृता)
[४] श्रीब्रजविलासस्तवः (श्रीश्रीरघुनाथदासगोस्वामिजी कृत)
[५] श्रीसङ्कल्पकल्पद्रुमः (श्रीविश्वनाथ चक्रवर्तीजी कृत)
१४—श्रीमहामन्त्रव्याख्याष्टकम् (सञ्चित) ।)
१५—ग्रन्थरत्नषट्कम् (सञ्चित) ॥)
१६—श्रीगोवर्द्धनभट्टग्रन्थावली ॥=)
१७—सहस्रनामत्रयम् अथवा ग्रन्थरत्ननवकम् ॥)
१८—श्रीनारायणभट्टचरितामृतम् (श्रीजानकीप्रसादगोस्वामिकृत) ॥)
१९—उद्धवसन्देशः (श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितः) ।=)
२० हंसदूतम् (श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितम्) २॥)
२१—श्रीमथुरामाहात्म्यम् (श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितम्) ॥=)
२२—मुरलीमाधुरी (संचित) ।)
२३—राधाकृपाकटाक्षस्त्रोत्रम् =)
२४—श्रीपदांकदूतम् (श्रीकृष्णदेवजी कृत) ॥)
२५—श्रीश्रीशुकदूतमहाकाव्यम् (श्रीनन्दकिशोर गो० कृत) १॥)

२६-ग्रन्थरत्नत्रयम् ॥)

(१) गोपालस्तवराजभाष्यम् (श्रीवृन्दावनचंद्रदास कृत)

(२) कृष्णाष्ट्रोत्तरशतनामभाष्यम् (,,)

(३) लाड़िलेयाष्टकम् (श्रीनारायणभट्टजी विरचितम्)

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१. गदाधरभट्टजी की वाणी (राधेश्याम गुप्ताजी से प्रकाशित)
२. सूरदासमदनमोहनजी की वाणी ,, ॥।)
३. माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता) ।।=)
४. बल्लभरसिकजी की वाणी ।=)
५. गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजी कृत) ।)
६. गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजी कृत) ।)
७. हरिलीला (ब्रह्मगोपालजी कृता) =)
८. श्री चैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजी कृत) ४॥)
९. वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (बृन्दावनदासजीकृता) =)
१०. विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजी कृता)
११. प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दावनदासजी कृता)
१२. प्रियादासजी की ग्रन्थावली ।=)
१३. गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजी कृता) ।)
१४. राधारमणरससागर (मनोहरजी कृता) ।)
१५. श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजी कृता) ।-)
१६. भाषाभागवत (दशम, एकादश, द्वादश) (श्रीरसजानि-वैष्णवदासजी कृत) १)
१७. श्रीनरोत्तमठाकुरमहाशय की प्रार्थना ॥)
१८. संप्रदायबोधिनी (कविवरमनोहरजीकृता) =)
१९. ब्रजमण्डलदर्शन (परिक्रमा) १)
२०. भाषाभागवत (महात्म्य, प्रथम, द्वितीय स्कंध) ॥)
२१. कहानीरहसि तथा कुंवरिकेलि (श्रीललितसखीकृत) ।)
२२. ब्रह्मसंहितादिग्दर्शिनी टीका की भाषा (श्रीरामकृपाजी कृता) ।।=)
२३. किशोरीदासजी की वाणी ।=)
२४. गौरनामरसचम्पू (कृष्णदासजी कृता) ।।=)

पुस्तक मिलने का पता तथा वी० पी० आदि भेजने का पता—

(१) राधेश्याम गुप्ता बुकसेलर, पुरानाशहर, (वृन्दावन)

(२) गोस्वामि श्रीजगदीशलालजी, श्रीराधारमणजी-मन्दिर के प्रवेशद्वार, (वृन्दावन)

मुद्रक—रमनलाल बंसल, पुष्पराज प्रेस, मथुरा।

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम्।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८

इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्